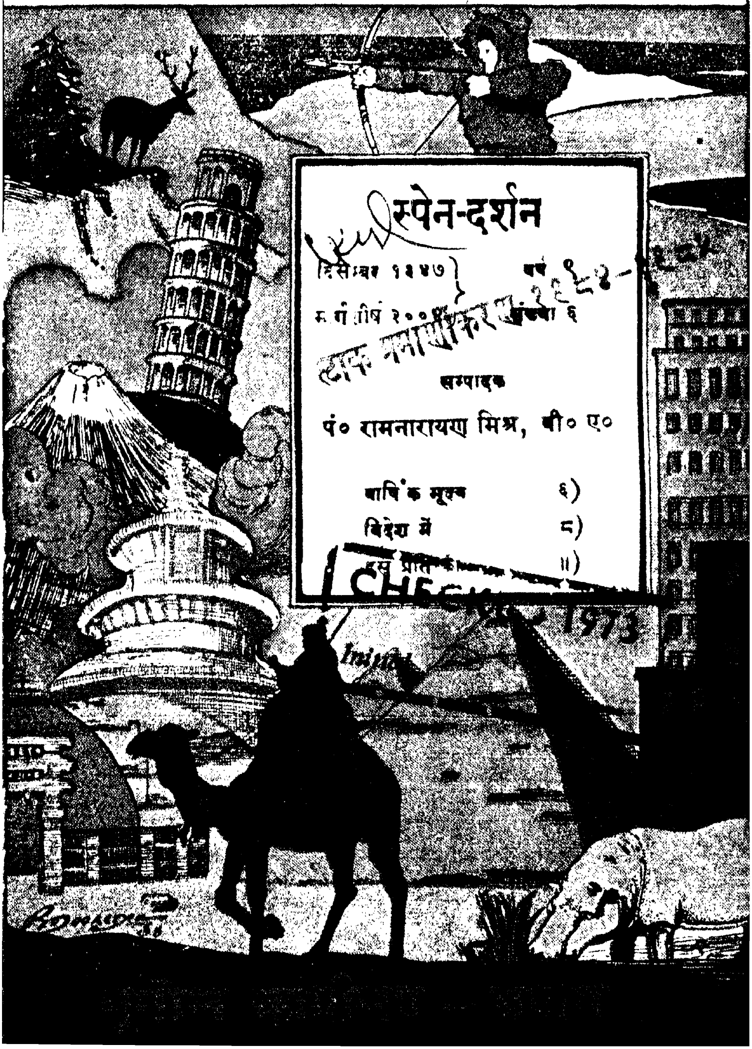
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—६५



स्पेन-दर्शन

दिसम्बर १९४७ | वर्ष
मार्गशीर्ष २००४ | संख्या ६

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ६)
विदेश में ८)
इस प्रति का ॥)

विषय-सूची

स्थिति

स्पेन की स्थिति, सीमा और विस्तार

योरुप के धुर दक्षिणी-पश्चिमी सिरे पर आइबेरिया प्रायद्वीप स्थित है। इस प्रायद्वीप का बहुत बड़ा भाग स्पेन में शामिल है। छोटे भाग में पुर्चगाल है। स्पेन ४३´४७ और ३६ उत्तरी अक्षांशों के बीच में स्थित है। पूर्व-पश्चिम की ओर यह ३´१९ पूर्वी देशान्तर से लेकर ९-३० पश्चिमी देशान्तर तक फैला हुआ है। पूर्व से पश्चिम तक इस देश की अधिक से अधिक लम्बाई ६५० मील और उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई ५२० मील है। इसका क्षेत्रफल लगभग २ लाख वर्ग मील है जो हमारे संयुक्त प्रान्त से प्रायः दुगुना है। लेकिन इसकी आबादी दो ही करोड़ है जो हमारे संयुक्त प्रान्त के आधे से भी कम है।

उत्तर में पिरेनीज़ और केन्टेब्रियन पर्वत स्पेन को फ्रांस से अलग करते हैं। इसी से फ्रांस में एक कहावत है कि अफ्रीका पिरेनीज़ से आरम्भ होता है। दक्षिण की ओर जिब्राल्टर प्रणाली के पास स्पेन पहले अफ्रीका से मिल सा गया है। जिब्राल्टर प्रणाली की चौड़ाई तंग भाग में केवल आठ मील है। अब से बहुत पहले यहीं दोनों देश एक दूसरे से मिले हुये थे। कुछ लोग फिर दोनों भागों को सुरंग द्वारा जोड़ने की बात सोच रहे हैं। स्पेन देश का पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग भूमध्य सागर को छूता है। साढ़े चार सौ वर्ष पहले स्पेन की इस स्थिति ने देश को उन्नति के शिखर पर

पहुँचा दिया था। नई दुनिया की खोज में स्पेन देश योरुप का नेता बन गया। पर जब तक लूट मार से बिना किसी रुकावट के दूसरे देशों से रुपया आता रहा तब तक स्पेन की धाक जमी रही। स्पेन का समुद्र-तट और स्पेन की बनावट स्थायी व्यापार या उपयोगी कारबार में बाधा पहुँचाती रही।

समुद्र-तट—स्पेन देश में समस्त सीमा का $\frac{७}{८}$ भाग समुद्र को छूता है। केवल $\frac{१}{८}$ भाग स्थल सीमा है। फिर भी भीतरी भागों से समुद्र-तट पहुँचना कठिन है। अच्छे बन्दरगाह कम हैं। अधिकतर तट सपाट और पथरीला है। भीतर से आनेवाली नदियां अक्सर गहरी नद-कन्दरा बनाती हैं। कुछ समय तक उनमें तेज़ धार बहती है। पर अधिक तर महीनों में वे प्रायः सूखी पड़ी रहती हैं। ये नदियां नाव चलाने के लिये बेकार हैं। पुर्चगाल की (मिन्हो, डौरो, मन्डेगो, टेगस, साडो, गाडियाना) नदियां अधिक अच्छी हैं। उनके मुहाने खुले हुए हैं। उन्होंने समुद्र तट अधिक काट दिया है। इसी से पुर्चगाल में अधिक अच्छे बन्दरगाह हैं।

केडिज़ की खाड़ी के पास स्पेन भर में सब से अधिक चौड़ा समुद्र-तट है। यहां पूर्व की ओर गाडलक्विवर नदी के मुहाने तक तट पर रेतीले टीले हैं। गाडलक्विवर नदी के मुहाने के पास दलदल हैं। इसके आगे तट अच्छा है। यहीं केडिज़ का सर्वोत्तम बन्दरगाह है। भूमध्य सागर का किनारा जिब्राल्टर की प्रणाली से पालोस अन्तरीप तक ऊँचा, पथरीला और सपाट है। इस बीच में जिब्राल्टर और कार्टेजीना कुछ

अच्छे बन्दरगाह कहे जा सकते हैं। जिब्राल्टर की पहाड़ी लगभग ५०० गज ऊंची है। अब से २०० वर्ष पहले अँग्रेजी मल्लाहों ने इस पर अपना अधिकार जमा लिया था। तब से यह पहाड़ी अंग्रेजों के अधिकार में चली आरही है। इस पहाड़ी की समतल जमींन बहुत कम है। इसलिए वहां जिब्राल्टर नाम का जो छोटा नगर बस गया वह कुछ समुद्र के किनारे और अधिकतर पहाड़ी ढालों पर बसा। पर ब्रिटिश सरकार ने जहाजों के ठहरने के लिये अच्छा बन्दरगाह बना दिया। अटलांटिक महासागर की लहरों को रोकने के लिये पठार की एक बड़ी दीवार पहाड़ी भूमध्य सागर की कुंजी है। इसी से यहां जगह जगह पर बड़ी बड़ी तोपें रक्खी हुई हैं। इसी से ब्रिटेन ने स्पेन की नाराजगी की कुछ भी परवाह न करके इसे लौटालने की बात पर कभी विचार नहीं किया।

कार्टेजीना स्पेन के जहाजी बेड़े का स्टेशन है। पानी की औसत गहराई २८ फुट है। पालोस अन्तरीप सियरा कार्टेजीना का अन्तिम सिरा है। पालोस अन्तरीप के आगे उत्तर की ओर तटीय पहाड़ियां कुछ भीतर की ओर हट गई हैं। इससे यहां तंग तटीय मैदान निकल आया है। पर एलीकेन्टी प्रान्त के नत्तारी भाग में पहाड़ियां फिर समुद्र के पास तक आ गई हैं। केप डेलानाओ (अन्तरीप) उन्हीं का एक सिरा है। वेलेन्शिया का सारा तट नीचा है। यहां लेगून (अनूप) भी बहुत हैं। इसी से यहां कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है। यह सब तट भीतरी मेसीटा (पठार) से लाई हुई मिट्टी से बना है। एब्रो नदी अपने डेल्टा को इस समय भी तेजी से

बढ़ा रही है। एब्रो नदी के मुहाने से उत्तर की ओर बीच बीच में अच्छा तट मिलता है। बार्सिलोना सर्वोत्तम बन्दरगाह है।

स्पेन का उत्तरी तट बहुत कटा-फटा है। यहां छोटे छोटे जहाज़ों को आश्रय देने वाले अच्छे बन्दरगाह मिलते हैं। सैन सेबेश्चियन, बिलबाओ और सैण्टेण्डर बन्दरगाह उल्लेखनीय हैं। सब से अच्छे बन्दरगाह गेलिशिया के तट पर मिलते हैं। वीगो, पान्टीवेड्रा, कोरूना और फेरोल बड़े अच्छे प्राकृतिक बन्दरगाह हैं।

भूरचना

स्पेन का सब से बड़ा (२/३) भाग मेसीटा या पठार से घिरा हुआ है। यह पठार देश के प्रायः बीच में स्थित है। इसका सब से ऊँचा भाग दक्षिण-पूर्व की ओर है। इसी से स्पेन की बड़ी बड़ी नदियां पश्चिम की ओर बहती हैं। इस मेसीटा की ऊंचाई २००० फुट है। पर यह समतल नहीं है। इसके बीच बीच में प्रायः समानान्तर पहाड़ियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर चली गई हैं। इसकी चट्टानें बड़ी पुरानी और कड़ी हैं। इन्हीं को काट कर गहरी घाटियों में बहने वाली नदियां भी समानान्तर हैं। बीच की पहाड़ियां इन नदियों के जल को एक दूसरे से अलग करती हैं।

मध्यवर्ती आइबेरियन पर्वत (जो सियरा गाटा) और सियरा गाडरामा नामों से पुकारा जाता है। मेसीटा को उत्तरी और दक्षिणी भागों में बांट देता है। उत्तरी भाग में

केस्टील और आरगन प्रान्त हैं। बीच का पर्वत डौरो घाटी को टेगस घाटी से अलग करता है। इस की सबसे ऊँची चोटी (८,७०० फुट) पर सदा बरफ रहती है। टेगस और गाडियाना नदियों के बीच में टोलेडो का नीचा (४००० फुट) पहाड़ है। सिवरा मोरेना पर्वत गाडियाना नदी की घाटी को गाडल क्विवर की घाटी से अलग करता है। मेसीटा से गाडल क्विवर की घाटी की ओर क्रमशः ढाल है। और भागों में सपाट ढाल है। गाउल क्विवर शब्द अरबी के "वादी अल कबीर" से बिगड़ कर बना है। इसका अर्थ है बड़ी वादी। स्पेन देश में यही घाटी सचमुच सब से अधिक बड़ी है। गाडल क्विवर की घाटी दक्षिण की ओर अधिक ऊँचे सियरा नवादा पर्वत से घिरी हुई है। सियरा नवादा का अर्थ है बर्फीला पहाड़ या स्पेन का हिमालय। सियरा नवादा की सब से ऊँची चोटी ११,४०० फुट ऊंची है। स्पेन के प्रायद्वीप में यही सब से अधिक ऊंची चोटी है। अल्प्स के समान सियरा नवादा में भी हिमागार और बर्फीली झीलें मिलती हैं।

मेसीटा के उत्तर के एब्रो नदी की घाटी इसे पिरेनीज़ पर्वत से उसी तरह अलग करती है जिस तरह गंगा की घाटी दक्खिन के पठार को हिमालय से या पो की घाटी अल्प्स को एपीनाइन से अलग करती है। एब्रो की घाटी एक बड़ी गहरी खाई की तरह पिरेनीज़ और मेसीटा की ऊंची दीवारों के बीच में घिरी हुई है।

स्पेन के बहुत बड़े भाग का पानी अटलांटिक सागर में पहुँचता है। सभी बड़ी बड़ी नदियों का निकास स्पेन में है।

डौरो (४८५ मील) और टेगस (ताजो ५६५ मील) नदियों के नाव चलने योग्य निचले भाग पुर्तगाल देश में है। गाडियाना नदी (५१० मील) का कुछ भाग पुर्तगाल में और कुछ भाग स्पेन में है केवल गाडल क्विवर (३४० मील) और एब्रो (४६६ मील) नदियों का समूचा मार्ग स्पेन देश में है। गाडल क्विवर नदी ने ही अँडालूशिया का उपजाऊ मैदान बनाया है। स्पेन की यही एक ऐसी नदी है जिसमें साल भर पानी रहता है। शीतकाल में इसमें वर्षा का पानी आता है। गरमी में सियरा नवादा की बरफ के पिघलने से इसे पानी मिलता है। सेविला शहर तक इस में छोटे छोटे स्टीमर चल सकते हैं। एब्रो नदी को पिरेनीज़ और केन्टेब्रियन पर्वत से काफी पानी मिलता रहता है। पर इस नदी का भीतरी भाग बहुत टेढ़ा है। इसलिए यह नाव चलाने के लिये व्यर्थ है। पर इसके पानी से सिंचाई खूब होती है।

मेसीटा के ऊपर में एब्रो घाटी के उस पार पिरेनीज़ पर्वत है। पिरेनीज़ पर्वत भूमध्य सागर के किनारे से बिस्के की खाड़ी तक २६० मील लम्बे हैं। पर उनकी चौड़ाई केवल ६० मील है। नवारे प्रान्त में वे केवल ५० मील चौड़े रह गये हैं। अल्पस पर्वत इनसे ढाई गुना अधिक चौड़े हैं। हिमालय पर्वत तो इनसे तिगुने से भी अधिक चौड़े हैं। पर वे समुद्र तल से प्रायः एकदम ऊंचे हो गये हैं। इनकी औसत ऊंचाई ६००० फुट है। इनकी कई चोटियां इतनी ऊंची हैं कि उनके निचले भाग भी सदा बरफ से घिरे रहते हैं। पिरेनीज़ के बीच वाले भाग की ऊंचाई कहीं भी ६५०० फुट

से कम नहीं है। केवल पूर्वी और पश्चिमी सिरों पर पिरेनीज पर्वत कुछ मील की चौड़ाई में ३००० फुट से कम ऊंचे हैं। यहीं पर फ्रान्स और स्पेन के बीच में रेलमार्ग है। इस समय पिरेनीज पर्वत में हिमागार कम हैं पर पुराने जमाने में हिम-नदियां पहाड़ के ऊपरी भाग से लेकर उस स्थान तक फैली हुई थीं जहां वे मैदान में प्रवेश करती थीं। उनका असर इस समय भी देखा जा सकता है।

प्राकृतिक दृश्य—आइबेरिया प्रायद्वीप के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न प्रकार के दृश्य मिलते हैं। पुर्तगाल और उसके समीप वाला भाग बहुत हरा भरा है। गेलिशिया में नार्वे के फिअर्ड के समान कटे-फटे तट मिलते हैं। अस्टूरियास और सैन्टेंडर की बर्फीली चोटियां स्विजरलैंड के बर्फीले पहाड़ों का मुक़ाबिला कर सकती हैं। नर्वियों की घाटी में ग्लास्गो की तरह कारबारी प्रदेश मिलेगा। नवारे प्रान्त में ब्लैक फारेस्ट पर्वत की तरह बन से ढके हुये पर्वतों के ढाल हैं। एब्रो-घाटी के खुश्क लाल मिट्टी वाले कटे-फटे टीले, उपजाऊ नखलिस्तान स्पेन के बाहर योरुप में और कहीं नहीं मिलेंगे। केटेलोनिया का निचला भाग भूमध्य सागर के प्रदेश का अंग है। जो इटली और यूनान में भी पाया जाता है। वेलेंशिया और मुर्शिया की नदियां सूख जाया करती हैं। यहां के खजूर पेलेस्टाइन से मिलते हैं। अंडालूशिया का हरा भरा मैदान स्पेन की प्रधान सम्पत्ति है। अगर आप गरमी की ऋतु में बिस्के की खाड़ी से अंडालूशिया तक की यात्रा करें तो पहले आपको ऐसे प्रदेश के ऊपर धीरे धीरे चढ़ना पड़ेगा जहां

नमी की अधिकता के कारण हरियाली की भरमार है। सब कहीं मकई के खेत अंगूर के बग़ीचे और सेव नाशपाती और अखरोट के पेड़ मिलेंगे। ऊपर की ओर कार्क (जिसकी छाल से डाट बनाती है) के वन मिलेंगे। बीच बीच में सुन्दर चरागाह होंगे। उनको चीरती हुई पहाड़ी धारायें शोर करती हुई तेजी से बहती हैं। अगर चढ़ते चढ़ते आप पठार के ऊपर पहुँच जावें तो वहां आपको सब कहीं खुश्की मिलेगी। विकराल धूप से आप तंग आ जायंगे। हरियाली का कहीं निशान नहीं मिलता है। जो कुछ पौधे मिलते हैं वे धूल में दबे से जाते हैं। धूल उनका दम घोट देती है। सड़क घर और हवा में सब कहीं धूल ही धूल मिलती है। कभी कभी तो यहां धूल सूर्य के प्रकाश को भी मन्द कर देती है। पठार के इन वृक्ष रहित चौड़े भागों के बीच में नंगे पथरीले पहाड़ मिलते हैं। पर इस बड़े पठार को पार कर लेने पर दूर से ही भूमध्य सागर का नीला जल दिखाई देता है। अब फिर एक बार ऐसे प्रदेश में प्रवेश करते हैं जहां पहाड़ी धारायें जादू की तरह सुन्दर फलों के बग़ीचे तयार कर देती हैं। गहरे हरे पत्तों के बीच में सुनहरी पीली नारंगियां बड़ी सुन्दर मालूम होती हैं। मूर लोगों के समय के बने हुए घरों के ऊपर खजूर और छुहारे की पत्तियां हिलती रहती हैं। समुद्र के पास वाले खेतों में ईख के खेत लहलहाते हैं।

स्पेन-दर्शन

भूगर्भ और खनिज

स्पेन देश में सभी समयों की चट्टानें पाई जाती हैं। बड़े बड़े पर्वतों की तलहटी और पठार में अत्यन्त पुराने समय की चट्टानें मिलती हैं। इन्हीं के बीच बीच में दानेदार पत्थर हैं। यहीं कहीं पर बिल्लौरी पुरानी चट्टानें हैं।

मध्य काल की चट्टानें मेसीटा के पश्चिम की ओर स्पेन और पुर्तगाल में मिलती हैं। इसी समय की चट्टानों में लोहा, बलुआ पत्थर और चूने का पत्थर मिलता है। तृतीय युग की चट्टानें स्पेन के एक तिहाई भाग को घेरे हुए हैं। मेसीटा के नये और पुराने केस्टील प्रदेश में इसी काल की चट्टानें स्पेन के प्राय: १ भाग में मिलती हैं। केन्टेब्रियन पर्वत के दक्षिण और नदियों के पड़ोस में नई चट्टानें हैं। जिन चट्टानों में कोयला बना वे अधिकतर अस्टूरियास और केन्टब्रियन पर्वत के पड़ोस में पाई जाती हैं। अंडालूशिया की बनावट मरक्को की तरह है। जिब्राल्टर की प्रणाली भूगर्भ विद्या के अनुसार हाल में बनी है। दक्षिणी भाग में ही कभी कभी भयानक भूचाल आते हैं।

मिट्टी—स्पेन देश में कई रंग और कई तरह की मिट्टी पाई जाती है। खुश्की के कारण कई भागों की मिट्टी उपजाऊ होने पर भी सिंचाई न होने से बेकार पड़ी रहती हैं। अंडालूशिया की मिट्टी कुछ काली है। नई मिट्टी यहाँ अक्सर भूरे या लाल रंग की होती है। केस्टील की विशेष मिट्टी को केलवेरो कहते हैं। केस्टील और एब्रो घाटी के कुछ अत्यन्त खुश्क

भागों में नमकीन मिट्टी मिलती है। भूमध्य सागर के प्रदेश में प्राय: लाल मिट्टी और खुश्क प्रदेश में भूरी (बादामी) मिट्टी पाई जाती है।

खनिज

प्रकृति ने स्पेन देश को खनिज सम्पत्ति बहुत बड़ी मात्रा में दी है। जिन भागों में भौगर्भिक उथल पुथल बहुत हुई वहीं कच्ची धातु बहुत है। मध्यवर्ती पठार के किनारों और तलहटी में खनिज अधिक पाये जाते हैं। लेकिन समुद्र के पास वाले भागों में ही वे बाहर भेजने के लिये निकाले जाते हैं। पर स्पेन की खनिज को निकालने का काम प्राय: विदेशियों ने किया है। पहले फोनेशियन और रोमन लोग स्पेन की खानों से लाभ उठाते थे। उसके बाद मूर लोगों ने उनका स्थान लिया। हाल में भी स्पेन की अधिकतर खानों में अंग्रेजों, फ्रांसीसियों और जर्मन लोगों ने नये ढंग से खुदाई आरम्भ की। फिर भी स्पेन की खानों का भली भाँति उपयोग न हो सका। इसके कई कारण हैं :—

यहां की खानों का अधिकार सट्टेबाजी पर निर्भर रहा। जो खान का पता लगावे वही उसका मालिक माना जाय। इस क़ानून से खानों का पता लगाने में सहायता तो मिली। पर पता लगाने वालों में खानों को खोदने की योग्यता न थी। ऊबड़ खाबड़ (ऊँचे नीचे) देश में अच्छी सड़कों और रेलों की कमी है। देश ग़रीब है। खानों को खोदने और खनिज को बाहर भेजने के लिये जितनी सम्पत्ति चाहिये वह यहाँ आसानी

से नहीं मिल सकती है। इसी से देश के कई भागों की खनिज सम्पत्ति को अभी छुआ भी नहीं गया है।

स्पेन में बीस से अधिक खनिज पाये जाते हैं। सोना, चाँदी, तांबा, टीन, कोयला, लोहा, पारा, गन्धक, नमक, मेंगनीज आदि मूल्यवान खनिज हैं। इन खानों में डेढ़ लाख से ऊपर मजदूर काम करते हैं और लगभग ५० करोड़ पेसीटा (लगभग २५ करोड़ रुपये) के खनिज निकाले जाते हैं। इनमें कोयला सब से अधिक (७० लाख टन) मात्रा में और सब से अधिक मूल्य का निकाला जाता है। सब से अधिक कोयला उत्तर में निकलता है। ओवेदो शहर इसका प्रधान केन्द्र है। कुछ कोयला दक्षिण में कार्दोवा प्रान्त के सियारा मोरेना प्रदेश और गाडलक्विर की घाटी में निकाला जाता है। सीसा दक्षिणी पूर्वी पर्वत-श्रेणियों (सियरा नवादा और सियरा मेरेना) से निकाला जाता है। अधिकतर ताँबा सियरा मारेना के पश्चिमी सिरे में ह्वेल्वा के पृष्टप्रदेश से आता है। लोहा स्पेन के कई भागों में पाया जाता है। पर उत्तर में सेन्टेण्डर और ओवेदो इसके प्रधान केन्द्र हैं। दक्षिण में सियरा नवादा के किनारे के पास लोहा पाया जाता है। जस्ता उत्तर में सेन्टेंडर और ग्रेनाडा के पास निकाला जाता है। पारे की खान न्यूकेस्टील के दक्षिणी-पश्चिमी कोने के पास अल्मेडन में है। ५०० फुट ऊँची नमक की पहाड़ी बार्सिलोना और अँडोरा के अधबिच स्थित है।

स्पेन की पारे की खानों से पिछले ढाई हजार वर्ष से पारा निकाला जा रहा है। पर इनके समाप्त होने का कोई

चिन्ह नहीं मिलता है। इन खानों ने न मालूम कितने विदेशी खान के मालिक खानदानों को मालामाल कर दिया। जर्मनी के जगत प्रसिद्ध पूंजीपति रोथस चाइल्ड को इन्हीं ने बनाया था। आज कल इन खानों पर सरकारी अधिकार है। पर यदि कभी शाम को छः बजे इन खानों में काम करने वाले मजदूरों को देखो तो बड़ा तरस आवेगा। इस समय दिन में काम करने वाले थके मांदे मजदूर बाहर निकलते हैं। रात को काम करने वाले भीतर घुसते हैं। जो नौजवान मजदूर खान के भीतर से निकलते हैं उनके चेहरे पर अजब पीलापन छा जाता है। वे जवान होते हुये भी बूढ़े मालूम पड़ते हैं। पारे से सदा निकलने वाली विषैली गैसें इन्हें बीमार सा बना देती हैं और इनकी जान खींच लेती हैं। वे आठ-आठ घंटे काम करते हैं। पारा स्लेट की तहों या दूसरी कड़ी चट्टानों में पाया जाता है। इन्हें तोड़ने के बाद ही वह निकल सकता है। फिर वह छोटी रेल के द्वारा भट्टियों में साफ होने के लिये भेज दिया जाता है। अंत में साफ पिघला हुआ पारा बाहर भेजने के डब्बों में भर दिया जाता है।

जलवायु

स्पेन के उत्तरी-पश्चिमी भाग में अटलांटिक महासागर से पछुआ हवायें साल भर आती रहती हैं। ये हवायें अपने साथ पानी लाती रहती हैं। इसी से बिस्के की खाड़ी के पास वाले उत्तरी-पश्चिमी भाग में साल भर प्रबल वर्षा होती रहती है। यह भाग न गरमी में अधिक गरम और न सरदी में अधिक

ठंडा रहता है। औसत से उत्तरी-पश्चिमी भाग सेंटियागो शहर) में सालभर में ६६ इंच पानी बरसता है। गरमी की ऋतु का औसत तापक्रम ६० अंश फारेन हाइट रहता है। सरदी में ४५ अंश रहता है। इस प्रकार इस भाग की जलवायु सम शीतोष्ण कही जा सकती है।

दक्षिण की ओर पुर्चगाल और समीप वाले भागों में पानी कुछ कम बरसता है। गरमी में प्रायः खुश्की रहती है। अधिकतर वर्षा शीतकाल में होती है। गरमी भी कुछ अधिक पड़ती है। दक्षिण-पूर्व और अधिक दक्षिण में ठीक-ठीक भूमध्य सागर की जलवायु मिलती है। गरमी की ऋतु एक दम खुश्क और अधिक गरम रहती है। सरदी की ऋतु छोटी लेकिन काफी ठंडी होती है। सरदी में पानी बरसता है।

पूर्वी तट पर दिन और रात तथा सरदी और गरमी के तापक्रम में अधिक भेद होता है। वर्षा भी कम होती है।

स्पेन के बीच वाले भाग की जलवायु बड़ी विकराल रहती है। सरदी के दिनों में कड़ी ठंड पड़ती है। हवा का दबाव भारी हो जाता है। चक्करदार (चक्रवात) हवायें भीतर से बाहर की ओर चलती हैं। गरमी की ऋतु में अत्यन्त गरमी पड़ती है। हवा का भार हलका हो जाता है। बाहर से अधिक भारी हवायें इस हलकी हवा का स्थान घेरने आती है। हमारे देश को तरह यहां भी ऋतु-ऋतु में हवा का रूख बदलता है। पर स्पेन देश की बनावट ऐसी है जिससे गरमी की ऋतु में बाहर से आने वाली हवायें भी पानी बरसाने में असमर्थ होती हैं। इस देश के किनारों पर ऊँचे-ऊँचे पठार हैं। बीच में इनसे

नीचा पठार है। इसी से नीचे उतरने वाली हवायें यहां बहुत ही कम पानी बरसाती हैं।

खुश्क स्पेन की वर्षा बड़ी अनिश्चित सी रहती है। भूमध्य-सागर वाले प्रदेश में दिन के कुछ घंटों में जोर की वर्षा हो जाती है। पानी बरसाने वाले दिन बहुत थोड़े होते हैं। हर वर्ष एक सी बर्षा नहीं होती है। कभी अधिक और कभी बहुत कम पानी बरसता है। ऐसी वर्षा से नदियों के प्रवाह में भी बहुत अन्तर पड़ जाता है। उनकी तली बहुत ही अधिक गहराई पर होने के कारण वे सिंचाई के लिये अधिक उपयोगी नहीं है। हाल में कुछ भीतरी भागों में बहुत धन व्यय करके सिंचाई का प्रबन्ध किया गया है। मुहाने के पास उनसे अच्छी सिंचाई हो सकती है।

वनस्पति

वर्षा, नमी, तापक्रम, मिट्टी और उँचाई में भेद होने के कारण स्पेन में कई प्रकार के पौधे मिलते हैं। इस समय स्पेन देश की केवल ५ फी सदी जमीन वन से घिरी है। पुराने समय में स्पेन में अब से बन अधिक न था। आजकल इस वन में एक तिहाई से अधिक देवदारु के पेड़ हैं। चौड़ी पत्ती वाले और सरदी में अधिक ठंड के कारण पत्ती गिराने वाले पेड़ केवल उत्तरी-पश्चिमी भाग में मिलते हैं। सिन्दूर, अखरोट आदि के पेड़ इन में मुख्य हैं। इनके बीच बीच में चरागाह हैं। स्पेन के खुश्क भागों में खुश्की का मुकाबिला करने वाले

कुछ चुने हुए स्थानों का तापक्रम और वर्षा-चक्र

स्थान	अक्षांश	उंचाई फुटों में	अल्प ताप-क्रम फारेनहाइट अंशों में	परम ताप-क्रम	वार्षिक वर्षा इंचों में	सब से अधिक वर्षा वाला महीना
बुर्गोस	४२·२०	३०००	१२·६	६४·४	२२·२	३ मई
सारगोसा	४१·३८	६५०	१८·३२	७५·५६	१२·३६	१·९ मई
बासिलोना	४१·५२	१३०	३०·६	७४	२१·५०	३·३८ मित०
मेड्रिड	४०·२४	२०००	१८·३२	७६	१६·५	१·६ नवम्बर
वेलेंशिया	३९·२८	७०	२१·२८	७५	११·१३	३·३१ अक्त०
मुर्शया	३७·५९	२००	२१	७९	१५	१·३ सित०
सेविल	३७·२३	७०	३२·३६	८५	१७·५४	३ दिसम्बर
मालगा	३६·४३	८०	३७·४	७७·१८	२०	२ अक्तूबर
जिब्राल्टर	३६	५३	५५	७५	३५·७	[illegible]·४ नवम्बर

छोटे छोटे पोधे प्राय: सदा हरे भरे रहते हैं। केवल कहीं कहीं ऊँची तर घाटियों में चौड़ी पत्ती वाले पेड़ मिलते हैं।

धुर दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर अधिक गरमी और खुश्की के कारण अर्द्ध रेगिस्तानी पौधे पाये जाते हैं। नाटा खजूर यहीं होता है। केटेलोनिया के दक्षिण की ओर पूर्व के जिलों में भूमध्य सागर के प्रदेश की नाटी बनस्पति मिलती है।

पशु

पिरेनीज़ पर्वत स्पेन के प्रायद्वीप को योरुप से अलग करता है। जिब्राल्टर प्रणाली ने इसे अफ्रीका महाद्वीप से अलग कर दिया है। इसलिये यहां के पशु योरुप के वर्तमान पशुओं से कुछ भिन्न हैं। यहीं सिवेट (जंगली बिल्ली से मिलते हुए) पाये जाते हैं। इसी प्रकार योरुप का यही एक देश है जहाँ जंगली (बर्बेरी) लँगूर (जिब्राल्टर के पास) पाये जाते हैं। लोगों का विश्वास है कि ये बन्दर अफ्रीका के अलग होने के पहले ही यहां आ गये थे और फिर अलग हो जाने के बाद भी वे यहीं रह गये। अंडालूशिया की जंगली बिल्ली, लाल हिरण, वीज़ेल, भेड़िया, खरगोश भी उल्लेखनीय हैं। यहां चिड़ियों की भरमार है। जो चिड़ियाँ गरमी में अफ्रीका से योरुप को और सरदी में योरुप से अफ्रीका को हर साल जाया करती है वे रास्ते में स्पेन में कुछ समय बिता कर जाती हैं। यहां की कुछ चिड़ियाँ शिकारी हैं। दाढ़ीवाला गिद्ध बड़ा जबरदस्त शिकारी होता है। यहां रेंगने वाले जानवर भी बहुत पाये जाते हैं।

स्पेन-दर्शन

कृषि

स्पेन एक कृषि प्रधान देश है। ६४ फी सदी जमीन में कोई न कोई चीज पैदा हो सकती है। केवल ६ फीसदी जमीन एक दम ऊसर और बीहड़ है। ४६ फीसदी जमीन में कोई न कोई फसल उगाई जाती है। ४८ फीसदी जमीन में चरागाह या पहाड़ी बनस्पति है। ऊँची नीची जमीन होने के कारण सब कहीं खेती नहीं हो सकती। स्पेन का आधे से अधिक भाग खुश्क है। इसी से खेती की अपेक्षा चरवाही के प्रदेश अधिक हैं। केवल वेलेंशिया और मुर्शिया के किसानों ने सिंचाई का विशेष प्रयत्न किया है। खेती वाले भागों में १० फीसदी जमीन अत्यन्त उपजाऊ है। शेष में साधारण खेती होती है।

खेती में अनाज की फसल सब से अधिक है। गेहूँ और जौ पठार तथा भूमध्यसागर के किनारे वाले भागों में उगाया जाता है। मकई उत्तर-पश्चिम के तर भागों में होती है। भूमध्यसागर के जिन भागों में सिंचाई का प्रबन्ध है वहाँ धान भी होता है।

पर स्पेन में लगभग ४ करोड़ पौंड (५ करोड़ रुपये) के फल हर साल होते हैं। फलों के उगाने में लगभग १२ लाख एकड़ जमीन लगी हुई है। औसत से प्रति एकड़ में ४००) रु० के फल हर साल पैदा होते हैं। फलों में नारंगी, नीबू, जैतून, अंगूर प्रधान हैं। दक्षिण के गरम भागों में छुहारे भी होते हैं।

भूमध्य सागर के प्रदेश में अच्छे चरागाहों की कमी से दूध देने वाले जानवर कम हैं। घी का काम जैतून के तेल से

लिया जाता है। मटीले हरे रंग की पत्ती वाले नाटे क़द के जैतून भूमध्यसागर के कई भागों में मिलते हैं। स्पेन के हर घर में जैतून के फलों का अचार और तेल मिलेगा, इसी तेल में वहां तरकारी पकाई जाती है। जो तेल खाने के लिये अच्छा नहीं होता है वह साबुन बनाने और मशीनों में चिकनाई देने के काम आता है। जैसे हमारे देश में कडुये तेल की मालिश की जाती है। वैसे ही यहां जैतून के तेल की मालिश होती है। बहुत सा तेल स्पेन से बाहर भी जाता है। इस तेल का मूल्य नारंगी से भी होता है। सेविला और समीपवर्त्ती प्रदेश से बहुत सा जैतून का तेल बाहर जाता है। जैतून के बगीचों में काम करने वाले मजदूर बड़े ग़रीब होते हैं। वे घास की चटाई बिछा कर कड़े फर्श पर सोते हैं। सोने वाले कमरे में बकरी मुर्गी और सुअर भी रहता है। वे छोटे घर में रहते हैं। वे अक्सर रास्ता चलते चलते भोजन करते जाते हैं। वे काली रोटी को प्याज़ या नमकीन मछली के साथ खाते हैं। कभी वे शराब भी पी लेते हैं।

जब फल कुछ हरे रहते हैं तभी वे तोड़ लिये जाते हैं। इससे उनका कडुआपन दूर हो जाता है। फल तोड़ने का काम सितम्बर में आरम्भ होता है और डेढ़ महीने तक रहता है। वे ज़मीन पर गिर कर फूटते नहीं इसलिये वे एक एक कर के बड़ी सावधानी से तोड़े जाते हैं। इस काम के लिये ऊँची सीढ़ियों की ज़रूरत पड़ती है। फसल के दिनों में आप को सीढ़ी लिये हुए सैकड़ों फल तोड़ने वाले मिलेंगे। हर एक

मजदूर की पीठ पर एक टोकरी लटकती रहती है। इससे दोनों हाथ फल तोड़ने के लिये खाली रहते हैं। फलों को छांटने का काम स्त्रियां करती हैं। बगीचे से घरों तक ढोने का काम गधों से लिया जाता है। तेल पेरने के कोल्हू बहुत स्थानों में मिलते हैं। कुछ बड़े बड़े कारखाने हैं। अक्सर घरों में घोड़े कोल्हू चलाते हैं। स्पेन के प्रायः सभी बड़े बड़े बन्दरगाहों से जैतून का तेल बाहर भेजा जाता है। जितना दुनिया भर में जैतून का तेल होता है। उसका ४० फी सदी स्पेन में होता है। स्पेन में लगभग ४२ लाख एकड़ जमीन में जैतून के बगीचे हैं। इनसे हर साल ८६ लाख मन जैतून के फल मिलते हैं।

स्पेन में भूमध्य सागर के तट वाले प्रदेश के लाल जीनेदार ढालों में अंगूर भी बहुत होता है। मालगा के पड़ोस में आप को मीलों तक अँगूर मिलेंगे। कुछ अँगूर किशमिश बनाने के काम आते हैं। अधिकतर अँगूरों से शराब बनती है। अँगूर तोड़ने का काम भी सितम्बर से शुरू होता है। डौरा घाटी के अँगूर सब से बढ़िया गिने जाते हैं। इन दिनों में दूर दूर के मजदूर अँगूर के बगीचों में फल तोड़ने के लिये आते हैं।

स्पेन की नारंगी योरुप भर में प्रसिद्ध है। इसके तटीय पहाड़ी ढालों पर नारंगी के हजारों पेड़ उगे हुए हैं। पेड़ छः या सात गज ऊँचे होते हैं। ये पेड़ सदा हरे रहते हैं। नारंगी की पत्तियां गहरी हरी लेकिन फूल सफेद होते हैं। नारंगी का फल पहले हरा होता है। पर पकने पर सुनहला पीला हो जाता है। इन दिनों ये बगीचे बड़े सुहावने लगते हैं। सभी सीढ़ी और टोकरी ले ले कर किसान और मजदूर नारंगी तोड़ने के

काम में लग जाते हैं। जब टोकरियां और सन्दूक नारंगियों से भर जाते हैं तब किसान उन्हें बैल गाड़ियों में रख कर घर या बाजार को ले आते हैं। अगर रास्ता बहुत ऊँचा नीचा होता है तो फल ढोने का काम गधों से लिया जाता है। स्पेन में कई तरह की नारंगियां यहीं होती हैं। पर सेविल की नारंगियां बड़ी बढ़िया होती हैं। कुछ नारंगियां यहीं खर्च हो जाती हैं। लेकिन बहुत सी बाहर भेजी जाती हैं। दक्षिणी भागों में इतनी अधिक गरमी पड़ती है कि यहां छुहारे भली भांति पक जाते हैं। छुहारे और खजूर के पेड़ इतने बड़े होते हैं कि इन के फलों को तोड़ने के लिये कोई सीढ़ी काम नहीं दे सकती। इन को तोड़ने के लिये दो रस्सियों के फन्दों की सहायता से होशियार लोग ऊपर चढ़ते हैं। उनके दोनों हाथ फल तोड़ने के लिये खाली रहते हैं। जब टोकरी फलों से भर जाती है तब वह रस्सी के द्वारा नीचे लटका दी जाती है।

स्पेन में बादाम और शहतूत के पेड़ भी बहुत होते हैं। शहतूत की पत्तियां रेशम के कीड़ों को खिलाने के काम में आती हैं। इनसे यहां काफी रेशम तैयार होता है। चरागाहों की घास चरने वाली प्रसिद्ध मेरिनो भेड़ों से बड़ी बढ़िया ऊन मिलती है। कुछ घास (स्पार्टो घास) कागज बनाने के काम आती है। कार्क के पेड़ों की छाल डाट बनाने के लिये बाहर भेजी जाती है।

निवासी

स्पेन में कई तरह के लोग रहते हैं। स्पेन के प्राचीन लोग आइबेरियन हैं। अब से ३००० वर्ष पहले स्पेन में यही लोग फोनीशियन व्यापारियों को मिले थे। इनका सिर लम्बा, क़द नाटा और रंग काला था। इनके बाल घूंघर वाले थे। ये लोग आरम्भ में पत्थर के हथियार इस्तेमाल करते थे। पर बास्क लोग इनसे भी अधिक पुराने हैं। पहले बास्क लोगों ने बाहर से हमला करने वालों का सामना किया। अन्त में वे पिरेनीज़ के समीप उत्तरी पहाड़ी भागों में चले गये जहां वे इस समय भी रहते हैं। बास्क लोग बड़े कट्टर पन्थी होते हैं। जब योरुप के दूसरे लोगों ने मूर्ति पूजा छोड़ दी उसके बाद भी वे बहुत समय तक मूर्ति-पूजा करते रहे। ग्यारहवीं सदी तक ईसाई मिशनरियों को यहां मूर्ति-पूजा करने वाले लोग मिलते रहे। बास्क भाषा में 'गोई कोआ' ईश्वर और चन्द्रमा दोनों को कहते हैं। इसी से कुछ लोगों का अनुमान है कि ये लोग चन्द्रमा को ईश्वर मानते थे और उसे जौन गोईकोआ या हमारा प्रभु कह कर पुकारते थे। ये लोग पूर्णमासी को बाहर चांदनी में नाचते थे और अपनी समाधियों के पत्थर पर नये चांद का चिन्ह बनाते थे। पीछे से वे ईसाई हो गये।

बास्क लोक क़द के छोटे होते हैं। वे नाच बहुत पसन्द करते हैं। इसी से शायद वे बड़े फुरतीले होते हैं। बास्क लोगों की भाषा स्पेनिश और फ्रांसीसी भाषा से एक दम

भिन्न है। केटेलन भाषा उत्तरी पूर्वी स्पेन में बोली जाती है। यह भाषा बेलियारिक से मिलती जुलती है और केस्टीला की स्पैनिश भाषा से एकदम भिन्न है।

असली स्पेनिश भाषा पर अब से २२०० वर्ष पहले ही रोमन लोगों की लैटिन भाषा का गहरा प्रभाव पड़ा। स्पैनिश भाषा में बहुत से ऐसे शब्द मिलते हैं जो संस्कृत के अपभ्रंश हैं और पश्चिमी एशिया और दक्षिणी-पूर्वी योरुप का चक्कर काटते हुये वहाँ जा पहुँचे। यह सम्बन्ध हमें आर्यों के उस उन्नत काल की याद दिलाता है जब हमारे यहां के लोग पश्चिमी लोगों को सभ्यता का प्रथम पाठ पढ़ा रहे थे।

उदाहरण के लिये संस्कृत से मिलने जुलने वाले कुछ शब्द नीचे दिये जाते हैं :—

"फर्डिनेन्ड और उसका वरदान।"

स्पेन के राज्य के बारे में एक पुरानी कहानी है। फर्डिनेन्ड तृतीय सेविल्ला को जीतने के बाद ही मर गया। वह अपनी आत्मा को शुद्ध कर के साधु बन गया, और मरियम के पास गया। मरियम ने उससे पूछा कि तुम अपनी प्यारी मातृभूमि के लिये क्या चाहते हो।

फर्डिनेन्ड ने तेल, शराब, अन्न, बहादुर जवान, सुन्दर लड़कियां, चुरट, लहसुन सब मांगा और उसको मिल गया। तब बादशाह ने पुनः राज्य के मङ्गल के लिये अच्छे शासन का बरदान मांगा।

मरियम ने कहा नहीं, कभी नहीं, यह तो कभी भी मन्जूर न होगा, यदि इस वरदान को दे दिया जायगा तो एक भी फरिश्ता (स्वर्गदूत) एक दिन तक भी स्वर्ग में रहना पसंद न करेगा।।

इसलिये स्पेन का राज्य शासन कभी भी शान्ति और इमानदारी से नहीं चल सका। जब कभी भी सुधार हुआ तब या तो राज्य की ओर से घोर अन्याय हुआ या वह डरपोक बन गया।

संक्षिप्त इतिहास

उत्तरी स्पेन में सैंटेन्डर के हास अल्टामीरा और दूसरे पहाड़ों की गुफाओं में ऐसे जानवरों की चित्रकारी मिली है जिनको नष्ट हुये बहुत समय बीत चुका है। घोड़े, भैंसे, हिरण आदि की हड्डी पर भी चित्रकारी मिली है। इससे सिद्ध होता है कि अत्यन्त पुराने समय में स्पेन के मूल निवासी खोहों में रहते थे और जानवरों का शिकार किया करते थे। इनकी उत्पत्ति का ठीक-ठीक पता नहीं लग सका है। अब से प्राय. ३००० वर्ष पूर्व फोनिशियन लोग स्पेन में अपना व्यापार करते थे। गेडज़ (वर्तमान केडिज़) की नींव उन्हीं ने डाली। उस समय उन्हें आइबेरियन लोग स्पेन में बसे हुये मिले थे। कुछ समय बाद उत्तर से केल्ट लोगों ने यहां हमला किया। पुर्तगाल और गेलिशिया के प्रदेशों में बसे हुये लोगों में इस समय भी उनके रुधिर के चिन्ह मिलते हैं। इन लोगों का रंग गोरा और क़द लम्बा था। दक्षिण-पूर्व की ओर आइबेरियन लोगों की प्रधानता

रही। अधिकतर लोग चरवाहे थे। कुछ लोगों ने साधारण खेती का काम भी सीख लिया था।

फ़ोनिशियन व्यापारियों ने स्पेन के सोने चांदी, पारे और तांबे से भी पूरा लाभ उठाया। उन्हीं लोगों ने स्पेनवासियों को लिखना सिखाया। वे दाहिनी ओर से बाईं ओर को लिखते थे। वे ६०० वर्ष तक स्पेन में आते जाते रहे।

इस बीच में ग्रीक (यूनानी) लोगों ने उत्तरी-पूर्वी स्पेन और बेलियारिक द्वीपों में बस्तियां बसाईं। वे अपनी कोठियों के चारों ओर ऊँची और मजबूत दीवारें बनाते थे। पर उन्होंने स्पेन वालों से मिलकर फोनिशियन लोगों पर चढ़ाई की। फोनिशियन लोगों के पास धन तो बहुत था पर वे लड़ाका न थे। उनकी मातृ भूमि टाइर (पूर्वी भूमध्य सागर के किनारे) इतनी दूर थी कि वहाँ से उन्हें कोई सहायता नहीं मिल सकती थी। अतः उन्होंने उत्तरी अफ्रीका में बसे हुए कार्थेजियन लोगों से सहायता मांगी। कार्थेजियन लोगों ने इस अवसर से लाभ उठा कर दक्षिणी स्पेन पर अपना अधिकार जमा लिया।

आगे चल कर उत्तरी भाग के लोगों ने रोम से सहायता मांगी। रोमन लोगों ने कार्थेज पर हमला किया। कार्थेज और रोम की लड़ाई बहुत दिनों तक चलती रही। इस समय (ईसा से २२० वर्ष पूर्व) हनीबाल ने रोमन लोगों को स्पेन में हरा कर डेढ़ लाख सिपाहियों के साथ रोम पर चढ़ाई की। उसने पिरेनीज पर्वत को पार किया। फिर वह फ्रांस होकर अल्प्स की तलहटी में पहुँचा। अन्त में बरफ से ढके हुये अल्प्स को

पार करके वह रोम पर चढ़ आया। रोमन लोगों ने उसका ध्यान बटाने के लिये कार्थेज और स्पेन में फौज भेजी। इसमें वे सफल हुये। हनीबाल को सहायता न मिल सकी। वह स्पेन के बचाने के लिये फिर लौटा। उसकी फौज प्राय: नष्ट हो गई। कुछ ही समय में पूरा स्पेन रोमन लोगों के अधिकार में आ गया। स्पेन में जो उन्नति पहले हुई थी उसको रोमन लोगों ने बहुत कुछ आगे बढ़ा दिया। स्पेन के सूती, ऊनी, रंगे हुए कपड़े और लोहे के हथियार दूर-दूर पहुँच कर बिकने लगे। रोमन लोगों ने यहां कई मजबूत इमारतें और सड़कें बनवाई। लैटिन साहित्य का स्पेन में जोरों से प्रचार होने लगा। लेकिन बढ़े हुए लगान और रोमन कलक्टरों के लोभ और अत्याचार से स्पेन में अच्छे उपजाऊ खेतों में जङ्गल उग आया। कई भागों में घोर असन्तोष फैलने लगा। स्पेन प्राय: तबाह हो गया। हजारों किसान अपने खेतों को छोड़कर दूर देशों में भाग गये। रोमन गवर्नर गुलामों को भर्ती करके खेती कराने लगे। करों के बोझ से दस्तकारी भी लुप्त हो गई। दस्तकार लोग भोजन-वस्त्र के लिये खुशी से गुलाम बन कर भरती होने लगे। इसी समय पाँचवीं सदी के आरम्भ में लगभग ८०,००० वंडाल लोगों ने स्पेन पर धावा बोल दिया। पश्चिम की ओर स्वेवी और उत्तर की ओर गाल या फ्रांस से विजी गोथ लोग हमला करने लगे। बहुत से लोग रोमन लोगों के अत्याचार से बचने के लिये बाहरी आक्रमणकारियों से मिल गये। ईसाई मत के प्रचार ने तीसरी शताब्दी से रोमन लोगों के धार्मिक विश्वास और सामाजिक संगठन शिथिल कर दिये थे। आलन

(तूरानी) लोग भी रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करने लगे। फल यह हुआ कि स्पेन में रोमन साम्राज्य कुछ ही समय में छिन्न-भिन्न हो गया। छठीं शताब्दी के आरम्भ (५३४ ई०) से विजी गोथ लोग स्पेन के बहुत बड़े भाग (एन्ड्रोग्राटो) पर शासन करने लगे। ये रोमन लोगों का अनुकरण करते थे। ५८६-६०१ ई० के बीच में रोमन केथोलिक मत स्पेन का राष्ट्रीय धर्म हो गया। अन्तिम विजीगोथ राजा (रोडेरिक) को विकराल स्थिति का सामना करना पड़ा। अरबों का मुसलमानी साम्राज्य अरब से फैलते-फैलते उत्तरी अफ्रीका तक पहुँच गया था। ७११ ई० के अप्रैल महीने में खलीफा के सेनापति ने जिब्राल्टर (एक सेनापति का नाम जेबल-अल-तारीक था। उसी की यादगार में इसका नाम जिब्राल्टर पड़ गया) प्रणाली को पार किया। जुलाई महीने में ७ दिन की घमासान लड़ाई के बाद रोडेरिक हार गया। मूसा की सेना के लोग मूर कहलाते थे। उनमें कुछ अरबी, कुछ सिरियन और कुछ उत्तरी अफ्रीका के बर्बर लोग शामिल थे। अरबी लोग सिरया वालों को नीच समझते थे। बर्बर लोग दोनों ही से जलते थे पर वे धर्म के नाम पर दूसरे देशों को लूटने और उन पर अधिकार जमाने में एक थे। बर्बर लोग वंडाल लोगों की सन्तान थे। गोथ लोगों ने उन्हें स्पेन से भगा दिया था। इस लिये बदला लेने की आग उनमें धधक रही थी। वे खूंख्वार लड़ाका थे। उधर गोथ राजाओं के मतभेद की कुछ परवाह न करके इन हमला करने वालों से आ मिलते थे। यहूदी और पादरी लोग गोथ-शासन से खुश न थे।

यहूदी किसी ऊंचे पद पर नियुक्त नहीं किये जाते थे। वे किसी ईसाई स्त्री से व्याह नहीं कर सकते थे न वे ईसाई गुलाम रख सकते थे। यहूदी लोग सब कहीं अफ्रीका के हमला करने वालों से मिले हुये थे। हमला करने वालों को जादू की तरह बड़े बड़े शहरों के दरवाजे खुले मिलते थे। कुछ ही समय में मूर लोग स्पेन के बड़े भाग के राजा हो गये। ७१८ ई० में मूर लोग स्पेन की उत्तरी सीमा पर पिरेनीज को पार कर के फ्रांस में पहुँचे। यहां उनकी हार हुई। यदि वे यहां जीत जाते तो प्रायः समस्त पश्चिमी योरुप में उनका राज्य हो जाता। शायद पूर्वी योरुप की ओर से बढ़ने वाले तुर्की से वे मिल जाते। पर पिरेनीज के दक्षिण में फिर भी कई सदियों तक उनका बोल बाला रहा।

स्पेन के जीतने और शासन करने में मूर लोगों ने प्रशंसनीय सहनशीलता दिखलाई। जहां उनकी फौजों का विरोध नहीं किया गया वहां उन्होंने पुराने शासकों के हाथ में ही अधिकार छोड़ दिया। सब लोगों को अपना अपना धर्म मानने के लिये उत्साहित किया गया। शहरों में जिन लोगों के पास जायदाद थी वे २० फी सदी खराज (कर) देने पर अपने अधिकार में उसे रख सकते थे। मालदार ईसाई और यहूदियों को फी आदमी पीछे ४८ दिरहम (लगभग १५ रुपये) अलग देने पड़ते थे। गरीबों को साढ़े सात और उनसे भी छोटों को चार रुपये फी आदमी देने पड़ते थे। दक्षिणी स्पेन में मूर लोगों का विरोध किया गया था। वहाँ जमीन जब्त कर ली गई थी। जमीन का ५ भाग सरकार के लिये रख लिया गया।

शेष ४ भाग मूर सिपाहियों को बांट दिया गया। अफ्रीका से हज़ारों लोग स्पेन की उस उपजाऊ ज़मीन में बसने आ गये। जिसे उनके क़बीले वालों ने जीता था। बर्बर, तौरेग, कोप्ट, नूबियन सभी लोग वंडालूशिया (वंडाल लोगों के रहने के कारण यह नाम पड़ा) में बसने के लिये आ गये। ये फिरके आपस में एक दूसरे से जलते थे। लेकिन प्रायः सभी फिरके इस्लाम धर्म की दीक्षा देने वाले अरबों को मानते थे। स्पेन के अमीर जल्दी जल्दी बदलते रहे। पर दमश्क के अरब ग्रेनाडा के सुन्दर महल में राज्य करते रहे। मिस्री मुसलमान मुर्शिया के गरम प्रान्त में आ डटे। बर्बर लोग दक्षिण-पश्चिम और केस्टील में पहुँचे। इन्हें अक्सर अपने ईसाई दुश्मनों से लड़ना पड़ता था। धीरे धीरे बर्बर लोग प्रबल होते गए। उन्हीं में से शासक चुने जाने लगे। दमश्क का ख़लीफा केवल नाम के लिये अपनी मंजूरी देता था।

स्पेन देश में शान्ति स्थापित हो जाने से व्यापार और धन बढ़ने लगा। यहूदी और ईसाई सभी लोग खुश थे। बहुत से ईसाई लोग जज़िया से बचने के लिये मुसलमान हो जाते थे। वे मुसलमान हो जाने पर आज़ाद कर दिये जाते थे। पर यहाँ अरब लोगों ने जबरदस्ती मुसलमान बनाने की कोशिश नहीं की। वे विद्वान ईसाईयों (मोज़ारबी) को इज्जत की नज़र से देखते थे। ईसाई लोग बड़े शोक से अरबी पढ़ते थे। वे लेटिन भूल सी गये। उनको ईसाई बना रखने के लिये पादरियों को इञ्जील का अरबी अनुवाद करना पड़ा। पर जब कट्टर ईसा-ईयों ने धर्म की आड़ में स्पेन को फिर से जीतने की तैयारी

की तब कट्टर मूर लोग भी अल्लाह और पैगम्बर के नाम से सख्तियाँ करने लगे। ईसाई लोग नये गिरजे नहीं बना सकते थे न वे पुरानों की मरम्मत कर सकते थे। मुसलमान जब चाहते (चाहे दिन होता चाहे रात) इसाईयों के गिरजे में जा सकते थे। गिरजों के ऊपर से क्रूश (क्रास) का निशान उठा लिया। ईसाई लोग जोर से मुसलमानों के सामने गीत नहीं गा सकते थे। ईसाईयों के मुसलमान होने में भी रुकावटें पड़ने लगीं। मुसलमानों के सामने ईसाईयों को खड़ा होना पड़ता था। ईसाई लोगों को अरबी पोशाक पहनने की मनाही हो गई।

उत्तर-पश्चिम के पहाड़ी भाग में मूर लोगों का ठीक ठीक अधिकार कभी नहीं जमने पाया था। यहां के ईसाई लगातार अवसर पाते ही हमला करते रहे। उधर मूर लोगों में आपस में फूट फैलने लगी। धर्म के नाम पर ईसाई रंगरूट दूर दूर से आकर भरती होने लगे। ईसाई फौजें धीरे धीरे दक्षिण में टेगस नदी के किनारे तक पहुँच गईं। ईसाई सिपाही वेलेंशिया पर भी छापा मारने लगे। इस प्रकार उन्होंने टोलेडो को घेर लिया। फर्नान्डो के समय में कार्दोवा और सेविल जिला छिन गया। ग्रेनाडा प्रान्त को छोड़कर मूरों (मुसलमानों) के पास कुछ न बचा। अन्त में १४९२ ई० में मूर लोग ग्रेनाडा से भी भगा दिये गये। उनके गवर्नर ने अपने पुराने राज्य को सदा के लिये छोड़ दिया। अन्तिम बार अपने राज्य को देख कर उससे आँसू बहाये बिना न रहा गया।

मूर लोगों के चले जाने से स्पेन को लाभ हुआ या हानि,

इस प्रश्न पर इस समय भी विद्वानों में मत भेद है। पर इस में सन्देह नहीं कि मूर लोगों ने अपने समय में स्पेन को योरुप भर में सबसे अधिक उन्नतशील बना दिया। स्पेन में सब से अधिक धन और आबादी हो गई। महल, मस्जिद, पुल, सड़कें, नहरें और मदरसे बड़ी संख्या में बन गये। नये नये कारखाने खुल गये। अकेले कार्दोवा शहर में ही रेशम बुनने के लिये १३,००० करघे चलते थे। लोहे, फौलाद, धातु, शीशा और रंगाई का काम उन्नत हो गया। स्पेन के बहुमूल्य पत्थर हिंदुस्तान तक आने लगे। स्पेन के मदरसे और पुस्तकालय योरुप भर में प्रसिद्ध हो गये। खेतों के नये पौधे, अन्नवाले और फलवाले पेड़ दूर दूर से लाये गये। कई पालतू जानवरों को यहां लाने का श्रेय भी मूर लोगों का है। सिंचाई का जो अद्भुत काम मूर लोगों ने किया उससे स्पेन का सूखा रेगिस्तानी भाग बगीचा बन गया।

स्पेन के साम्राज्य का उत्थान और पतन

१४७९ में ईसाबेल केस्टील प्रान्त की महारानी हुई। फर्डीनन्ड आरगन का राजा हुआ। दोनों के मिलजाने से स्पेन में नई शक्ति का संचार हुआ। १४९२ ई० में उन्होंने मिल कर अन्तिम मूर राजा को स्पेन से भगा दिया। उसी वर्ष कोलम्बो ने उनके लिये नई दुनिया का पता लगाया। ईसाबेल धर्म के

नाम पर पागल थी। फर्डीनेन्ड कूट नीतिज्ञ था। एक बार उससे शिकायत की गई कि उसने फ्रांस के राजा को धोखा दिया। फर्डीनेन्ड ने उत्तर दिया कि फ्रांस का राजा झूठ कहता है। मैं उसको दस बार धोखा दे चुका हूँ! पर राजा रानी का विलक्षण मेल हुआ। उनके समय में स्पेन एक राष्ट्र बन गया और स्पेन के राष्ट्र बनने से पादरियों (गिरजे घरों) का प्रभुत्व हो गया। अतः नये राज्य के राजा और रानी ने मिल कर इस बात पर जोर दिया कि उनके साम्राज्य की सब प्रजा रोमन कैथलिक मत को मानने वाली हो यहूदी निकाल दिये गये।

प्रोटेस्टेन्ट ईसाई जलाये जाने लगे। कैथलिक मत के विरुद्ध आचरण करने का जिन लोगों पर जरा सा भी शक होता था वे आधी रात को गिरफ्तार करके अंधेरी कोठरी के कठ-पिंजरे में रक्खे जाते थे। उन पर तरह तरह का अमानुषीय अत्याचार होता था। आगे चलकर जो धनी होते थे वे अक्सर इस जाल में फांस लिये जाते थे। उन का धन जब्त कर लिया जाता था। इस प्रकार धीरे धीरे धनी, जागीरदार, म्यूनिसि-पैलिटी आदि सभी संस्थाओं पर राष्ट्र का आतंक छा गया। जब घर इस प्रकार सुधर गया तो स्पेन ने बाहर विजय पताका फहराने का निश्चय किया। फर्डीनेन्ड ने मरते समय (१५१६) तक सार्डीनिया, सिसली द्वीप, प्रायः आधा इटली प्रायद्वीप जीत कर स्पेन में मिला लिया। आगे चल कर हालैंड, बेल्जियम, पुर्तगाल और अधिकांश फ्रांस भी स्पेन के राज्य में मिला लिये गये। सारा मध्य और दक्षिणी अमरीका, पश्चिमी और दक्षिणी संयुक्त राष्ट्र अमरीका फिलीपाइन द्वीप समूह मेडीरा, एजोर्स

केपवर्डी द्वीप, गिनी, कौंगो, अंगोला. लंका, बोर्नियो, सुमात्रा, मलक्का और दूसरे एशियाई भाग स्पेनिश साम्राज्य में शामिल कर लिये गये। मध्य योरुप के कुछ राष्ट्रों में स्पेन का गहरा प्रभाव था। स्पेन में अपार सम्पत्ति आने लगी। कुछ समय तक स्पेन संसार का एक मात्र शक्ति शाली साम्राज्य हो गया।

पर स्पेन का बड़ा साम्राज्य भीतर ही भीतर खोखला होने लगा। जिन लोगों को दूसरे देशों को नष्ट करने से आसानी से सोना मिलने लगा वे दस्तकारी और खेती को घृणित कार्य समझने लगे। फल यह हुआ कि दूसरे देश तरह तरह का सामान बनाकर स्पेन में भेजने लगे। कुछ ही वर्षों में योरुप के दूसरे देश स्पेन के सोने और चाँदी के सिक्कों से भर गये। स्पेन खाली हो गया। धार्मिक असहिष्णुता से सब कहीं स्पेन के दुश्मन खड़े हो गये। प्राटस्टेन्ट मत का दबाना स्पेन मत की शक्ति के बाहर हो गया। पूरा प्रयत्न करने पर भी इंगलैंड, स्काटलैंड, हालैंड, उत्तरी जर्मनी और स्कॅंडीनेविया में प्रोटेस्टेन्ट मत फैल गया। उधर धनकी कमी से स्पेन के लोगों में भी असन्तोष फैल गया। स्पैनिश आर्मडा इंगलैंड को जीतने के लिये भेजा गया। तूफान ने बहुत से जहाजों को नष्ट कर दिया। जो बचे उनमें सिपाही तो सुसज्जित थे। यदि वे दुश्मन को पाते तो उनकी विजय प्रायः निश्चित थी। पर वे धीरे धीरे चलते थे। इंगलैंड के छोटे छोटे तेज जहाज उनको उसी तरह से तंग करते थे जिस तरह से बड़े भालू को बर्रें डंक मार मार कर तंग कर देती हैं। उस असफलता के बाद स्पेन गिरता ही गया। इंगलैंड और हालैंड के मल्लाहों ने दूसरे देशों में

स्पेन के जहाजों को लूटना शुरू कर दिया। वे स्पेन के अधिकृत देशों में घुसने लगे। कुछ समय तक स्पेन के बड़े साम्राज्य ने लोगों पर रोब जमाने की कोशिश की (सभी बड़े साम्राज्य अपने समय में लोगों पर झूठा रोब जमाने की कोशिश करते थे। पर सभी प्रयत्न विफल हुए। कुछ ही समय में स्पेन का बाहरी साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। उधर के लोगों में फ़जूल खर्ची और आलस्य की आदत पड़ गई थी। खेती और दस्तकारी चौपट हो चुकी थी। इसलिये स्पेन योरुप के देशों में जितना आगे बढ़ा था उतना ही नीचे गिर गया।

हां स्पेन के पतन से दूसरे देश लूट खसोट की दौड़ में आगे बढ़े। संसार के नये नये भागों का पता लगाया। इसी समय स्पेन में डाकिक्साटी और दूसरे उच्च कोटि के नाटक लिखे गये। मूरिलो और दूसरे चित्रकारों ने स्थायी चित्रों की रचना की। अठारहवीं सदी का अधिकांश भाग स्पेन को लड़ाइयों में बिताना पड़ा। जब फ्रांस में क्रान्ति हुई तो स्पेन इससे अलग न रह सका। नेपोलियन ने स्पेनवासी विक्षुब्ध हो उठे। १८०८ ई० में फ्रांस के विरुद्ध उन्होंने विद्रोह का झंडा उठाया। इंगलैंड ने उनका साथ दिया। रूस के आक्रमण में नेपोलियन को भारी क्षति उठानी पड़ी। उसकी अनुपस्थिति में स्पेनवासी अंग्रेजों की सहायता से फ्रांसीसियों को स्पेन से बाहर भगाने में १८१२ ई० में सफल हुए। १८१४ ई० में फार्डिनेन्ड सप्तम फिर से स्पेन का राजा हुआ। पर उसने कोर्टेज (पार्ल्यामेंट) को दबाना चाहा। पादरी लोगों और फौज ने उनका साथ दिया। पर लोग उसकी निर्दयता और

अत्याचार से बिगड़ खड़े हुये। १८२० के विद्रोह में फौज ने भी जनता का साथ दिया। इसी समय अमरीका में स्पेन के उपनिवेशों में विद्रोह उठ खड़ा हुआ। बहुत सी फौज नई दुनिया के विद्रोह को दबाने के लिये भेजी गई। १८२३ ई० में राजा कैद कर लिया गया। इस समय भी योरुप के राजा ईश्वर के एजेण्ट माने जाते थे! उन्होंने एक दूसरे की सहायता के लिये एक गुट बना लिया था। फर्डिनेण्ड ने इसी गुट से प्रार्थना की। रूस और फ्रांस सहायता देने के लिये तैयार हुए। पर इस चाल में फ्रांस की शक्ति बढ़ने का एक अवसर देखा अतः इंगलैंड ने इसका विरोध किया। अन्त में इंगलैण्ड भी राजी हो गया। कुछ शर्तों के साथ राजा फिर गद्दी पर बिठा दिया गया।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के स्वाधीन हो जाने पर अमरीका की दूसरी पराधीन रियासतें स्वाधीन होने का प्रयत्न करने लगीं। १८१० ई० तक कई राज्य वास्तव में स्वाधीन हो गये। १८२० ई० में मेक्सिको और कोलम्बिया स्वतन्त्र राष्ट्र बन गये।

इतने पर भी स्पेन में पूरी शान्ति न रही। गृह कलह १८३९ ई० तक चलती रही। १८६८ ई० में कार्डिज ने विद्रोह किया। कुछ लोगों ने १८७४ ई० में प्रजातन्त्र राष्ट्र स्थापित करने का प्रयत्न किया। पर इसमें उन्हें सफलता न मिली। १८७५ ई० में अल्फाँसो (बारहवे) का राज्य हो गया। इसी समय क्यूबा में भी विद्रोह हुआ। विद्रोह कई वर्ष तक चला। इसे दबाने के लिये बीच बीच में बड़े अत्याचार किये गये।

स्पेन-दर्शन

१८८६ ई० में स्पेन में प्रजातन्त्र राष्ट्र स्थापित करने का फिर प्रयत्न किया गया। उधर कुछ क्यूबा के अत्याचारों और कुछ साम्राज्य बढ़ाने की इच्छा से उत्तेजित होकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १८९८ ई० में स्पेन से लड़ाई छेड़ दी। स्पेन की हार हुई। नई दुनिया में स्पेन के राज्य का अन्त हो गया। ईश्वर के एजेंट बनने, गिरे हुए लोगों को शिक्षा, सभ्यता और मुक्ति देने का जो भार स्पेन ने अब तक अपने सिर पर ले रक्खा था वह बहुत कुछ हलका हो गया। उस भार का बहुत कुछ भाग संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपने ऊपर ले लिया। उपनिवेशों के शासन और लड़ाइयों का कर्ज़ स्पेन के मत्थे पड़ा। पादरी लोग अपना संगठन अलग करने लगे। कारखानों के मज़दूर भी दंगे करने लगे। ऐसे ही समय में अल्फाँसो (तेरहवें) ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। मरक्को के रिफ लोगों ने स्पेन की फौजों पर हमला किया। अफ्रीका में फौज बढ़ाने की आवश्यकता पड़ी। इससे खर्च बढ़ा और रंगरूट जबरदस्ती भरती किये गये। बार्सिलोना के लोगों ने १९०१ ई० में इसके प्रतिवाद के रूप में हड़ताल बोल दी। हड़ताल को दबाने के लिये फौज भेजी गई। साथ ही जो पादरी कानून के विरुद्ध संगठन करते थे उन पर मुकदमे चलाये गये। उधर मरक्को में दंगे होते ही रहे। इतने में १९१४ ई० में बड़ी लड़ाई छिड़ गई। स्पेन ने तटस्थ रह कर बुद्धिमत्ता दिखलाई। पर तटस्थ रहने पर भी स्पेन के ६५ जहाज डुबा दिये गये। लड़ाई के अन्त में जर्मनी यह हर्जाना देने के लिये तैयार हो गया। पर घरेलू विद्रोह और मरक्को की हार से

स्पेन को धक्का पहुँचा। इससे अधिक अपरिवर्तन वादी दल की सरकार बनी। मरक्को की फौजों को छुड़ाने के लिये १४०,००० सिपाही फिर से भरती किये गये। मरक्को में नाम मात्र की जीत के बाद गरम और नरम दल मिल गये। १९२३ ई० में आईमो डिरिवेरा प्रधान मन्त्री बना। पर धीरे-धीरे वह स्पेन का तानाशाह (एकतन्त्र निरंकुश शासक या डिक्टेटर) बन गया। देश का विद्रोह कुछ दबा। मरक्को का फौजी खर्च भी कुछ कम हुआ। पर १९२५ ई० में मरक्को के रिफ लोगों के प्रसिद्ध नेता अब्दुल करीम ने फ्रांसीसी मरक्को पर अचानक हमला कर दिया। इसको दबाने के लिये फ्रांस और स्पेन की सरकार के बीच में फौजी और राजनैतिक समझौता हो गया। दोनों की संयुक्त सैनिक शक्ति के सामने अब्दुल करीम को सिर झुकाना पड़ा। इस जीत से स्पेन में कुछ नई जान आई। स्पेन का एक हवाई जहाज आर्जेण्टाइना मेमिल्ला को उड़ कर गया। इस से स्पेन के पुराने सम्बन्ध को फिर से जिन्दा करने की बात सब के सामने खड़ी हो गई। पर सरकारी खर्च बढ़ता ही गया। राजा ने भरसक आपत्ति टालने की कोशिश की। आइमो डी रिवेरा ने तरह तरह की मनमानी करके घाटे की आफत टालनी चाही। पर अन्त में प्रजा ने अपने जन्म सिद्ध अधिकारों से काम लिया। शिक्षकों और विद्यार्थियों ने आजादी के लिये पूरा जोर लगाया। अन्त में शान्ति पूर्ण विद्रोह ने स्पेन के शासन विधान को बदल दिया। राजा के स्थान पर प्रजातन्त्र राज्य स्थापित

हो गया। गत फर्वरी के चुनाव में स्पेन के शासन की बागडोर साम्यवादी प्रजातन्त्र के हाथ में आगई।

स्पेन और अफरीका (क्यूबा) की लड़ाई

मेक्सिको की खाड़ी के दरवाजे पर फ्लारिडा के दक्षिणी सिरे से सिर्फ १०० मील की दूरी पर क्यूबा का बड़ा टापू बहुत ही धनी है। इसके मूल निवासियों को कोलम्बस के साथियों ने कुछ ही वर्षों में आधा तिहाई कर दिया। जो बचे उन में वर्ण संकर अधिक थे। कुछ रेड इंडियन और अफीका से लाये हुए हब्सी भी थे। असली स्पेन वासी यहाँ राज्य करते थे। लेकिन स्काच, इंगलिश, अमरीकन लोगों के पास कहवा और गन्ना के बड़े बड़े खेत थे। स्पेन वालों का शासन अच्छा न था। कुछ राज विद्रोही समय समय पर विद्रोह मचाते थे। १८९५ ई० में इसी तरह का विद्रोह उठ खड़ा हुआ। उसको दबाने के लिए स्पेन के फौजी गवर्नर ने बड़ी सख्ती की। अमरीका के लोग क्यूबा वालों के प्रति सहानुभूति दिखलाने लगे। इन लोगों को शान्त रखने के लिये स्पेन वालों ने क्यूबा को शासन सुधार देने का निश्चय कर लिया था। इसी बीच १८९८ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक जंगी जहाज क्यूबा के हवाना बन्दरगाह में पहुँच गया। दुर्भाग्य से वह बारूद से उड़ा दिया गया। वह भीतर रक्खी हुई बारूद में आग लगाने से उड़ाया गया या बाहरी हमले का शिकार हुआ इसका पता लगाना कठिन है। स्पेन ने फौरन निष्पक्ष जांच

और पंचायती निर्णय स्वीकार करने की घोषणा की। पर अमरीका ने इससे इनकार कर दिया। अमरीका की निजी जाच ने यह ऐलान कर दिया कि जहाज बाहर से उड़ाया गया स्पेन ने फैसला दिया कि वह अन्दर की बारूद से उड़ाया गया। इसके बाद ही अमरीका की सरकार ने इस टूटे हुये जहाज को समुद्र में ले जाकर इतना गहरा डुबा दिया कि फिर कोई दुबारा उसकी जांच ही न कर सके। अखबारों ने जन साधारण को उभाड़कर पागल कर दिया। रूजवेल्ट (जो उस समय अमरीका जंगी बेड़े के उपमन्त्री थे) लड़ने के लिये तैयार थे। एक दो अमरीकन शान्ति चाहते थे। पर उनकी सुनवाई न हुई। यदि इन लोगों की चलती तो क्यूबा को स्वराज्य मिल जाता और लड़ाई न होती। पर बिना लड़ाई किये अमरीका को पोर्टोरिको और फिलीपाइन द्वीप किस तरह मिलते। स्पेन शायद क्यूबा देने के लिये भी तयार हो जाता पर संयुक्त राष्ट्र ने पहले ही से लड़ाई करने का निश्चय कर लिया था। लड़ाई नाम मात्र की था। स्पेन का जहाजी बेड़ा बहुत पुराना और बुरी हालत में था। स्पेन का जलसेना नायक सर बेरा सेन्टियागो बन्दरगाह (क्यूबा) के पास हार गया। अल्केनी में ६२०० अमरीकन सिपाहियों ने स्पेन वालों के ६०० सिपाहियों को हराने में ३ घंटे से अधिक लगाये इससे उनकी सैनिक योग्यता का अन्दाजा किया जा सकता है। मनिल्ला की खाड़ी में भी पके आम की तरह अमरीकन लोगों को जीत अपने आप मिल गई। कुछ ही दिनों में पेरिस शहर

में सन्धि की शर्तें बनने लगीं। २ करोड़ डालर (या ५ करोड़) में फिलीपाइन द्वीप स्पेन से अमरीका को मिल गया। एक अमरीकन ने लिखा है कि लगभग पांच पांच रुपये में हर एक फिलिपिनो (फिलीपाइन द्वीपवासी) को मोल लिया गया।

मरक्को की समस्या

१४९२ में स्पेन के राजा फर्डिनेन्ड मूर लोगों की अन्तिम फौजों को हराने से ही सन्तुष्ट नहीं हुए। उन्हें डर था कि मूर लोग फिर कहीं दक्षिणी स्पेन पर हमला न कर दें। इसलिये वे उत्तरी मरक्को (ट्यूनिस) पर अधिकार जमाना चाहते थे। जोश भरे हुए इसाईयों ने कुछ ही समय में कुछ मरक्को और ट्रिपली के प्रदेश जीत लिये। ट्यूनिस और अल्जीर्स के सुल्तान स्पेन को कर देने लगे। फिर भी मूर लोग ईसाई जहाजों पर अक्सर हमला कर देते थे और गोरे ईसाईयों को गुलाम बना लेते थे। इस प्रथा को दूर करने के लिये १५३५ में स्पेन के राजा ने ट्यूनिस पर चढ़ाई की। पर इससे मरक्को की ओर से होने वाले हमले कुछ ही समय के लिये दबे रहे। समय पाते ही उस ओर से हमले फिर होने लगते। १७४६ की हार के बाद स्पेन का राजदूत अल्जीर्स में रहने लगा। स्पेन को वहां व्यापार करने की सुविधा भी मिल गई। अट्ठारहवीं सदी के आरम्भ में स्पेन वालों ने टेटुआन नगर छीन लिया और स्यूटा पर अपना प्रभुत्व जमा लिया।

१८९३ में मेलिला के समीप फिर गड़बड़ी छिड़ गई। स्पेन का प्रसिद्ध सेनापति जनरल मरगालो मार डाला गया। इससे कुछ समय तक तो शान्ति रही। पर स्पेन ने मरक्को को कभी नहीं भुलाया। न स्पेन वाले मरक्को को भली भांति जीत ही सके। फिर भी स्पेन का सिक्का यहां चलता था। जो यहूदी स्पेन से निकाले गये थे, उन्होंने यहां आकर व्यापार अपने हाथ में कर लिया। साथ ही उन्होंने स्पैनिश भाषा को यहां की व्यापारिक भाषा बना दिया। पर स्पेन वाले यहां के कुछ स्थानों में किले बन्दी करके उन्हें अपने हाथ में रखना चाहते थे। वे वहां बसना नहीं चाहते थे। जिब्राल्टर के छिन जाने से उनकी सैनिक प्रधानता इस ओर से सदा के लिये जाती रही। वे चाहते तो स्यूटा में प्रबल किलाबन्दी कर सकते थे। इससे जिब्राल्टर का महत्व घट जाता। पर इस के लिये उनके पास पर्याप्त साधन नहीं थे। इसी समय फ्रांस भी उत्तरी अफ्रीका में अपना अधिकार जमाने लगा। उधर १८४५ ई० में इङ्गलैंड ने मरक्को के उन सब (विद्रोहियों) की रक्षा करने की घोषणा कर दी जो अँग्रेजी झंडे के नीचे आ जाते थे। इससे स्पेन को अफ्रीका में अधिक बढ़ने का अवसर ही न रहा १८८० ई० में एक अन्तर्राष्टीय सभा हुई। इस में आस्ट्रिया-हंगरी, बेल्जियम, हालैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रेटब्रिटेन, इटली, मरक्को, नार्वे, स्वेडन, पुर्तगाल, स्पेन और संयुक्त राष्ट अमरीका के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। पर इसमें ये लोग किसी महत्वपूर्ण निश्चय पर न पहुँच सके।

इसके कुछ ही समय बाद १८९८ ई० में स्पेन अमरीका से

हार गया। १९०२ ई० में राजा अल्फांसो बालिग हो गया। पर उत्तरी अफ्रीका में फ्रांस की शक्ति बढ़ गई। स्पेन में अकाल पड़ा। बार्सिलोना और दूसरे शहरों में विद्रोह होने लगा। इसी समय मरक्को के रिफ लोगों ने स्पेन की फौजों को हरा दिया। ६ महीने की घमासान लड़ाई के बाद वहाँ किसी तरह स्पेन के फिर पैर जम सके। १९२१ ई० में मरक्को में स्पेन की फिर गहरी हार हुई। स्पेन ने मरक्को पर राज्य करने के लिये अपार धन नष्ट किया है। हजारों का बलिदान किया है। पर उस अनुपात से न लाभ हुआ है और न आगे होने की आशा है।

किसी समय स्पेन का आधी दुनिया में बोल बाला था। उस समय उत्तरी अमरीका के कुछ स्थानों पर क़िले बन्दी करना उचित ही था। पर अब साम्राज्य चला गया। स्पेन में अफ्रीका के भीतर बढ़ने की शक्ति नहीं रही। न स्पेन कारबारी देश ही है जहाँ के कारखानों में बना हुआ पक्का माल मरक्को में हमेशा बिक सके। न स्पेन के पास इतना धन है कि मरक्को में रेल, बिजली, सड़क आदि फैला कर वहाँ से धन कमा सके। ऐसी हालत में स्पेन के लिये मरक्को का शासन बड़ा घातक है। मरक्को के मूर लोग शान्ति से रहना जानते ही नहीं हैं। अभी मूर सिपाही विद्रोही सेना में भरती हो कर लड़ रहे हैं। स्पेन की नियन्त्रण मरक्को में पहले बहुत ढीला था। इस गृह-कलह में स्पेन की शक्ति और भी क्षीण हो जायगी इससे मरक्को में विद्रोह का होना अवश्यम्भावी है। इस को तोड़ने वाले विद्रोही नेताओं ने मरक्को को स्वाराज्य देने की

योजना तैयार की है। यह भी सम्भव है कि मरक्को पर इटली या जर्मनी की नज़र लगी हो और उनकी योजना कुछ और ही हो।

अन्वेषण-काल

१४९२ ई० में स्पेन ने न केवल मूर लोगों को मार भगाया वरन् दुनिया का पता लगाना आरम्भ किया। कोलम्बस कई वर्षों तक योरूप की राजधानियों में मारा मारा फिरा। लोग उसे पागल समझने लगे थे। पर स्पेन की रानी ईसाबेला ने अपना जेवर बेंचकर कोलम्बस को सहायता दी कोलम्बस की खोज ने स्पेन को माला माल कर दिया। पहली बार कोलम्बस के साथ जाने में लोग रोते थे। पर जब वह पश्चिमी द्वीप समूह से सोने-चाँदी के साथ लौटा तब तो बहुत से लोग बड़े उत्साह के साथ नये देशों को जाने लगे। कोलम्बस के मरने के १३ वर्ष बाद हरनांडो कोर्टेज ६०० सिपाहियों को लेकर मेक्सिको की खाड़ी पर जब उतरा। मेक्सिको के लोग तीर, कमान, लकड़ी के भाले और पत्थर के टुकड़ों से गोली का जवाब वीरता से देते थे। पर तोपों का सामना वे अधिक समय तक न कर सके। वे घोड़ों से और भी अधिक डर गये। वे घोड़े और घुड़सवार को एक समझते थे। जब घुड़सवार पीछे से अचानक हमला करने लगे तो मेक्सिको वासी बिना लड़े ही भाग गये। एक घंटे की लड़ाई में ८०० रेड इंडियन गोलों की बोछार से खेत रहे। इस से मेक्सिको देश के भीतर के लिये रास्ता साफ हो

गया। मेक्सिको के राजा ने पहिये के बराबर सोने की ढाल कोर्टज को भेंट में भेजी। इससे उनका लोभ और भी बढ़ गया। स्पेन के सिपाही अनजान देश के जंगलों में घुसने के लिये राजी न थे। पर कोर्टज़ ने जहाजों को खाली करवा कर उन में आग लगवा दी। कोर्टज़ मेक्सिको शहर में पहुँचा। राजा ने स्पेन वालों का अच्छा स्वागत किया। उनको एक अच्छे घर में ठहराया। एक दिन कोर्टेज़ ने राजा को अपने यहां बुलाकर क़ैद कर लिया। राजा ने अपना सारा ख़ज़ाना कोर्टेज़ को सौंप दिया। फिर भी वह मुक्त नहीं किया गया। इतने में कोर्टेज़ को स्पेन के कुछ और सिपाही मिल गये। अन्त में राजा उसी घर की छत पर मार डाला गया। पर मेक्सिको वालों के डर से वह एक रात को छिप कर भागने लगा। फिर भी १३०० सिपाहियों में ९०० मार डाले गये। दूसरी बार वह और भी भारी तयारी के साथ आया। मेक्सिको के कुछ देश द्रोही सरदार भी उससे मिल गये। तीन महीने तक राजधानी (मेक्सिको) का घेरा पड़ा रहा। शहर वालों को बाहर से खाने पीने का कुछ भी सामान न मिल सका। बहुत से लोग भूखों मर गये। बहुत से गन्दगी बढ़ जाने से बीमारी से मर गये। इस प्रकार अन्त में कोर्टेज मेक्सिको का गवर्नर हो गया और मेक्सिको का देश स्पेन के राज्यों में मिला लिया गया।

इसी समय बल्बोआ ने प्रशान्त महासागर का पता लगाया वह पहले पश्चिमी द्वीप समूह में आकर खेती करने लगा। इस में उसे सफलता न मिली। उस पर बहुत से लोगों का क़र्ज़ लद गया। उनसे बचने के लिये वह एक जहाज पर चढ़

कर शराब के बड़े पीपे में छिप गया। पीपे में इस तरह छिपा छिपा यह जहाज के साथ चल दिया। न उसके पास पैसा था न कोई साथी। वह इस प्रकार अकेले पनामा के किनारे पर उतरा। यहाँ उसे स्पेन के कई ऐसे लोग मिले जो बस्तियाँ बसाने के लिये स्पेन से आये थे। वे बीमारी से भी हैरान थे। बलबोआ सहज ही उनका नेता बन गया। उसे मूलनिवासियों से बहुत सा धन मिला। एक दिन पहाड़ के ऊपर जाने पर उसने दूसरी ओर प्रशान्त महासागर के दर्शन किये। सोने की तलाश में वह दूसरे देशों को जाने वाला था पर उसके एक साथी ने उसे मार डाला।

उसके मरने पर उसका एक अनुयायी फ्रैंसिस पिज़ारो सोने की तलाश में आगे बढ़ने के लिये तैयार हुआ। उस को १०० साथी मिल गये। प्रशान्त महासागर के किनारे किनारे चलने पर भूख और बीमारी ने उन्हें बहुत तंग किया। पर वे बढ़ते ही रहे। एक बार इण्डियन लोगों ने उसे ऐसा घायल किया कि वह मरते मरते बचा। उसके साथी भी उसे छोड़ने लगे। अन्त में केवल १३ आदमी उसके साथ रह गये। इनको लेकर उसने पीरू देश में इन्का सम्राट के आलीशान महलों और मन्दिरों और अपार सम्पत्ति का पता लगाया। वह १३ आदमियों से देश नहीं जीत सकता था। पर वह सोना, चाँदी और दूसरी बहुमूल्य चीजों के नमूने लेकर स्पेन को लौटा। वहाँ स्पेन के राजा ने उसका सब हाल सुन कर उसे काफी सेना दी। अपने नये साथियों को लेकर पिज़ारो फिर पीरू देश में

पहुँचा। भोले भाले इन्का (राजा) ने गोरे लोगों का बड़ा स्वागत किया। निहत्थे लोगों के साथ वह पिजारो से मिलने गया। यहाँ धोखे बाजी से वह कैद कर लिया गया। पिजारो ने एक शर्त पर राजा को छोड़ देने की बात कही। वह यह थी कि जिस कमरे में राजा कैद था वह सोने से भर दिया जावे। सोने के बर्तन और जेवर देश भर से राजा पर न्योछावर होने लगे। इस तरह कई करोड़ रुपये का सोना पिजारो को मिल गया। फिर भी उसने अपने बचने की कुछ भी परवाह न करके इन्का (राजा) को मरवा डाला। राजा के मरने पर उसके सरदारों के पैर उखड़ गये। इस प्रकार प्राचीन इन्का साम्राज्य नष्ट हो गया और वहाँ की अपार सम्पत्ति स्पेन वालों के हाथ लगी। पिजारो के भाई ने कुछ स्पेनियार्ड और ४००० इण्डियन लोगों की सहायता से एमेजन नदी और ब्रेज़ील के कई भागों का पता लगाया।

इसके बाद योरूप के दूसरे देश भी नई दुनिया की खोज में आने लगे। इस तरह अन्वेषण का जो काम कोलम्बस ने शुरू किया उसको ५० वर्ष में ही स्पेन वासियों ने उन्नति के शिखर पर पहुँचा दिया। आगे चलकर स्पेन वाले दुनिया के दूसरे भागों का भी पता लगाने लगे।

किसान स्पेन देश के राष्ट्रीय जीवन के प्रधान स्तम्भ हैं। पर कृषकों का संगठन दोषपूर्ण होने से वहां के राजनैतिक और सामाजिक जीवन भी विक्षुब्ध रहते हैं। अतः स्पेन में जो समस्या १७६० में थी वही आज भी मौजूद है। स्पेन देश का क्षेत्रफल लगभग २ लाख वर्ग मील है। जनसंख्या २ करोड़

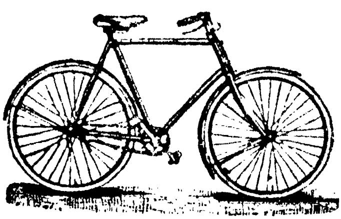
१० लाख है। इस देश का क्षेत्रफल हमारे संयुक्त प्रान्त से प्राय: दुगुना है लेकिन आबादी उसकी आधी भी नहीं है। इस प्रकार पश्चिमी योरूप भर में आयरलैंड को छोड़ कर स्पेन ही सब से कम बसा हुआ है। विश्व साम्राज्य की लिप्सा ने यहां की आबादी को बहुत कम कर दिया पर खेतिहरों पर जो अत्याचार होते रहे उनसे यह राज्य ऊँचा न उठ सका। उत्तरी पश्चिमी स्पेन काफी घना बसा है। एब्रो और गाडलक्विर की घाटियों में भी घनी आबादी है। पर बहुत बड़े भाग में आबादी अत्यन्त कम है। बहुत से खेती के योग्य प्रदेश बिना जोते बोये पड़े रहते हैं। जिन भागों में खेती होती है उनकी उपज योरूप के दूसरे उन्नत देशों से बहुत कम है। देश के बहुत से भाग इतने कम उपजाऊ हैं कि केवल कृषि विशेषज्ञ ही उनसे लाभ उठा सकते हैं। बहुत से भाग इतने खुश्क हैं कि सिंचाई में कठिनाई पड़ती है। स्पेन की ज़मीन का बँटवारा विचित्र है। कुछ खेत छोटे और लम्बी अवधि के हैं। कुछ बहुत बड़े और छोटी अवधि के हैं। प्राय: अधिक उपजाऊ भागों में खेत छोटे छोटे हैं। कम उपजाऊ भागों में खेत बहुत बड़े हैं। केवल ग्रेनाडा का प्रदेश ऐसा है जो अधिक उपजाऊ होने पर भी बड़े बड़े खेतों में बँटा है।

वेलेंशिया, मुर्शिया, और अरगांव के उपजाऊ भागों में छोटे खेत में भी एक पूरे कुटुम्ब की गुज़र हो सकती है। उत्तरी तट पर भी कुछ अच्छा हाल है पर लिओन और अस्टूरियास के उत्तरी-पश्चिमी भाग तथा समूचे गोलिशिया में फ्यूरोस या बड़ी जमींदारी की प्रथा है। यहां किसान को बड़ी मेहनत

करनी पड़ती है। उसे अपने परिश्रम का उचित फल नहीं मिलता है। बड़े बड़े जमींदारों की मोटी आमदनी एकदम निश्चित है। अतः वे ज़मीन सुधारने का कुछ भी प्रयत्न नहीं करते हैं। उल्टे वे बड़े शहरों में मुफ्त मिली हुई आमदनी को भोग विलास में बर्बाद करते हैं। यहीं ज़मींदार का अधिकार एकदम निरंकुश है। वह जिस तरह से चाहता है उस तरह से जमीन को उठाता है। गेलिशिया में किसानों को कुछ अधिकार मिल गये हैं पर गरीबी के कारण वे उनको जमींदारों के मुकाबिले में काम में नहीं ला सकते हैं। किसान के ऊपर ज़मींदार का कर्ज सदा लदा रहता है। इससे वह चूं नहीं कर सकता है। इसी से किसान गेलिशिया से निकल कर अक्सर दूसरे प्रान्तों या दक्षिणी अमेरिका को जाया करते हैं। जिन भागों में खेत बड़े बड़े (लैटी फन्डिया) हैं वहां भी हालत अच्छी नहीं है। मुट्ठी भर लोगों के हाथ में अधिकतर जमीन हैं। शेष निकम्मी जमीन छोटे छोटे टुकड़ों में बंटी हुई है। यहां अधिकतर किसानों की आमदनी १ पेसीटा (पांच आने) रोज़ से भी कम है। कुछ ढाई तीन रुपये रोज़ कमाते हैं। बड़े ज़मींदार के लिये यहां कोई ऐसा बन्धन नहीं है कि वह अपनी ज़मीन से फसल उगाया ही करे। अतः वह कुछ ज़मीन लगान पर उठा देता है। बहुत सी ज़मीन शिकार के लिये अथवा लड़ाने वाले सांड़ (भैंसा) को पालने के लिये बिना जुती छोड़ देता है। वह जब चाहता है बाज़ार से २०० मज़दूर बुला लेता है। जब चाहता है तब वह उन्हें तंग करने के लिये निकाल देता है। यहां ऐसी दशा में किसानों को

जमींदारों पर सदा निर्भर रहना पड़ता है। वे अक्सर साल में ६ महीने बेकार रहते हैं। उनकी स्त्री और बच्चों को भी मजदूरी करनी पड़ती है। अतः अनिवार्य शिक्षा होने पर भी यहाँ के स्कूलों में सब बच्चे नहीं पढ़ पाते हैं। यहां के किसानों को न पेट भर खाना मिलता है न उनके बदन पर ठीक ठीक कपड़े ही होते हैं। फिर उनकी शिक्षा का पूछना ही क्या है। न्याय व्यवस्था के नाम पर इन गरीबों को सदियों तक आर्थिक गुलाम रहना पड़ा। जब चुनाव का समय आता है तब सभी तरह का जोर डाल कर इनका मत (वोट) खींच लिया जाता है।

किसानों पर प्रभुत्व जमाने के लिये यहां के पादरियों ने उधार देने वाले पंचायती बैंक खोल रक्खे हैं। प्रचार के लिये वे ७५ पत्रिकायें और दैनिक पत्र चलाते हैं। पर बड़ी बड़ी जागीरों को बिना तोड़े हुए और पुरानी म्यूनिसिपैलिटियों की तरह जमीन का सामान बटवारा किये बिना स्पेन के किसानों की दशा सुधरती दिखाई नही देती है।



स्पेन के जिप्सी लोग

जैसे भारतवर्ष में नट बञ्जारे हैं वैसे ही स्पेन में जिप्सी लोग बहुतायत से हैं। विशेषतः दक्षिणी स्पेन में लगभग हर एक नगर में जिप्सी लोगों के मुहल्ले हैं। सेवीला और ग्रेनाडा में तो यह मोहल्ले इतने बड़े बड़े हैं कि उनको जिप्सी नगर ही कहते हैं।

यह गांव या नगर के भाग नट व बंजारों के डेरों की भांति नहीं हैं। अधिकतर जिप्सी लोग एक नगर में बस जाते हैं और फिर वहीं जीवन व्यतीत करते हैं। इसी कारण जिप्सी नगर में छोटे छोटे सुन्दर मकान बने हुए मिलते हैं। यह घर बहुत नीचे होते हैं और बहुत साफ सुथरे रक्खे जाते हैं पर इनके सामने की सड़कें ऐसी साफ नहीं रहतीं।

जिप्सी नगर में बच्चे बहुत दिखाई देते हैं। जिप्सी लोग बच्चों की बहुतायत के लिये प्रसिद्ध ही हैं। जवान लड़कियां बड़े चाव से शृङ्गार करती हैं और रंग बिरंगे कपड़े पहिनती हैं। इन्हें अपने बालों में फूल लगाने से बड़ा प्रेम है और रंग रूप में वे भारतीय भले घर की लड़कियों से बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। यह अधिकतर छोटी ही होती हैं। इनके बाल भी काले ही होते हैं।

अधिकतर गाना बजाना ही इनका पेशा है। हम लोगों ने ग्रेनाडा के जिप्सी नगर में इनका नृत्य होता है। यह लोग बड़े वेग से झूम झूम कर और मटक मटक कर नाचती हैं और

इनके साथी मर्द और बड़ी औरतें ताली पीटती और बाजे बजाती हैं। या तो लकड़ी के दो टुकड़े आपस में बजाती हैं या मञ्जीरे के भांति का बाजा इत्यादि बजाती हैं।

इन लोगों में अकसर मेले भी होते हैं और बैलगाड़ी में बैठ कर जवान लड़कियां व बड़ी औरतें मेला देखने जाती हैं। आदमी लोग पैदल साथ साथ चलते हैं। रास्ते में यह लोग गाते बजाते चलते हैं। बैलगाड़ी में खूब बेल और फूल लगा कर उसे सजाते हैं। जिप्सी लोग सुन्दरता से प्रेम करते हैं।

यह लोग बड़े चालाक और कभी कभी दुष्ट भी होते हैं। जिप्सी लोगों के विषय में पाठकों ने स्वयं अनेकों ऐसी कहानियां पढ़ी होंगी। इसी कारण जिप्सी नगर में रात को ज़रा सँभल के ही जाना चाहिए और अकेले तो कभी न जाना चाहिये। यदि किसी अच्छे गाइड के साथ जावे तो सब से अच्छा है।

इनके नाच के अनेकों नाम हैं और सब नाच एक दूसरे से भिन्न हाते हैं। किन्तु सभी नाच बड़ी मस्ती से नाचे जाते हैं। जिस तरह साँप बीन सुन कर झूमने लगता है वही हाल मनुष्य का भी जिप्सी गान सुन कर और नृत्य देख कर होता है।

स्पेन निवासियों का रहन सहन

स्पेन गरीब देश है। यहां बड़े शहर इने गिने ही हैं। देश पहाड़ी है। छोटे नगर अनेकों हैं। रहने वाले बड़ी सादगी से रहते हैं।

स्पेन-दर्शन

अधिकतर देश में स्पैनिश भाषा बोली जाती है यद्यपि बोली जगह जगह विभिन्न है। विदेशियों को अँग्रेजी या फ्रांसीसी बोलने वाले अनेकों लोग मिल जाते हैं और स्पेन में घूमने में कोई कठिनाई नहीं होती। यहां के अधिकतर लोग बहुत कम पढ़े हुए होते हैं। इसी कारण पश्चिमी देशों में पाश्चात्य सभ्यता की उन्नति में स्पेन ने सब से कम सहायता की है। पर स्पेन-निवासी विदेशियों के साथ बहुत भला बर्ताव करते हैं।

स्पेन का प्रायः हर एक निवासी अपने आप को शरीफ आदमी या जेन्टिलमैन समझता है। स्पैनिश भाषा में इसे कैबेलेअरो कहते हैं। और यदि आप किसी से कैबेलेअरो कह कर बात करें तो आपके साथ बहुत अच्छा व्यवहार होगा। गरीब आदमी पर सदैव नम्र बात का बड़ा असर पड़ता है चाहे वह कहीं और किसी भी देश का क्यों न हो।

बड़े शहरों के अलावा गांवों में छोटे छोटे घर हैं। ये लोग अपने गाय, और गधों को लेकर रहते हैं और खेती करते हैं। स्पेन में नारंगी बहुत होती है। रेल पर जाते हुए हम लोगों ने ग्रेनाडा से वारसीलोना तक बहुत दूर तक किनारे किनारे नारंगी के खेत देखे जो बड़े सुंदर प्रतीत होते थे।

स्पेन में चांदी का सिक्का पेसेटा चलता है। इससे छोटा सिक्का सान्तिमोंस है जो पेसेटा का होता है। ५ और १० सान्तिमोस के सिक्के ताँबे के होते हैं। चाँदी के सिक्के $\frac{1}{2}$, १ २ और ५ पेसेटा के चलते हैं। एक पेसेटा कीमत में ५-६ आने के बराबर होता है।

खाने के समय यहाँ अनोखे ही हैं। कलेवा प्रातःकाल १०-११ बजे होता है। फिर दोपहर का खाना २ बजे, चाय या काफी (योरुप में अधिकतर काफी और कोको पी जाती हैं और इंगलैंड में चाय) ५-६ बजे, फिर रात का खाना ९-१० बजे होता है। स्पेन के लोग चावल खाते हैं और खाने में मसाला भी डालते हैं। गोश्त आदि सब कुछ खाया जाता है। स्पेन में सभी चीजें सस्ती हैं और खाना भी सस्ता होता है। इसी प्रकार होटल में कमरा भी सस्ते में मिल जाता है। पर बड़े नगरों में सब होटल बहुत साफ सुथरे होते हैं और बड़े आरामदह होते हैं। स्पेन के लोग खूब खाना खाते हैं।

स्पेन में पोस्ट कार्ड और चिट्ठी दोनों डाक से भेजे जा सकते हैं।

इस देश में औरतों को अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा कम स्वतंत्रता है।

रेस्टारेन्ट या काफे (जहां चाय या काफी पी जाती है) में औरतें बहुत कम दिखाई देती हैं। मैंने अपने तमाम सफर में किसी स्पेनी औरत को सिगरेट पीते नहीं देखा। घर में चाहे पीती हों, सो मालूम नहीं।

रात को नाचघर, सिनेमा, थियेटर या नाइट क्लब में आदमी और औरतें दोनों ही जाते हैं। स्पेन बड़ा अच्छा देश है। मैं फिर स्पेन जाकर घुमना चाहता हूँ।

स्पेन में आने जाने के साधन

पश्चिमी सभ्यता तो प्रसिद्ध ही है। और स्पेन में इस अनोखी सभ्यता के सर्व प्रकार के गमनागमन के साधन प्रयोग किये जाते हैं।

सब से पहिले तो रेल ही आयेगी क्योंकि रेलें संसार के हर एक देश में लम्बी यात्राओं के वास्ते बना दी गई हैं।



मेड्रिड में एक सड़क का दृश्य

स्पेन में रेलें अच्छी भी हैं और बुरी भी। दूर जाने वाली एक्सप्रेस गाड़ियां बहुत आराम की होती हैं। सीटें (बैठने की जगह) काफी चौड़ी होती हैं। रात को बैठने या लेटने के लिये उनको आगे खींच कर अधिक चौड़ा कर सकते हैं। तथापि यह गाड़ियां अन्य योरुपीय देशों की रेलों की अपेक्षा

धीरे चलती हैं। कारण यही है कि स्पेन पहाड़ी देश है और रेलों को बहुत चढ़ना उतरना पड़ता है। पैसेन्जर गाड़ियां तो बहुत धीरे चलती हैं। इन गाड़ियों का तीसरा दरजा हमारी गाड़ियों के तीसरे दर्जे से अधिक भिन्न नहीं होता क्योंकि स्पेन भी भारतवर्ष के समान एक बड़ा गरीब देश है। तथापि यह मानना पड़ेगा कि यहां की रेलों के बनाने में बड़ी मेहनत तथा बड़े कष्ट का सामना करना पड़ा होगा।

रेलों के अतिरिक्त मोटर और बसें भी सब शहरों में चलती हैं। पर यह सब अधिकतर फ्रांस की बनी हुई होती हैं। स्पेन में मोटर चलाने के लिये बड़ी अच्छी सड़कें हैं और पहाड़ों तथा घाटियों में होकर जाते समय बड़े सुंदर दृश्य देख पड़ते हैं।

मादरी (मेड्रिड) में ज़मीन के अन्दर भी रेल चलती है जिससे नगर के एक स्थान से दूसरे स्थान को जल्दी से जा सकते हैं। परन्तु लन्दन व पेरिस की अपेक्षा मादरी की यह रेल बड़ी गंदी और धीमी हैं। ताज़ी हवा के आने जाने का भली भांति प्रबन्ध नहीं हैं और बहुधा इन रेलों में तथा नीचे स्टेशनों पर बड़ी बदबू रहती है। पर इस रेल पर एक ही दाम का टिकट है आप चाहे कहीं से कहीं क्यों न जायें।

यद्यपि मोटरें तथा बसें और ट्राम्वे काफी संख्या में हैं फिर भी स्पेन में मनुष्यों के आने जाने के लिये घोड़ागाड़ी बहुत प्रयोग होती है। यह बिल्कुल हमारी फिटन व लैंडो की सी होती हैं जिनमें एक या दे घोड़े जोते जाते हैं। बहुत से होटल वाले स्टेशनों पर अपनी लारियां भेजते हैं जिससे उनके

गाइड आने वाले लोगों को मुफ्त ही होटल ले आयें। बाद को इसका दाम बिल में जोड़ दिया जाता है।

इनके अतिरिक्त स्पेन में गधों से बहुत काम लिया जाता है। माल ढोने के लिये गधे या गधेगाड़ी का बहुत प्रयोग होता है और आने जाने के लिये गरीब लोग सवारी का भी काम गधे से निकाल लेते हैं। अनेकों पाठकों ने स्टीवेन्सन की पुस्तक पढ़ी होगी और सरवैन्टीज की प्रसिद्ध गाथा डौन क्रिहोटी के सरदार का नौकर सैन्को पांजा सरदार के साथ गधे पर ही सवार हो कर चलता था।

आने जाने के बारे में योरुप क्या दुनिया भर में कठिनाई नहीं होती क्योंकि घूमने फिरने वाले लोगों की सुविधा के लिये अनेकों कम्पनियां खुल गई हैं जैसे लन्दन की टामस कुक एन्ड सन्स है। इनके दफ्तर सब नगरों में जहाँ लोगों के जाने की आशा हो सकती है, खुले हुए हैं और वह थोड़ी सी फ़ीस लेकर ही हर बात का प्रबन्ध कर देते हैं।

हम लोगों ने स्पेन में कभी एक भी वायुयान नहीं देखा, किन्तु वहाँ थोड़े से वायुयान अवश्य हैं और मदारी से बारसीलोना वायुयान से आने जाने की सर्विस भी है जो सप्ताह में दो या तीन चक्कर करती है।

स्पेन की गृहनिर्माणकला और चित्रकारी

स्पेन के तीन ओर सागर और एक ओर ऊंचा पहाड़ है। स्पेन का इतिहास संसार में अनोखा है और स्पेन के निवासी अपने मन के विचित्र ही लोग हैं। इन कारणों से इस देश

की कारीगरी तथा कला अन्य योरोपीय देशों से बिल्कुल नहीं



कार्डोवा में मूर लोगों की अद्भुत कारीगरी

मिलती जुलती। इसी भांति स्पेन का साहित्य भी अपने ढङ्ग का अकेला ही है।

कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि योरुप के अन्य सब देशों की कला मिलकर स्पेन में प्रकट हुई है। इसके अतिरिक्त स्पेन में अरबों की कला प्रणाली प्रारम्भ से श्रेष्ठ दशा तक उपस्थित है। फिर मूरों के आक्रमण हुए और हर एक ओर मूरों के लक्षण दिखाई देने लगे। तत्पश्चात ईसाइयों की विजय हुई और इनका प्रभाव सर्वोच्च हुआ। पर इन सब का यह फल हुआ कि स्पेन की इमारतों, चित्रों या शिल्प-कला में कोई उन्नति नहीं। जितने बाहरी असर पड़े वे बड़े विकट और अचानक थे और एक दूसरे से बहुत भिन्न थे।

कार्डोवा की मूरों के समय की अनोखी मसजिद देखने योग्य है। लगभग १००० खम्भे हैं और सब संगमरमर के बने हैं। एक डोम (गुम्बद) बिलकुल चौकोर संगमरमर में गोल खोखला कर के बनाया गया था। ग्रेनाडा में मूरों के महल में अनेकों जालियाँ ऐसी सुन्दर हैं जो भारत वर्ष के मुग़ल बादशाहों के किलों की याद दिलाती हैं।

फिर ईसाइयों के आने पर मसजिदों से गिरजे बनाये गये। यह गिरजे भी अत्यन्त सुन्दर हैं। सेवीजा (सेविला) का गिरजा संसार भर में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि इसको शायद डच कारीगरों ने बनाया था।

चित्रकारी में वेलाअक्वेज़ बहुत प्रसिद्ध है। इसने प्रकृति के अनेकों अति सुन्दर चित्र बनाए। मुरिल्लो जो उसके पीछे पैदा हुआ था, कैथलिक राजाओं के समय का है। उसको

अपना गुण प्रकट करने के लिये धार्मिक विषयों का आसरा लेना पड़ता था क्योंकि दरबार में और चित्रों को कोई पूछता भी न था। तथापि मुरिल्लो के चित्र योरुप भर में प्रसिद्ध



कार्दोबा का पुल और मस्जिद

हैं और लगभग हर एक राजधानी में मौजूद भी हैं। स्पेन में उसके सब से सुन्दर चित्र मादरी (मेड्रिड) और सेवीजा (सेविला) में हैं।

स्पेन के चार प्रसिद्ध नगर

ग्रेनाडा स्पेन का सब से सुन्दर नगर है। मूरों के समय में यह उनकी राजधानी था और अब भी ग्रेनाडा सूबे का प्रथम नगर है। यह दो पर्वतों की चोटियों के बीच में बसा है।

इसके एक ओर मूरों के समय का बड़ा महल है और दूसरी ओर जहां पहले मूरों के अमीर-उमरा और सरदार लोग रहते थे वहां अब जिप्सी लोगों का निवास स्थान है। यहां अब इतने अधिक जिप्सी रहते हैं कि यह भाग जिप्सी नगर के नाम से ही पुकारा जाता है।

ग्रेनाडा समुद्र की सतह से २१९५ फुट ऊपर है और यहां की जनसंख्या लगभग ९० हजार है। यहां एक विश्वविद्यालय भी है। स्पेन के ईसाई राजाओं ने ग्रेनाडा के मनुष्यों से बहुत बुरा व्यवहार किया क्योंकि यह मूरों का प्रमुख्य नगर था। अत: उनके राज्य में यहां कोई उन्नति नहीं हुई। किंतु आधुनिक काल में अधिकाधिक लोग ग्रेनाडा की सुंदरता को देखने जाते हैं और इस कारण नगर की उन्नति आरम्भ हुई और इसके अतिरिक्त यहां बीटरूट का चुकन्दर से शक्कर बनाने के कारखाने खुलने के कारण भी बहुत उन्नति हुई।

ग्रेनाडा में अलहाम्ब्रा से सियरा नवादा की बरफ से ढकी चोटियों का दृश्य अत्यन्त सुंदर दिखाई देता है। यह पहाड़ योरुप के सब से ऊंचे पहाड़ों में से है।

जब हमलोग अलहाम्ब्रा देखने गये तो गाइड (पथ-प्रदर्शक) ने हमें वह कमरे दिखाये जहां रह कर वाशिंग्टन अर्बिङ्ग ने संसार प्रसिद्ध पुस्तक अलहाम्ब्रा की कहानियाँ लिखी थी। यह पुस्तक अत्यन्त रोचक है और मूरों के समय की अनेकों सुंदर कहानियों का इसमें वर्णन है।

मूरों के महल में उस समय की गृहनिर्माणकला के बड़े अनोखे नमूने देखने को मिलते। किन्तु खेद का विषय है कि

स्पेननिवासियों ने आपस में लड़ झगड़ कर इस साल यहाँ के अनेकों सुंदर घरों को नष्ट कर दिया है। दीवारों पर बड़ा सुंदर महीन महीन काम और पत्थरों की जालियां दिल्ली और आगरे के किलों की याद दिलाती हैं। छतों में चित्रकारी और अनेकों खम्भे बड़े सुंदर प्रतीत होते हैं। यहां एक गोल घर का कमरा था जिसमें अगर एक कोने में मुँह करके चुपके से कोई बात कहें और सामने के कोने में मुँह किये हुये खड़ा हो तो वह भली भांति सुन सकता है। इसमें अनेकों सहन और कमरे हैं और यह एक से एक अनोखे हैं। सिंहों का सहन जिसके बीच में एक सुंदर फव्वारा है। उसके चारों ओर १२ एक बराबर शेर बनाए हुए हैं। एक दरवाजे में बजाय महराब के एक संगमरमर का पत्थर रक्खा था और उसी के ऊपर छत थी। यह संगमरमर बोझ से गोल हो गया था मगर फिर भी टूटा नहीं था। गाइड ने कहा कि साहब जैसे लकड़ी फूल कर गोल हो जाती है वैसे ही यह भी गोल हो गया है!

इसके अतिरिक्त अलहाम्ब्रा में मूर राजाओं का गरमी का महल जनरालीफ भी अत्यन्त रमणीक है क्योंकि यहां बड़े सुंदर बाग-बगीचे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह नाम अरबी जन्नत-अल-आरिफ़ से बिगड़ कर बना है। यहां फव्वारों की बड़ी बहुतायत है और सुन्दर रास्ते और सीढ़ियों ने महल को बड़ा आनन्ददायक बना दिया है। एक बरामदे से नीचे नगर का दृश्य बड़ा सुंदर दिखाई देता है। हमने महल में रानियों का स्नानगृह भी देखा। यह चमकते हुए संगमरमर का बना था। गाइड ने बताया कि रानियाँ खुशबूदार पानी से

नहाया करती थीं और स्नान के उपरान्त उनके नहाए हुए जल को महल के छोटे से बड़े तक सब नौकर लोग बड़े चाव से पीते थे।

योरुप में सभी बड़े नगरों में गिरजे हैं। ग्रेनाडा का गिरजा बहुत पुराना है। सन् १५२३ ई० में इसका बनना आरम्भ हुआ था और वह बड़े चाव से बनवाया गया है। यहां अनेकों सुंदर मूर्तियां और चित्र देखने को मिलते हैं। रंगीन शीशे की खिड़कियां, बड़े बड़े सुंदर संगमरमर के खम्भे अत्यन्त शोभावर्धक हैं।

इसके अलावा ग्रेनाडा में लोगों की जीवनप्रणाली स्पेन के नगरों की सी ही है। ग्रेनाडा बहुत सुंदर है।

सेविजा (सेविला)

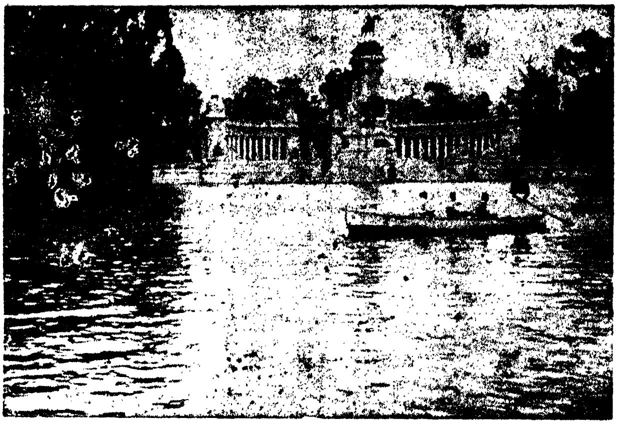
सेविजा या सेविला स्पेन का प्रसिद्ध नगर है। अंगरेज़ी जानने वाले लगभग हर मनुष्य ने स्माइलिङ्ग सेविला अवश्य कहीं न कहीं पढ़ा होगा। सेविजा का नगर सुंदर इमारतों, सुंदर वाटिकाओं और सुंदर सड़कों से भरा है। सेविजा में भी एक जिप्सी भाग है। यहां यहूदी लोग बहुतायत से हैं। यहां ग्वाडलकीवर नदी भी है। इसी नगर से संसार प्रसिद्ध नाविक कोलम्बस अमरीका की खोज को निकला था। इसकी यादगार में एक सुन्दर स्तम्भ बनवाया गया है और उसकी पहली यात्रा का वर्ष सन् १४९२ बड़े बड़े अक्षरों में लिखा है।

सेविजा में गिरजा है वह बड़ा सुन्दर और बहुत बड़ा है और दूर दूर तक प्रसिद्ध है। किन्तु शक है कि स्पेन के

देश दर्शन

आधुनिक बिद्रोह में गिरजे पर गोला बारूद की वर्षा की गई। सुना जाता है कि तमाम गिरजा नष्ट हो गया है।

कुछ ही वर्ष हुए सेविजा में एक प्रर्दशिनी हुई थी और इसके हेतु अनेकों देशों ने अपनी अपनी गृहनिर्माण कला का नमूना दिखाने के लिये बड़ी सुंदर सुंदर इमारतें बनवाई थीं।

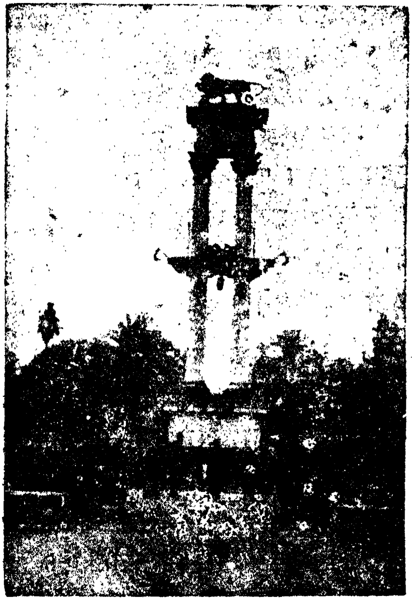


मेड्रिड शहर के रेटरो पार्क की बनावटी झील

स्पेन की इमारत एक अर्धचन्द्राकार रुप में है और इसके हर एक सूबे के इतिहास की विशेष बातें उनकी ही चित्रकारी के ढङ्ग पर हैं। इसी प्रकार सेविजा में अमरीका, पीरू, बोलविया पुर्चगाल आदि अन्यान्य देशों को इमारतें हैं।

सेविजा में भी एक विश्वविद्यालय है। सेविजा, अन्डालूशिया की राजधानी है। नगर में अनेकों पार्क हैं और यहाँ फोटोग्राफर मिट्टी के घोड़े और भैंसे लिये रहते हैं। जो लोग

घूमने जाते हैं उनकी फोटो नकली भैंसे की लड़ाई करते हुये खींचते हैं। यह लोग फोटो बहुत जल्द तैयार कर देते हैं। जब तक पार्क में घूमें फिरें यह डेवेलप और प्रिन्ट कर के तैयार कर देते हैं।



सेविजा में कोलंबस

सेविजा में भैंसे की लड़ाई का एक घेरा भी है। यहाँ हम लोगों ने बड़े दिन में भैंसे की लड़ाई देखी थी। सेविजा में कोई खाली स्थान नहीं दिखाई देता है। हर एक जगह चारों ओर खजूर लगा कर बीच में नारंगी के पेड़ लगाये हुये हैं जो बड़े सुन्दर लगते हैं।

मादरो या मेड्रिड

मादरी या मेड्रिड स्पेन की राजधानी है। योरुप में अनेकों बहुत बड़े बड़े नगर हैं। और इन सब में अनेकों बातें एक सी हैं। अच्छी सड़कें, बड़ी इमारतें, बड़ी दुकानें, अनेकों मोटरें, बसें और जमीन के अन्दर चलने वाली रेलें, गिरजे, राजमहल अजायबघर इत्यादि। मादरी में भी यह सब हैं। किन्तु यदि मनुष्य लन्दन और पेरिस देखने के बाद मैड्रिड जाय तो यह नगर छोटा सा मालूम होता है।

अँग्रेजी बोलने वाले कई मनुष्य मिल जाते हैं और स्पेनी भाषा न जानने से कोई विशेष कठिनाई नहीं होती है।

मादरी में एलरिटाइरो एक बहुत सुन्दर पार्क है। यह स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने अपनी अँग्रेजी रानी अभागी मेरी के लिये बनवाया था, किन्तु अभाग्यवश वे दोनों इसमें जो छोटा सा मकान है वहां एक दिन भी साथ न रह सके। पार्क के बीच में एक सुन्दर तालाब है जिसमें नावें चलती हैं और अनेकों मूर्तियां, फव्वारे इत्यादि हैं। यहां एक नकली पहाड़ भी बनवाया है। पार्क में बड़े पेड़ और सड़कें कई हैं। किन्तु वाटिकारुप छोटे पौधे और फूल आदि कम हैं। तथापि पार्क में घूमने फिरने और बैठने से तबीयत बड़ी प्रसन्न होती है।

मादरी में कई देखने योग्य स्थान है। प्रादो अजायबघर बहुत बड़ा और सुन्दर है। यहां न केवल स्पेन के नामी चित्र-कारों के ही चित्र हैं बल्कि फ्रांस, इटली, जर्मनी आदि के

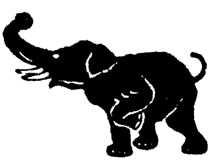
चित्रकारों के भी अनेकों सुंदर चित्र हैं। स्पेन के चित्रकारों में गोया, मुरिल्लो वेलाजक्वेज के चित्र बड़े सुंदर हैं। मादरी का राजमहल बहुत बड़ा और शाही है। तथापि यह योरुप की अन्य राजधानियों के महलों की बराबरी नहीं कर सकता। राजा और रानी के रहन सहन के सब कमरे अत्यन्त सुंदरता से सजाये गये हैं। अब तो स्पेन वालों ने अपने राजा को देश निकाला ही दे रक्खा है और एलफांसो बादशाह स्पेन में नहीं जा सकता।

मादरी में दो तीन बहुत बड़े चौराहे हैं। प्यूर्टा सोल और काले दी एल्काला में गाड़ी, मोटर, बस आदि की बहुत भीड़ रहती है। कालेदी एल्काला में मादरी का नया डाकखाना है जिसकी इमारत बड़ी शानदार है।

मादरी में कई सिनेमा और थियेटर आदि भी हैं। यहां रेस्टारेन्ट भी बहुत है जहाँ खाना बड़ी बहुतायत से खिलाया जाता है। स्पेन में लोग खूब खाना खाते हैं।

मादरी में पुलिस बन्दूक लिये रहती है। और हर शहर चौराहे पर सिपाही मय बन्दूक के तैनात रहते हैं।

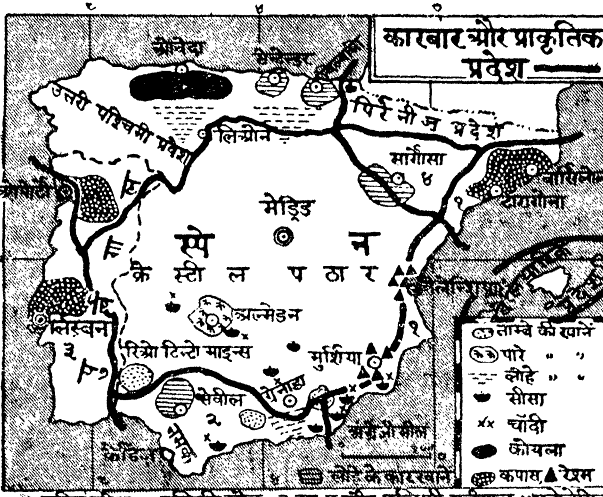
किंतु अन्य योरुपीय देशों के विपरीत स्पेन में औरतों को कम स्वतन्त्रता है और रेस्टारेन्ट आदि में बहुत कम औरतें नजर आती हैं।



देश दर्शन

बार्सिलोना

बार्सिलोना स्पेन का एक बड़ा प्रसिद्ध नगर है और सब से बड़ा बन्दरगाह है। यह केटेलोनिया की राजधानी है और यहां भी एक विश्वविद्यालय है। स्पेन में व्यापार और कारबार



१ तटीय प्रदेश, २ दक्षिणी स्पेन, ३ मध्य और दक्षिणी पुर्तगाल, ४ एब्रो बेसिन

कारबार

की सब से बड़ी मन्डी बार्सिलोना में ही है। यहां पर रुई के काम की कई मिल, मशीनों की फैक्टरी और बिजली के कारखाने इत्यादि हैं।

यहां की आब हवा भी बहुत अच्छी है। गरमी कभी

तीव्र नहीं होती और जाड़े में बरफ शायद ही कभी दिखलाई देती हो। जन संख्या लगभग ७ लाख है।

कारबार की जगह होने के कारण यहां मजदूर लोग बहुत रहते हैं और इसी वजह से यहां पर अनेकों दंगे होते रहते हैं। किन्तु बार्सिलोना बड़ा अच्छा नगर है।

बन्दरगाह बड़ा सुन्दर और अच्छा है। किनारे पर कोलम्बस की यादगार में एक स्तम्भ बना है। यह २०० फुट ऊँचा है और १८८२—८८ में बनवाया गया था। नीचे के हिस्से के चारों ओर ८ शेर धातु के बने हुए हैं जो बड़े सुन्दर लगते हैं। स्तम्भ लोहे का है और उनके ऊपर एक बड़ी सुनहरी गेंद के ऊपर कोलम्बस की मूर्ति है जो २६ फुट ऊँची है। स्तम्भ के भीतर बिजली का लिफ्ट सुनहरी गेंद तक चढ़ता है।

बार्सिलोना में कई चौड़ी चौड़ी सड़कें हैं और ट्रांबे खूब चलती हैं। यहाँ भी देखने योग्य गिरजाघर हैं। बार्सिलोना में एक बड़ा सुंदर पार्क है जिसमें जानवरों का अजायबघर है। बीच में एक छोटी सी झील भी है। इसके पास एक पहाड़ी है जो अन्दर से खोखली है। इसके अन्दर एक घूमती हुई २ फुट चौड़ी पेटी सी है जिस पर एक ओरसे खड़े हो जाने से अपने आप दूसरी ओर पहुँच जाते हैं। बाग में अनेकों सुंदर वृक्ष हैं और फूल भी बहुतायत से लगाए हुए हैं।

यहाँ भी भैंसे की लड़ाई का एक घेरा है और गरमी के मौसम में हर इतवार को यहां लड़ाई होती है।

बार्सिलोना में अनेकों अच्छे अच्छे होटल हैं। रेल के दो-तीन स्टेशन हैं। कुछ बातों में तो यह नगर मादरी से बड़ा

मालूम होता है। माद्री से बहुत दूर होने के कारण यहां का शासन माद्री से अलग सा ही है। जो कोई स्पेन जाय उसे बार्सिलोना अवश्य जाना चाहिए।

स्पेन की राजधानियाँ

स्पेन के बीच मेंसीटा का पठार देश के बहुत बड़े भाग को घेरे हुए है। यहीं ऊँचे मैदानों के बीच में पहाड़ उठे हुए हैं। पहले यह मालूम पड़ता है कि इस देश में कहीं भी शहर बस सकते हैं। पर बात ऐसी नहीं है। पहाड़ में दर्रों और नदकन्दराओं के सिरों पर नगर बसाये गए हैं। यहाँ से नीचे मैदानों की ओर रास्ते आते हैं। मेसीटा का ऊँचा भीतरी भाग (चाहे मैदान हो चाहे सियरा या पहाड़) पुरानी कड़ी चट्टानों का बना है। पर पहाड़ कुछ नये हैं। उत्तर में केन्टेब्रियन और ऊँचे पिरेनीज़ में दर्रे कम हैं। जिस तरह गंगा की घाटी दक्खिन के पठार को हिमालय पर्वत से अलग करती है या इटली की पो-घाटी अल्पस पर्वत को एपीनाइन से अलग करती है इसी तरह एब्रो नदी की घाटी मेसीटा के आइबेरियन पहाड़ को पिरेनीज़ से अलग करती है। (आइबेरिया शब्द शायद इब्रो से ही बिगड़ कर बना है) आइबेरिया पहाड़ वास्तव में मेसीटा के पठार का उत्तरी सिरा है। फिर भी यह काफ़ी ऊँची दीवार की तरह एब्रो घाटी के दक्षिण-पश्चिम में फैला हुआ है। तीन हज़ार फुट ऊँचे मेसीटा के ऊपर ५००० फुट और ऊँचा केन्टेब्रियन पहाड़ उठा हुआ है। बीच वाले

पठार की उंचाई उत्तर से दक्षिण की ओर और पूर्व से पश्चिम की ओर कम होती जाती है। आइबेरियन पर्वत या मेसीटा के उत्तरी-पश्चिमी भाग में सब से अधिक चौड़ा दर्रा ऊपरी एब्रो नदी और डौरो की दो सहायक नदियों (अर्लाजोन और पिसुएर्गा) के बीच में स्थित है। अर्लाजोन नदी ही सर्वोत्तम मार्ग बनाती है। इसी के किनारे बुर्गास शहर स्थित है।

केन्टेब्रियन पर्वत और पिरेनीज़ के दक्षिण में पठार एक समान ऊँचा नहीं है। सियरा गाडरामा पर्वत एक ऊँची दीवार की तरह खड़ा हुआ है। इसके दक्षिण की ओर टेगस नदी मेसीटा प्रदेश में सब से अधिक गहरी घाटी बनाती है। टेगस नदी अटलांटिक महासागर में गिरती है। जालोन नदी इस प्रदेश से निकल कर एब्रो नदी से मिलने के लिये दूसरी ओर को बहती है। इस जालोन नदी के बायें किनारे पर मान्टी मोन्केयो नगर स्थित है।

२८०० फुट ऊँचा रिनोसा दर्रा सेन्टेन्डर के पहाड़ी प्रान्त को भीतरी पठार से मिलाता है। ५० मील पश्चिम की ओर पजारेस दर्रा ओवेदो प्रान्त को पठार से मिलाता है। मूर लोगों ने जब देश छीन लिया तब गोथिक योद्धाओं ने भाग कर इसी प्रदेश में कोवा डोंगा की गुफा में शरण ली। कोवा डोंगा दक्षिण की ओर ७ मील की दूरी पर ७००० फुट ऊँचे पहाड़ से घिरा है। १२ मील पूर्व और पश्चिम की ओर पहाड़ लगभग ५००० फुट ऊँचे हैं। उत्तर की ओर १२ मील की दूरी पर सपाट और वीरान समुद्र-तट है। अधिक सहायता मिलने पर यहाँ से ८ मील उत्तर पश्चिम की ओर खुले भाग में काङ्गास

डी ओनिस नगर में राजधानी बनाई गई। सौ वर्ष में ईसाईयों की दशा और भी सुधर गई। अतः गोथ लोग पठार को मिलाने वाले बड़े बड़े दर्रों से दूर भागने के बदले उनके समीप आने लगे। अल्फांसो द्वितीय के समय (७९२--८४२ ई०) में राजधानी हट कर ओवेदे नगर काङ्गास डी ओनिस से ३५ मील की दूरी पर पजारेस दर्रे के पास है। उत्तरी बीहड़ तट के गिजान और एविलीस बन्दरगाह भी अधिक दूर नहीं है। ११२८ ई० में मोंडेगी नदी के किनारे समुद्र से २५ मील की दूरी पर बसा हुआ कोइम्ब्रा नगर पुर्चगाल की राजधानी बना। तेरहवीं सदी से लिस्बन नगर राजधानी हुआ। यह नगर समुद्र से केवल ९ मील दूर है और बहुत ही अच्छा बन्दरगाह है पजारेस दर्रे से दक्षिण की ओर ३० मील की दूरी पर खुले (२६०० फुट ऊँचे) पठार के ऊपर लिओन नगर स्थित है। यहाँ से उत्तरी पश्चिमी भाग में पहुँचना सुगम है। अतः रोमन लोगों ने यहाँ अपना एक फौजी अड्डा बनाया। ९२४ में ओवेदो के बाद लिओन फिर राजधानी बना। अस्टूरियास का राजा अब लिओन का राजा कहलाने लगा।

रेनोसा दर्रे से १६ मील दक्षिण आग्विलार नगर की स्थिति बड़ी अच्छी है। इसी से यह नगर बेरन के रहने का स्थान निश्चित किया गया। आग्विलार नगर उस भाग के सामने पड़ता है जो पहाड़ की तलहटी में पश्चिम से रेनोसा दर्रे और बास्क तट की ओर जाता है। यह नगर डौरो की सहायक पिसुएर्गा नदी के बायें किनारे पर स्थित है। इसका

निकास एब्रो नदी के निकास के पास ही है आगिवलार के आगे यह नदी दक्षिण की ओर बहती है। इस नदी की घाटी में होकर आजकल एक रेलवे लाइन जाती है। आगे चल कर इस रेलवे में बिलबाओ और सैन्टेन्डर जाने वाली लाइनें मिल गई हैं। पिसुएर्गा नदी में मिलने वाली अर्लाज़ोन नदी के किनारे लेर्मा शहर की स्थिति भी बड़े मार्के की है। गाडरामा दर्रे से आने वाली प्रधान सड़क यहाँ (लेर्मा) होकर उत्तर की ओर बुर्गास को जाती है।

आगिवलार और लेर्मा के बीच में हेरेरा और कास्ट्रोगेरिज़ नगर हैं। आगिवलार—हेरेरा—कास्ट्रोगेरिज़—लेर्मा नगरों को जोड़ने वाली रेखा की लम्बाई ६५ मील है।

वेलास्को और स्प्नेग, मेन्के नगरों को मिलाने वाली लाइन लगभग ४० मील लम्बी है। लाक्वेरवा, मेडीना डी पोमार, फ्रायास और हारो प्रधान स्थान हैं।

आगिवलार से क्वेरवा ३५ मील दूर है। फ्रायास और हारो के बीच में पांकोर्वो आखात स्थित है। पेरिस से मेड्रिड आने वाली रेलवे यहीं होकर आती है।

पांकोर्वो दर्रे से ऊपरी डौरो को जाने वाले मार्ग की चौकसी करने के लिये ब्रिवियेस्का नगर की स्थिति बड़ी अच्छी है। मैदान के सिरे पर अर्लाज़ोन नदी के किनारे पर प्रधान और सीधे मार्गों की देख भाल के लिये ८८४ ई० में बुर्गास का क़िला बना। जब केस्टील और लिओन के राज्य मिल गये तो संयुक्त राज्य की राजधानी बुर्गास में ही बनी।

पिरेनीज़ पर्वत की प्रधान श्रेणी और दक्षिणी निचली श्रेणी के बीच में रोनसेलवेलीस दर्रे के पास पम्पलोना नगर नवारे प्रान्त की राजधानी बना। अधिक पूर्व की ओर आर्गन के शासकों ने जाका नगर में अपनी राजधानी बनाई यह नगर पिरेनीज़ के मध्यवर्ती लेसोम्पोट दर्रे के एकदम पास है। इस दर्रे की ऊँचाई केवल ५४०० फुट है।

१११८ ई० में सारगोसा नगर आर्गन राज्य की राजधानी बना। यह नगर टेगस और एब्रो घाटियों को मिलाने वाले भाग का प्रधान केन्द्र है। केस्टील के राजा ने मूर लोगों की हद के पास टोलेडो नगर में राजधानी बनाई। टेगस – जालोन के आखात में टोलेडो को स्थिति पुर्चगाल और आर्गन को मिलाने के लिये बड़ी अच्छी है इसके पास ही सियरा को पार करने वाले दर्रे हैं। इस प्रकार टोलेडो नगर से स्पेन के कई भागों को मार्ग गये हैं। टोलेडो बहुत समय तक राजधानी रहा। पर टोलेडो के दक्षिण में रेगिस्तानी प्रदेश है जिसे मूर लोग अलमन्शा और स्पेन वाले ला मांचा पुकारते थे। यह प्रदेश मार्गों के लिये अच्छा नहीं है। यहाँ होकर रसद और फौज आसानी से नहीं भेजी जा सकती है। १४७७ ई० में केस्टील और आर्गन के संयुक्त राज्यों की राजधानी टोलेडो ही बना। मूर लोगों के चले जाने के बाद १५६० ई० में मेड्रिड शहर देश के मध्य में स्थित होने के कारण राजधानी बना।

समुद्र से दूर २३०० फुट की ऊँचाई पर बसा हुआ मेड्रिड

नगर बढ़ी हुई समुद्री शक्ति के अनुकूल न था। पर आगे चल कर स्पेन के वैदेशिक उपनिवेश छिन गये। इससे मेड्रिड के राजधानी बने रहने में कोई विशेष बाधा न पड़ी।

पर यदि स्पेन अपनी भौगोलिक स्थिति से पूरा लाभ उठाता तो अंडालूशिया के सेविला नगर में राजधानी बनाना अधिक उपयुक्त होता। स्पेन के दक्षिण में अफ्रीका के किनारे कुछ ही दूर चलने पर जहाज ट्रेड हवाओं के सहारे से अमरीका पहुँच जाते थे और पछुआ हवाओं के जोर से वे अमरीका से स्पेन में लगे रहते थे। अंडालूशिया का उपजाऊ प्रान्त खेतो के लिये बड़ा अच्छा है। मूर लोग बड़े खेतिहर और कारीगर थे। स्पेन वालों ने उन्हें देश से निकाल दिया फिर उनकी जगह लेने वाला वहाँ कोई नहीं रहा। यहूदी लोग स्पेन का व्यापार बढ़ा रहे थे। वे भी स्पेन से निकाल दिये गये। इससे स्पेन की खेती कारीगरी और व्यापार को बड़ा धक्का पहुँचा। इसी से वर्तमान राजधानी (मेड्रिड) में स्पेन का व्यापार, कारबार और समुद्री प्रभुत्व न बढ़ सका।

स्पेन में भैंसे की लड़ाई

भैंसे की लड़ाई स्पेन का राष्ट्रीय खेल है। पहिले तो सब बड़े बड़े सरदार भैंसों से लड़ते थे किन्तु बहुत दिनों से यह खेल केवल पेशेवाले लड़ाकों के लिये छोड़ दिया गया है। आजकल तो औरतें भी यह पेशा करती हैं और खूब रुपया कमाती हैं।

देश दर्शन

भैंसे की लड़ाई के लिये स्पेन और मेक्सिको के लगभग हर एक बड़े नगर में एक घेरा बना है जिसे बुलरिंग कहते हैं। एक गोल मैदान के चारों ओर दीवार बनाई जाती है और फिर गोल कतारें देखने वालों के बैठने के लिये एक के पीछे एक बड़ी दूर तक बनी होती हैं। बड़े बड़े घेरों में लगभग १०,००० तक मनुष्य बैठ कर लड़ाई देख सकते हैं।



मेक्सिको में सांड की लड़ाई

भैंसे की लड़ाई दो तरह होती है या तो पैदल, या घोड़े पर चढ़ कर। लड़ाई के तीन भाग होते हैं। पहिले केवल एक लाल कपड़ा ले कर खिलाड़ी अकेला भैंसे का सामना करता है और जब वह भयानक रूप से हमला करता है तो लड़ाका फुर्ती से कूद फांद कर उसके रास्ते से निकल जाता है। इस प्रकार

वह भैंसे को थकाता है फिर लड़ाका के तीन साथी दो दो करके ६ नुकीले तीर भैंसे की गर्दन में भांक देते हैं। यह बड़ा कठिन काम है और इसका सफलतापूर्वक करने के लिये बड़ी फुर्ती और आँख व निशाने की बड़ी सच्चाई की आवश्यकता होती है। तीसरे भाग में एक बड़ा जानकार खिलाड़ी लाल कपड़ा और तलवार ले कर आता है। थोड़ी देर कपड़े से ही भैंसे को चौंकाता है और तीरों से वैसे ही उसका काफी खून निकल जाता है। फिर लड़ाका सभापति की आज्ञा ले कर भैंसे को मारने पर तत्पर होता है। सामने खड़े होकर उसकी ओर तलवार से निशाना लेता है और जैसे ही भैंसा सामने भूत की भांति भागता हुआ आता है वह किनारे होकर उसकी गर्दन में (होकर उसके दिल में) तलवार भोंक देता है। निशाना लगभग हमेशा ठीक लगता है और भैंसा फौरन् गिर गर मर जाता है। ३ घोड़ों की टोली आकर उसकी लाश को घसीट ले जाती है। और देखने वाली जनता खिलाड़ी की तारीफ के लिये खूब ताली पीटती और चिल्लाती है। एक रोज में लगभग ६ या ८ लड़ाइयाँ होती हैं। खिलाड़ियों को बहुत वेतन मिलता है और कोई कोई तो साल में ही लखपती हो जाते हैं।

स्पेन में भैंसे की लड़ाई लगभग हर एक बड़े नगर में अप्रैल से नवम्बर तक हर इतवार और छुट्टी के रोज़ होती है।

इन लड़ाइयों के वास्ते भैंसे ख़ास तौर से पाले और तयार किये जाते हैं और बड़े बड़े अमीर जो अपने फ़ार्मों (बड़े खेतों) पर भैंसों को पालते हैं उनके भैंसे उन्हीं के नाम से मशहूर होते हैं। लड़ाई से ४-६ घंटे पहिले भैंसों को एक

अँधेरी कोठरी में बन्द करके खूब भड़काया जाता है जिससे वह बहुत क्रोधित और भयावने होकर लड़ने को निकलें।

अधिकतर लड़ाइयों में लड़ाका मनुष्य को कोई चोट नहीं आती है। कभी कभी भैंसा खिलाड़ी को अपने सींगों पर उछाल कर फेंक देता है और तब उसको चोट काफी आ जाती है। कभी कभी तो वह बेहोश और घायल हो जाता है और उसके साथी दौड़ कर उसे बचा लेते हैं, परन्तु कभी कभी खिलाड़ी ऐसे जोर से गिरता है कि तुरन्त मर जाता है। पर उससे भैंसे का कोई लाभ नहीं होता क्योंकि दूसरा लड़ाका आकर उसका काम तमाम करता है।

यद्यपि भैंसे की लड़ाई बड़ी कठोर मालूम होती है पर देखने से ज्ञात होता है कि खिलाड़ी को कितनी तरकीब, फुर्ती, चालाकी और हिम्मत की आवश्यकता होती है।

अबकी वर्ष तो स्पेन में विद्रोह ही हो रहा है और बजाय भैंसों के मनुष्य एक दूसरे से ही लड़ कर मार काट कर रहे हैं। परन्तु निस्सन्देह सुलह और शान्ति हो जाने पर भैंसों की लड़ाई फिर आरम्भ हो जावेगी। क्योंकि स्पेन के लोग भैंसे की लड़ाई को बहुत पसन्द करते हैं।

जिब्राल्टर

जिब्राल्टर को अँग्रेजी में मेडिटरेनियन सागर की चाबी कहते हैं। यह बन्दरगाह ब्रिटिश साम्राज्य में विशेषतः प्रमुख

स्थान है। जनसंख्या सब सिपाही, जहाजी तथा हवाई फौज को मिला कर लगभग ३० हजार है।

बड़े जहाज करीब आध मील दूर पर ही रुक जाते हैं और वहाँ से किनारे जाने के लिये छोटी छोटी मशीन वाली नावों का प्रयोग करते हैं। जिब्राल्टर की खाड़ी में बहुत मछलियाँ हैं और जब हमारा जहाज रुका तो तमाम जहाज के नौकरों ने काँटा पानी में डाला। एक आदमी ने तो लगभग आधे घण्टे में २२ मछली पकड़ीं। यह लाल सी मछलियाँ पानी में बड़ी सुन्दर लगती थीं।

जिब्राल्टर की चट्टान लगभग ढाई मील लम्बी है और आधा या तीन चौथाई मील चौड़ी है। सब से ऊँची चोटी पानी की सतह से केवल १३९६ फुट ऊँची है। यहाँ बड़ी बड़ी तोपें लगी हुई हैं।

जिब्राल्टर की चट्टान, स्पेन से एक १॥। मील लम्बे और आधे मोल चौड़े रेतीले मैदान से जुड़ी है।

जिब्राल्टर के नगर में पतली पतली अंधेरी सी सड़कें हैं। पर यद्यपि अधिकतर जनता स्पेनी पुरखाओं की है, तथापि यहूदी व अनेकों देशों से आये हुये लोग भी बसे हैं। यह शहर अँग्रेजी सा प्रतीत होता है। सड़कें स्पेन की अपेक्षा बहुत साफ़ हैं और स्पेन के विपरीत यहाँ भिखारियों का नाम तक नहीं है।

जिब्राल्टर के बन्दरगाह में अंग्रेजी लड़ाई के बड़े बड़े जहाज सदैव रहते हैं। जब हम लोग लौट रहे थे तो जिब्राल्टर पर पहुँचने पर हमने एक अँग्रेजी लड़ाई के जहाज पर नाविकों

की परेड देखी। वे लोग अपने सफेद कपड़ों में दूर से बड़े सुन्दर लग रहे थे।

जब से इटली और एबीसिनिया की लड़ाई हुई है और मेडीटरेनियन में इटली की धाक बढ़ती प्रतीत हुई तब से अँगरेजों ने जिब्राल्टर की फ़ौजी ताक़त और अधिक बढ़ा दी है।

जिब्राल्टर में स्पेन का सिक्का 'पेसेटा' दूकानों में तो चलता है पर डाकखाने व अन्य सरकारी दफ्तरों में केवल अँगरेजी सिक्का ही लिया जाता है। जिब्राल्टर पहुँचने पर कुली आदि बहुत दाम माँगते हैं। पर इनसे दाम तय कर लेना चाहिये क्योंकि होटल पहुँचने पर फिर यह बहुत झगड़ा करते हैं।

विदेशियों को यहाँ रहने के लिये पुलिस के दफ्तर से आज्ञा लेनी पड़ती है। और फिर रात में रहने के लिये अलग से आज्ञा लेनी पड़ती है। क़िले व फ़ौज के रहन सहन की जगहों की फोटो लेना व तस्वीर बनाना बिल्कुल मना है।

स्पेन की एक कहानी

एक पहाड़ी के निकट "सोमन्टी" नामक एक चरागाह था! वह हरी घास से आच्छादित था, और सुन्दर क़ालीन के समान प्रतीत होता था। उसी के पास होकर एक रेल की लाइन जाती थी, और उसके कोने में एक तार का खम्भा था। ऐसे

स्पेन-दर्शन

रमणीक स्थान पर "रोसा" और "पाइनिन" अपनी गाय "ला कोरदेरा" के साथ चराया करते थे। दोनों बच्चे संसार की अद्भुत वस्तुओं और अनुभवों से परिचित न थे। उनमें चेतना-शक्ति अधिक जागृत न हो सकी थी। अतः "पाइनिन" ने अपनी छोटी सी बुद्धि लगाने पर यही निश्चय किया कि यह अविचल खम्भा केवल सूखा पेड़ है, और उसमें लगे हुये छोटे छोटे शीशे के प्याले उस पेड़ के अद्भुत फल हैं। इन बातों से उसे पेड़ के ऊपर चढ़ने में बहुत सहायता मिली। मगर वह उन प्यालों तक न पहुँच सका और नीचे उतर गया।

"रोसा" कुछ और ही विचारों में थी। उसे इसी बात में सन्तोष था जब कि वह केवल मधुर संगीत सुनने में व्यस्त रहती, उसे उन बातों से कोई सम्बन्ध न था कि ये बातें क्या हैं और कौन क्या कह रहा है।

इन लोगों की गाय "ला कोरदेरा" को संसार का कुछ अनुभव था। वह इस खम्भे को बिल्कुल ही व्यर्थ वस्तु समझती थी। केवल इसके कि वह कभी कभी उसके खुजाने के काम आता था। वह बहुत शान्त प्रिय थी। और चरागाह में अधिकतर मनन करके अपना मस्तिष्क उन्नत करने का प्रयत्न करती। वह दोनों बच्चों के खेल में भी सम्मिलित होती। किन्तु अपना समय कभी व्यर्थ न खोती थी।

एक दिन पहिली बार वह रेल देख कर बहुत घबराई और डर गई। जल्दी वह एक ईंट की दीवार पार करके दूसरे चौपायों में जा मिली। कितने ही दिनों तक वह बहुत डरी रही और बार बार इंजन का भयानक दृश्य उसके सामने आता।

धीरे धीरे उसे ज्ञात होने लगा कि रेल हानि नहीं पहुँचावेगी। वह सिर नीचा करके रेल की लाइन से दूर घास चरती रहती। इसके बाद वह रेल को दृष्टि गड़ा कर देखती। उसका भय बहुत कम हो गया। अन्त में तो वह रेल के आने जाने पर ध्यान भी न देती थी और उसकी ओर देखती भी न थी।

"रोसा" और "पाइनिन" ने अपनी बुद्धि लगाने पर यही निश्चय किया कि वह एक लोहे का साँप था, और अपने ऊपर विचित्र मनुष्यों को ले जा रहा था। इसी प्रकार दिन व्यतीत होने लगे। बेचारे दोनों बच्चे सुबह से शाम और शाम से सुबह की बाट जोहा करते।

एक दिन अन्धेरी रात में दोनों बच्चे अपनी गाय के साथ बैठे थे। पक्षीगण बसेरा लेने चले गये थे। चारों ओर शान्ति थी केवल कभी कभी गाय के गले में बंधी घंटी बज उठती थी। आस्मान में दो एक तारे इधर उधर चमक रहे थे। "रोसा" और उसके भाई "पाइनिन" में बहुत प्रेम था और उनकी गाय भी उस प्रेम को पाती थी। कुछ ही दिन व्यतीत हुये थे जब कि "एमन्ट डी चिन्टा" बच्चों के पिता ने उस चारगाह को मोल लिया था। और उनकी गाय "ला कोरदेरा" बड़े सुख चैन से उसमें क्रीड़ा करती थी, और घास खाती थी। दुर्भिक्ष के समय में दोनों बच्चे गाय को सड़क के किनारे चराया करते, और मन में डरा करते कि कहीं कोई आपत्ति न आवे।

गाय का एक छोटा बच्चा था जो बहुत खिलाड़ी था और

बार बार अपनी माँ के पास दौड़ आता था। "रोसा" और "पाइनिन" के पिता बड़े चक्कर में थे कि कितना दूध दुह लेना चाहिये और कितना उस बच्चे के लिये छोड़ना चाहिये। ऐसे समय पर दोनों बच्चे गाय की ही तरफ़दारी करते थे। और उसके बच्चे को चुपके से छोड़ देते थे। उनके पिता आर्थिक संकट में थे, उनका एक मात्र धन वही गाय थी। उनकी स्त्री मरते समय कह गई थी कि यही गाय उनके कुटुम्ब का सहारा होगी। मगर बच्चों के पिता ने उस गाय को बेचना ही उचित समझा।

जिस समय बच्चों की माँ मृत्यु शय्या पर थी, उसने गाय को उस मार्मिक दृष्टि से देखा जैसे कह रही हो कि मेरी मृत्यु के बाद तुम्हीं बच्चों की माँ होगी। और उस स्वार्थ रहित प्रेम को बच्चों को देना जो पिता का हृदय समझने में असमर्थ है।

"एन्टन डी चिन्टा" ने गाय बेचने की बात बच्चों से न कही, और एक दिन सबेरे गाय को लेकर वह बेचने चला गया। किन्तु गाय का दाम उसने प्रेम वश बहुत लगाया और वह बेंची न जा सकी। और शाम को धूल धूसरित वे घर लौट आये। मगर बच्चों से गाय के विषय में कुछ न कहा। बच्चे आगामी आशंका से डर गए। उनका अनुमान ठीक निकला, कि गाय बेंची जावेगी। उनके पिता को लगान चुकाना था।

शनिवार के दिन "पाइनिन" और उसके पिता गाय को लेकर बाजार गये। उसको एक कसाई खरीदेगा जान कर बच्चे बहुत दुःखी हुये मगर गाय को अपने भविष्य में आने वाली आपत्ति का पता न था।

कुछ दिनों के पश्चात वह क़साई रुपया लेकर आया। बच्चों के पिता ने गाय के अनेक गुणगान किये मगर क़साई मुस्करा रहा था कि ये साहब इतने बखान कर रहे हैं, गाय तो शीघ्र ही दुनिया से जाने वाली है। दोनों बच्चे दूर से खड़े अपने शत्रु कसाई को देख रहे थे। और यह सोचकर दुखी हो रहे थे कि उनकी प्यारी गाय उनसे छूट जावेगी।

क़साई गाय को ले चला। दोनों बच्चों ने दुख भरे हृदय से उसे अन्तिम बिदाई दी। और जब वह आँखों से ओझल हो गई तो उसे बारबार पुकारने लगे और बहुत रोये। दूसरे दिन वे लोग चरागाह में गये। भयानक सुनसान था। रेल और तार के खम्भे को देख कर उन्हें बड़ा क्रोध आया कि ये ही उनकी साथी, उनकी मातृतुल्य प्यारी गाय को उनसे बिलग करने वाले हैं।

स्पेन के बच्चे

वेटिस्टी और उसकी बहन पेपीता स्पेन में रहते हैं। यहां आकाश नीला है और साल भर कम पानी बरसता है।

आप लोग अवश्य ऐसे शहर में रहना पसन्द करते होंगे जहाँ पर सूर्य सदा चमकता रहता है। यदि आप धनवान हैं और एक सुन्दर मकान में रह सकते हैं और बहुत से नौकर भी हैं तब तो आप को धूप वाले बड़े शहर में आनन्द आवेगा। किंतु वेटिस्टी और पेपीता ग़रीब हैं। वे एक छोटे से खेत में

मेहनत करते हैं क्योंकि उनको उसी से रोटी मिलती है। इतनी कड़ी धूप में यह काम बहुत कठिन है। दिन इतना गर्म होता है कि स्पेन के लोग उसे आग के घंटे कहते हैं। जो मनुष्य काफी धनवान हैं वे लोग दोपहर को खूब सोते हैं। इसे सीस्ता कहते हैं। किंतु बेटिस्टी और पेपीता के लिये सीस्ता नहीं है क्योंकि कुछ न कुछ ऐसा काम बाकी रहता है जिसे उन्हें दिन भर करना ही पड़ता है।

बेटिस्टी की मातृभूमि

चलो हम बेटिस्टी के खेत को चलें जहाँ वह रहता है। यह चौड़ी लाल मिट्टी के ऊपर स्थित है इसके ऊपर कई स्वच्छ नहरें हैं जो अपना बहुमूल्य जल बहुत से खेतों को पहुँचाती है। यहां जाड़े में थोड़ी वर्षा होती है और गर्मी में बिल्कुल नहीं। प्रत्येक दिन सूर्य सब चीजों को सुखा देता है। सड़कों को सुखा कर वह लाल धूल बना देता है। यदि नहर न हों तो सम्पूर्ण रेगिस्तान हो जावे और सब मर जावें।

गर्मी के दिनों में पानी अन्दर आने के लिये फाटक खोल दिये जाते हैं और बाद में फिर बन्द कर देते हैं। पानी की देख रेख के लिये एक कर्मचारी नियुक्त किया जाता है। इनका काम केवल नहर देखने का है। जो किसान कायदे के अनुसार फाटक नहीं खोलता और मनमाना फाटक खोल देता है उसे सजा दी जाती है कभी कभी क्रोधित किसान उसका सिर फोड़ देते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस जगह सींचे हुए भाग

को सब कोई ह्यूर्टा या फुलवारी कहते हैं। जहां तक नजर जाती है वहां तक फल के वृक्ष, शहतूत के पेड़ ईख और हरी हरी तरकारियां दिखाई पड़ती हैं। ऐसा मालूम पड़ता है मानो लाल पृथ्वी के ऊपर हरी चादर बिछी हुई हो।

बेटिस्टो का घर

बेटिस्टी और पेपीता एक खेत के घर में अपनी मां के साथ रहते हैं और स्पेन में इसे वारका कहते हैं। इसकी दीवारें मिट्टी की होती हैं। इनकी छत घास की बनी होती है। कच्ची दीवार में खिड़कियां भी लगी होती हैं। इनके शीशे नीले रङ्ग के होते हैं। बेटिस्टी और उसके पिता घर को सफेद रङ्ग देते हैं जिससे घर अधिक गर्म नहीं होता बारका सामने फूल की पंक्तियां होती हैं। इसके पीछे अंगूर की लम्बी लताएँ हैं। उसी लता के नीचे पेपीता और उसकी मां कपड़ा तयार करती हैं क्योंकि यह सब कपड़े उनके परिवार के काम आते हैं। इसी घर में गाय, बैल, मुर्गी, सुअर और गधे रहते हैं। दिन भर नाली में शिकार करने के बाद बतखें भी रात को इसी घर में रहने के लिये आती हैं। घर में एक तरफ पानी के भरे घड़े रक्खे रहते हैं।

फसल की कटाई में जब पतझड़ का समय आता है सब खुशी मनाते हैं। पीले पीले नाशपाती के पेड़ फलों के भार से दब जाते हैं। लाल लाल आङ्गूर हरे पत्तों से छिप जाते हैं

अंगूर की लता काले अँगूर से भरी हुई रहती है। गेहूँ काटने में बहुत से लोग लग जाते हैं। थोड़े समय में सब जगह गेहूँ कटे हुए दिखाई पड़ते हैं।

जैतून तोड़ कर लोग मशीन से तेल निकालते हैं। अंगूर लम्बे बालक लम्बे मिट्टी के बरतन में रखते जाते हैं। उसमें थोड़ा चूना और शहद छोड़ दिया जाता है और कुछ रोज के बाद शराब निकाल कर बन्द पीपे या बरतन में रक्खी जाती है।

जब सब काम पूर्ण हो जाता है तब बहुत से किसान शहर में खाने और शराब पीने के लिये जाते हैं। वे साड़ों की लड़ाई देखने बड़े शौक से जाते हैं। यह लड़ाई वहां अक्सर होती है।

स्पेन के राजनैतिक दल

१४ अप्रैल १९३१ ई० को सम्राट अलफ़ान्सो को स्पेन के सिंहासन से उतार दिया गया और वहाँ प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई। २८ जून १९३१ ई० को सारे देश में पार्लियामेन्ट के सदस्यों का निर्वाचन हुआ और उसने वहाँ के भावी प्रजातन्त्र शासन के लिये विधान बनाया। १० दिसम्बर १९३१ को अलकला जमोरा वहाँ का पहला राष्ट्रपति चुना गया। ९ अक्तूबर १९३३ ई० में पार्लियामेन्ट विसर्जित हुई और नवीन पार्लियामेन्ट का निर्वाचन हुआ जिसमें दायें पक्ष का बहुमत रहा। दायें और मध्यपक्षों ने मिल कर मन्त्रिमण्डल बनाया।

७ जनवरी १९३६ को यह सभा भी विसर्जित हुई और १३ फर्वरी १९३६ को नया निर्वाचन हुआ जिसमें बायें पक्ष का (गरम दल) बहुमत रहा और उसी पक्ष के दलों ने नया मन्त्रिमण्डल बनाया। फिर यह गृह युद्ध आरम्भ हुआ। इसमें योरुप की महाशक्तियों ने अपने अपने सैनिक बल की परीक्षा की। अन्त में जर्मनी और इटली की सहायता से जनरल फ्रैंको यहाँ का तानाशाह बना। वही अब तक इस देश पर शासन करता चला आ रहा है।

दल तथा उनके उद्देश्य

बायां पक्ष

साम्यवादी (सोशलिस्ट) दल—यह दल प्रजातन्त्र राज्य को वहाँ के मानव-समाज के अधीन कर देना चाहता है। और बड़े बड़े ज़मीन्दारों और जागीरदारों की ज़मीन जब्त कर लेना चाहता।

नेता गण—जूलियन बैस्टीरो, फ्रांसिस्को लार्गो काबल्लेरो, इण्डालेसियो प्रीटो, फर्नाण्डो डीलास रियोस, रिमिगिओ कापेल्ज़ो जिमेंनेज़ असुआ और मैनुएल कार्डीरो।

यूनियन रिपब्लिका इज़क्क डी रिपब्लिकाना—यह चाहता है कि जब्त की हुई ज़मीन छोटे छोटे किसानों में फ़िर बांट दी जाय और इसी प्रकार अन्य बड़े परिवर्तन किये जांय।

नेतागण—मैनुएल अज़ाना, जोसे जिराल, सैंचेज़ अल्बनीज़।

कम्यूनिस्ट दल—देश के व्यवसायों को बहुत प्रोत्साहन दिया जाय और अलगट किसानों के स्थान में कृषि कार्य्य समस्त राष्ट्र के अधीन हो जाय।

स्पेन-दर्शन

मध्य पक्ष

रैडिकल दल—यह दल चाहता है कि सुधार किये जांय और शान्ति के साथ क़ानून बना कर प्रजातन्त्र का संगठन किया जाय।

नेतागण—अलीजैंड्रो लेरू गार्शिया, डीगो मार्टी नेज़, रैफ़ेल ग्वेरा डेल रियो।

प्राग्रेसिस्ट दल—इस दल के विचार साधारण प्रजातन्त्र के पक्ष में है।

नेतागण—निसेटो अलकेला जमोरा, जुआं कैष्ट्रिल्लो कारलास ब्लांको, सिरिलो डेल रिओ

दाहिना पक्ष

एग्रेरियन दल—यह दल ज़मीन्दारों के अधिकार की दृढ़ता, और गिरजाघरों का हित चाहता है।

नेता—जोस वेलैस्को, ऐएटोनियो रोयो विल्लानोवा और एबिल्लियो कैल्ड रान।

ट्रेडीशनिस्ट दल—यह दल कार्लिस्ट वंश के राजाओं को फिर स्पेन के सिहांसन पर बैठालने के पक्ष में है और अलफ़ान्सो के वंश का विरोधी है। इस दल के सदस्य कट्टर कैथलिक हैं।

नेता—काएडे डे रोडेज़ो।

साम्राज्यवादी दल—यह दल प्रजातन्त्र वाद का विरोधी है।

देश दर्शन

पादरियों का प्रभुत्व

पादरियों के प्रभुत्व ने स्पेन को चौपट कर दिया। वे नये विचारों के सदा से विरोधी रहे। अज्ञानी भिक्षु पादरी लकीर के फकीर बने रहे। वे नई पुस्तकों को कुफ्र समझ कर जलाना पसन्द करते थे। स्पेन के लोग स्वभाव से ही धर्म भीरु हैं। पहले वे समझते थे कि भिक्षु पादरियों की निन्दा करने से धर्म की निन्दा होगी। अतः बहुत समय तक निन्दित निश्चिन्त मज़े उड़ाते रहे। वे शिक्षा के विरोधी थे। फेरेर नामी एक स्पेन वासी देशभक्त ने अपनी सारी सम्पत्ति स्पेन के मजदूरों की शिक्षा में लगा दी। उसने १०० स्कूल मजदूरों के बालकों के लिये खुलवा दिये। उनके लिये उसने सस्ती उपयोगी पुस्तकें छपवाईं। उसके प्रचार से पादरियों का प्रभुत्व घटने लगा। यह बात उन्हें कैसे सहन हो सकती थी? १९०९ ई० में देश भक्त निरपराध फेरेर को झूठे (बनावटी) विद्रोह में फँसाया गया। उसे फाँसी का दण्ड मिला। इससे सारे योरुप में हाहाकार मच गया। स्पेन के मजदूर लोग उस समय से पादरियों के और भी कट्टर दुश्मन हो गये।

१९२३ ई० तक स्पेन में पचास फी सदी बालक शिक्षा पाते थे। २५ फी सदी सरकारी स्कूलों में शिक्षा पाते थे। शेष २५ फी सदी को पादरी लोग अपनी शिक्षा देकर कट्टर बनाते थे। धीरे धीरे लोग पादरियों के फंदे से अलग होने लगे। जो पादरी वास्तव में धार्मिक हैं, ग़रीबी और ध्यान में जीवन बिताते हैं उनका इस समय भी आदर होता है। पर जो पादरी

धन इकट्ठा करते हैं और भोजन-वस्त्र बाँट कर अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं वे ख़तरे में हैं।

अविवाहित पादरी नौजवान स्त्रियों को दीक्षा के बहाने कमरों में रखते रहे। १९०९ ई० में बार्सिलोना में पादरियों के विरुद्ध दंगा हो गया। इसके बाद उनके विरुद्ध जो नियम बने वे बड़े लोक प्रिय हुए। पर राजा पादरियों का पक्षपाती था। मध्यम श्रेणी के बहुत से लोग भी पादरियों की ओर थे। पर इनमें बहुत से लोग उदासीन थे। नवारे, पिरेनीज़, केटेलोनिया और बास्क प्रान्तों में अधिकतर पादरियों का अड्डा है। बहुत से पादरी शासन की बागडोर अपने हाथों में रखना चाहते हैं। सरकारी दफ़्तरों, विश्वविद्यालयों, कचहरियों और धर्म-धन के विभाग में उनका बोल बाला रहा। अब वहाँ के भोले भाले किसान भी सतर्क हो गये। बिलबाओ, सारगोसा और बार्सिलोना के मज़दूर गिरजे और पादरियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते हैं। वर्तमान विद्रोह में इसी से पादरी लोग विद्रो-हियों का साथ दे रहे हैं। पर वर्तमान सरकार ने पादरियों के प्रभुत्व को कम करने पर भी न्याय का व्यवहार किया।

स्पेन की शिक्षा में प्रजातन्त्र के सराहनीय बीज मिलते हैं। यहाँ के विश्वविद्यालय के विद्यार्थी अपने प्रोफेसरों (आचार्यों) और प्रिन्सपलों (प्रधान आचार्यों) को चुना करते थे। पर पादरियों ने यह प्रथा ही पलट दी। प्रजातन्त्र और शिक्षा के विरुद्ध पादरियों के कारनामों को ध्यान में रख कर स्पेन का एक दल पादरियों को देश से निकाल देने पर उतारू था। प्रधान अज़ाना ने पादरियों को स्कूलों की शिक्षा से तो अलग

कर ही दिया पर देश से निकालने का प्रस्ताव नामंजूर कर दिया।

मूर लोगों के भागने के बाद पादरियों के प्रभुत्व के सम्बन्ध में स्पेन के एक कवि ने एक पद लिखा है। उसका भावार्थ यह है "मैं एक ऐसी जाति को देख रहा हूँ जिसने पराधीनता की जंजीर तोड़ डाली। फिर उसने कड़ियों को इकट्ठा कर और पिरोकर बड़े अभिमान से अपने गले में पहन लिया।"

विद्रोह के नेता और उनके उद्देश्य

जनरल मोला को छोड़ कर सभी विद्रोही नये नेता किसी न किसी समय सज़ा भोगे हुए हैं। जनरल मोला अन्तिम राजा के समय में जनरल डि सिगूरिडाड था। उसने प्रजातन्त्र वादी मेड्रिड के विद्यार्थियों को खूब दबाया था।

प्रायः सभी नये नेता अराजकता चाहते हैं। वे अन्तिम राजा के राज्य शासन और प्रजातन्त्र के अवसर पर राज कर्मचारी रह चुके हैं।

जनरल फ्रांको उपनिवेशों का सफल अफसर (अधिकारी) कहा जा सकता है। पर वह प्रत्येक राजसत्ता के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा करने के लिये प्रसिद्ध है।

जनरल फ्रांको स्पेन का सब से कम उम्र का सेनापति है। ३२ वर्ष की उम्र में वह फौज में भरती हुआ। इस समय उसकी उम्र केवल ४५ वर्ष की है। वह गेलिशिया का

रहने वाला है। उसके माता पिता मध्यम श्रेणी के थे। उसने फौजी नौकरी की। उसकी बहादुरी में कोई सन्देह नहीं है। मरक्को की लड़ाइयों में घोड़े पर सवार होकर उसने सेनानायक का काम किया। पर उसका भाग्य ऐसा प्रबल था कि वह कभी घायल भी न हुआ। वह अपनी सेना में बड़ा लोक प्रिय था। उसने मरक्को की फौज का अच्छा संगठन किया। प्राइमो डी रीवेरा के शासन काल में उसने फौजी अफसरों को तयार करने के लिये एक फौजी स्कूल की स्थापना की। जब देश में प्रजा-तन्त्र राष्ट्र स्थापित हो गया तो उसने सरकारी फौज में भरती होकर १९३४ में अस्टूरियास की खानों में काम करने वालों के विद्रोह को दबाया।

गत जनवरी के चुनाव के बाद वर्तमान सरकार ने उसे दण्ड के रूप में फौजी गवर्नर बना कर केनरी द्वीप में भेज दिया। केनरी से भाग कर फ्रांको मरक्को आया और वहाँ उसने वतमान विद्रोह का नेतृत्व ग्रहण किया।

जनरल क्विपो डि लानो से प्राइमो डि रीवेरा ने फौजी अधिकार छीन लिया था। प्रजातन्त्र के अवसर पर वह फिर फौजी अफसर हो गया। पर वह इस अधिकार को संभाल न सका और कुछ ही दिनों में वह अधिकार उससे छीन लिया गया। यदि दैवयोग से वर्तमान विद्रोही सफल हो जावे तो वह शायद दो महीने भी इस नये शासन में शान्ति से न रह सकेगा। इस समय भी वह नेशनल जंटा या राष्ट्रीय फौज (विद्रोही लोग अपनी सत्ता को इसी नाम से पुकारते हैं) के प्रधान केबानेलास की आज्ञा को नहीं मानता है।

डान जुआन (हुआन) मार्च इस विद्रोह का प्राण है। वह विद्रोहियों में सब से बड़ा पूञ्जीपति है। उसने अपनी सारी (विशाल) सम्पत्ति विद्रोह के लिये अर्पण कर दी है। वह पहले अंडालूशिया की जमीन का बड़ा दलाल था। फिर मरक्को में तम्बाकू बेचने का उसी को एकमात्र अधिकार मिल गया। बड़ी लड़ाई के अवसर पर उसने बहुत सा धन संचित कर लिया। कुछ घटनाओं के कारण वह प्रजातन्त्रवादी कोर्टेज (व्यवस्थापिका सभा) से अलग हो गया। इसके बाद वह बहुत दिनों तक कैद में रहा। इसलिये इस समय विद्रोहियों के दल में उसके शामिल होने में कोई आश्चर्य नहीं है।

जनरल मोला नवारे और उत्तरी भाग में राज-सत्ता को फिर से स्थापित करना चाहता है। केस्टील प्रान्त में जनरल काबानेला स्पेन के फेसिस्ट लोगों पर निर्भर है। इनफाण्टो डान जुआन के राजतन्त्रवादी भी इस आन्दोलन में शामिल हैं। वे अपने आप को छोड़ कर और किसी के राज्य से सन्तुष्ट नहीं हो सकते। दक्षिण में जनरल क्विपो डिलानो अपने को प्रजातन्त्रवादी घोषित करता है।

जनरल फ्रांको के राजनैतिक मत का पता बहुत कम लग सका है। इस प्रकार विद्रोहियों के मत में एकता नहीं है। इन्हें सफलता तभी मिल सकती है जब स्पेन के देशद्रोही और गुण्डे लोग वहां की आबादी को मार काट कर के आधा कर दें। पर जैसे ये विदेशी सहायता से शिखर पर पहुँचेंगे वैसे ही शक्ति को हाथ में रखने के लिये भी इन्हें विदेशी शक्तियों का मुंह ताकना पड़ेगा।

स्पेन-दर्शन

जनरल फ्रांको और उनके पक्षवाले केवल अपने बल से स्पेन की वर्तमान साम्यवादी प्रजातन्त्र सरकार को बदल नहीं सकते। उन्होंने इटली की सहायता लेने के लिये स्यूटा और बेलियारिक द्वीप देने का वचन दे दिया है। इसी प्रकार जर्मनी स्पैनिश मरक्को को लेने की इच्छा कर रहा है। इटली के फौजी हवाई जहाज विद्रोहियों को मदद देने के लिये गोला बारूद और मरक्को के मूर सिपाहियों को लड़ाई के मैदान में पहुँचाते हैं। जर्मनी भी छिपे छिपे लड़ाई का सामान विद्रोहियों को पहुँचा रहा है। स्पेन में जर्मनी के गुप्तचर भी तेजी से काम कर रहे हैं। रूसी लोग किसानों और मजदूरों को कुचलते हुए नहीं देख सकते हैं। इसलिये उनकी सरकार ने स्पेन की सहायता के लिये डेढ़ करोड़ रुपया मंजूर किया है। फ्रांस भी वर्तमान प्रजासत्तावादी स्पेन की सरकार से सहानुभूति रखता है। अगर स्पेन में इटली के मित्र फेसिस्ट विद्रोहियों का राज्य हो गया और मेजारिका द्वीप में इटली का अधिकार हो गया तो भूमध्य सागर इटली की एक झील सी बन जायगी। पिरेनीज़ के दक्षिण में फ्रांस का नया दुश्मन खड़ा हो जायगा। खतरे के समय अल्जीरिया और ट्यूनिस के लिये फ्रांस का रास्ता रुक जाने का डर है। भूमध्य सागर में होकर गुजरने वाले ब्रिटेन के जहाजों को भी बाधा पड़ सकती है। इस प्रकार इस समय स्पेन की घरेलू लड़ाई योरुप की वर्तमान स्थिति में दूसरे देशों पर गहरा असर डाल रही है।

स्पेन का पूर्वी भाग स्पेन की सरकार के हाथ में है। पश्चिमी भाग में विद्रोही प्रायः प्रबल हैं। सैन सेबेश्चियन, सारगोसा,

मालगा, ग्रेनाडा कभी विद्रोहियों और कभी सरकार के हाथ चले जाते हैं। इस घरेलू लड़ाई में दोनों दलों की ओर से भीषण अत्याचार हो रहे हैं। जनरल फ्रांको द्वारा बुलाये हुए मूरिश सिपाही जहाँ पहुँचते हैं वहाँ और भी पाशविक अत्याचार होते हैं। साम्यवादी सरकार उन व्यक्तियों को अलग कर देती है जिन पर शक होता है। पर विद्रोही लोग अधिकार जमा लेने पर क़त्लआम करते हैं। स्पेन के बाहर यदि कहीं फ्रांस और रूस ने एक पक्ष और इटली और जर्मनी ने दूसरा पक्ष लिया तो इस लड़ाई की भीषणता और भी अधिक बढ़ जायगी। फ्रांस के प्रधान मन्त्री ने इस बात की कोशिश की है कि स्पेन के घरेलू झगड़े में योरुप के दूसरे राष्ट्र हस्तक्षेप न करें। कई राज्य इस समझौते में शामिल हो गये हैं। जर्मनी और इटली पहले अलग रहे। जर्मनी की शिकायत यह थी कि उनके जहाज़ को विवश होकर स्पेन उतरना पड़ा और वहाँ की सरकार ने उसे रोक लिया। स्पेन की सरकार का कहना था कि यह जहाज़ विद्रोहियों की सहायता कर रहा था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जर्मनी के हवाई जहाज़ विद्रोहियों की सहायता कर रहे हैं। इटली वाले भी विद्रोहियों को जीत चाहते हैं। और उनको हवाई जहाज़, गोला, बारूद और फ़ौज से छिपे छिपे सहायता देते हैं।

स्पेन की ग़रीबी

योरुप भर में स्पेन में बेहद ग़रीबी है। साधारण मज़दूर

सबेरे से शाम तक काम करता है और पांच-छः आने पाता है। गांव (जैसे सेलेमांका के पास हुर्जीस गाँव) आलू और दूसरी जड़ों पर गुज़ारा करते हैं। उनके गाँव के बाहर क्या होता है इसका उन्हें पता नहीं है। बहुत से लोग मिट्टी के घरों और पहाड़ी खोहों में रहते हैं। उन्होंने ताज़ी रोटी कभी नहीं चक्खी है। स्पेन का किसान ग़रीबी से लड़ता लड़ता इस संसार से चल देता है। वह ७ या ८ कमज़ोर लड़के छोड़ जाता है। ये लोग गुलामों की तरह मालदार ज़मींदार की मज़दूरी करते करते ठंडे हो जाते हैं। मालदार ज़मींदार इन ग़रीबों के पसीने की कमाई पेरिस या मेड्रिड शहरों में भोग-विलास में बरबाद करते हैं। इस घरेलू लड़ाई में यही ज़मींदार विद्रोहियों की सहायता दे रहे हैं। वे ग़रीब किसानों का पक्ष लेने वाली स्पेन की वर्तमान सरकार को बाहरी पैसे, फौज और बारूद से मिटाने पर उतारू हैं।

स्पेन की पंचायतें

स्पेन के सामाजिक और राजनैतिक जीवन की जड़ म्यूनिसिपेलिटी और पंचायत है। राज्य में उलट फेर होते रहे। लेकिन पंचायत चलती रहीं। हाल में सेंडीकेट या पंचायती सभाओं से इनमें नई जान आ गई। इनमें हर कोई मज़दूर शामिल हो सकता है और भाषण दे सकता है। अंडालूसिया की पंचायतें बाहरी हस्तक्षेप को बिल्कुल नहीं पसन्द करती हैं। अपने गांव से उन्हें बड़ा प्रेम है। हिजो डेल प्यूब्लो (गांव का लड़ाका) का भाव बहुत बढ़ गया है। एक प्रान्त के लोग उसी

प्रान्त से देश भक्ति रखते हैं। दूसरे प्रान्तों से बहुत कम मिलते जुलते और सम्बन्ध रखते हैं। आरम्भ में जब एक प्रान्त में विद्रोही दब गये तो सिपाही दूसरे प्रान्त में जाने से हिचकिचाते थे। उनका कहना था कि दूसरे प्रान्त की रक्षा वह प्रान्त स्वयं करे।

रोमन केथलिक और स्पेन

इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्पेन में अधिकांश रोमन केथलिक ईसाई रहते हैं। वर्तमान साम्यवादी सरकार गिरजाघरों और पादरियों से रुष्ट है। पर कुछ नाम मात्र के ईसाई हैं। जो कट्टर हैं उन्होंने भी अपने बहुमत से वर्तमान सरकार की रचना की है। भविष्य में इसको बदलने के लिये (आवश्यकता पड़ने पर) उनका बहुमत काफी था। पर विद्रोही लोग हथियारों के ज़ोर से इसे बदलने के लिये उतारू हुये। उन्होंने विदेशियों से मदद ली और २०,००० मूरिश सिपाहियों को बुलाकर ऐसे अत्याचार करवाये कि कट्टर केथलिक ईसाई भी वर्त्तमान सरकार के पक्षपाती हो गये।

१६ जु०—क्रान्तिकारी आन्दोलन आरम्भ करने के सन्देह पर फेसिस्ट दल के १८५ नेता मेड्रिड शहर और दूसरे प्रान्तों में १५ जुलाई की रात को गिरफ्तार कर लिये गये।

१८ जु०—मेड्रिड से ६० मील दक्षिण-पूर्व में दुर्घटनायें हुईं। आहत लोगों की संख्या ठीक ठीक मालूम नहीं हुईं। स्थिति नाजुक होने के कारण मेड्रिड और योरुप के दूसरे शहरों के बीच में टेलीफोन सम्बन्ध तोड़ दिया गया। स्पेन की विदेशी सेना के २०,००० सिपाहियों ने स्पेनिश मरक्को में विद्रोह का झंडा उठाया। जब मेलिल्ला शहर के रहने वालों ने

विद्रोहियों का सामना करने के लिये हड़ताल मनाई तो झगड़े में ९ मनुष्य मारे गये। टेटुआन शहर में ३ मारे गये। विद्रोहियों ने सरकारी दफ्तर पर अधिकार कर लिया। दो सरकारी नौ सेना के नेता कार्टेजीना से मरक्को गये। विद्रोहियों ने स्यूटा के रेडियो-भवन पर अधिकार कर लिया। स्पेन के कई शहरों में भी फौज ने विद्रोह खड़ा किया। कई जनरल पकड़ लिये गये।

१९ जु०—बेलियारिक और केनरी द्वीपों में भी विद्रोह फैल गया। जो तीन जंगी जहाज़ विद्रोह को दबाने के लिये भेजे गये वे विद्रोहियों से मिल गये। पर हवाई जहाज़ राष्ट्र भक्त बने रहे। उन्होंने स्यूटा, मेलिल्ला, लास्त्रे और टेटुआन में विद्रोहियों पर बम्ब वर्षा की। विद्रोही नेता जनरल फ्रांको ने मेड्रिड पर चढ़ाई करने की घोषणा की।

२० जु०—सेविला पर फिर सरकारी अधिकार हो गया। वेलेंशिया और सारगोसा में लड़ाई छिड़ गई। विद्रोही सेना को मरक्को से स्पेन में आने से रोकने के लिये सरकारी जहाज़ पहरा देने लगे। सरकारी हवाई जहाजों ने बार्सिलोना की विद्रोही सेना पर बम्ब वर्षा की। विद्रोही नेता जनरल मोला ने लोग्रोनो से मेड्रिड पर चढ़ाई की। मरक्को के सुल्तान ने हवाई बम्बों के गिराने का विरोध किया। अतः मरक्को में शान्ति हो गई।

२१ जु०—उत्तर में विद्रोहियों ने सैन सेबेस्चियन नगर पर अधिकार कर लिया। पर मेड्रिड में विद्रोह होने से १७

विद्रोही नेताओं ने आत्महत्या कर ली। सैन सेवेश्चियन पर सरकारी अधिकार हो गया। दक्षिण में तीन सरकारी जहाजों ने केडिज नगर पर गोलाबारी की लेकिन विद्रोहियों ने उन पर बम्ब वर्षा करके उन्हें डुबा दिया। बार्सिलोना में घोर लड़ाई हुई। जब विद्रोह दबा दिया गया तब साम्यवादियों ने ईसाई गिरजों को जला डाला और पादरियों को मार डाला। शहर प्रायः लूटा गया।

२३ जु०—१६ विद्रोही सैनिक और २०० फेसिस्टो को सरकारी मशीनगनों ने गोली से उड़ा दिया। मेड्रिड से ५०० मिलीशिया (प्रजातन्त्रवादी सरकार की फौज) विद्रोह को दबाने के लिये मेड्रिड से ३२ मील दूर गाडलहारा की ओर गई। जिब्राल्टर के ब्रिटिश गवर्नर ने चेतावनी दी कि यदि पहाड़ी के ऊपर से फिर जहाज उड़ेंगे तो उन पर गोले छोड़े जायँगे। टैंजीर से जंगी जहाज हटा लेने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी ने स्पेन की सरकार से प्रार्थना की। ब्रिटिश जहाज तयार खड़े रहे।

२४जु०—विद्रोही नेता जनरल मोला की फौज मेड्रिड से केवल १५ मील दूर रह गई है। भूतपूर्व तानाशाह जनरल प्राइमो डी रीवेरा का लड़का सेनोर जोज अन्टेनियो डी रीवेरा १२ हजार फेसिस्ट फौज लेकर राजधानी की ओर बढ़ रहा है। नवारे और गुइपुज कोआ की सीमा के पास एंकर लाजा में घोर लड़ाई हुई।

२५ जु०—विद्रोहियों ने जनरल केबानेलोस की अध्यक्षता में बुर्गोस शहर में अस्थायी सरकार कायम कर दी। विद्रोहियों

ने विशेष प्रतिनिधि बर्लिन और रोम को सहायता मांगने के लिये भेजे हैं। माल्गा में (जहां साम्यवादियों की प्रधानता थी, विद्रोहियों ने ऐसा विध्वंस किया कि बहुत सी जनता ने भाग कर पहाड़ों में शरण ली।

२६ जु०—विद्रोही जनरल मोला की सेना के २००० सिपाही (मेड्रिड के उत्तर में) गाडरामा पर्वत की घमासान लड़ाई में मारे गये। बार्सिलोना के सरकारी समुद्री हवाई जहाजों ने पाल्मा में गोले बरसाये। बार्सिलोना में ३०० विद्रोहियों के मारे जाने से शान्ति हो गई। इटली के एक जहाज ने १५०० शरणागतों को जहाज में भरकर बार्सिलोना से जेनोआ में उतार दिया। इन में १ हजार इटेलियन थे।

२७ जु०—लालिनिया (सैन रोक के पास) की लड़ाई में बिद्रोही सेना ने अल्जीसीरास से एक दम बढ़ कर सरकारी फौज को नष्ट कर दिया। विद्रोही नेता जनरल फ्रांको बड़े बड़े समुद्री हवाई जहाजों से स्यूटा से अल्जीसीरास को फौज भेजने लगा। ग्वाडीरो में ८०० विद्रोहियों ने मजदूरों और सरकारी फौज की टोली को मार डाला। मरक्को से आने वाली फौज को आगे बढ़ने से रोकने के लिये सरकारी फौज ने एस्टेपोना जिले के देवदारू के बन में आग लगादी। टैंजीर से सरकारी स्वा-[illegible]क फौज जनरल फ्रांको को रोकने के लिये पीछे से आई टोलेडो में फिर से सरकारी अधिकार हो गया। एक जर्मनी गश्ती जहाज और तीन पनडुब्बी नावों ने स्पेन के लिये प्रस्थान किया।

२८ जु०—सेविला सारगोसा, वेलिडालिड, बुर्गोस और

केडिज में विद्रोहियों का अधिकार हो गया। बार्सिलोना के विद्रोही विफल रहे। गिरजे जला दिये गये।

३० जु०—विद्रोही सेना ने (विदेशी) हवाई जहाजों की सहायता से स्पेन पर चढ़ाई कर लिया। जनरल फ्रांको ने सेविला में अपना केन्द्र बनाया।

३१ जु०—सालमा (मेजारिक द्वीप) जैसे ही विदेशियों ने खाली किया वैसे ही वहां गोले बरसने लगे। जिब्राल्टर के पास एक सरकारी समुद्री हवाई जहाज को विद्रोहियों ने गोले मार कर गिरा दिया।

१ अगस्त—सारगोसा के पास सरकारी हवाई जहाजों ने विद्रोहियों पर गोले बरसाये।

२ अगस्त—फेसिस्ट और उनके मित्रों का विरोध करने वाले साम्यवादी लोगों ने केटेलोनिया के गिरजों को जलाया। सारगोसा में भारी लड़ाई की तयारी हुई। सैन सेबेश्चियन में हजारों विद्रोही जमा हो गये।

३ अगस्त—बेलेडोलिड मेडीना लाइन पर विद्रोहियों के लिये बारूद ले जाने वाली दो रेल गाड़ियों को सरकारी फौज ने उड़ा दिया। ग्रेनाडा के लिये सरकारी फौजें पहुँची। बेलियारिक द्वीप के प्रधान नगरों पर सरकारी हवाई जहाजों ने गोले बरसाये। जिब्राल्टर प्रणाली में विद्रोही तोपों ने तीन सरकारी जहाजों पर गोले छोड़े। पर वे बच गये। फ्रांस की सरकार ने स्पेन की गृह-कलह में हस्तक्षेप न करने के लिये दूसरे राष्ट्रों से अपील की। जर्मनी का जङ्गी जहाज स्यूटा में आ डटा। विद्रोही नेता जनरल फ्रांको ने उसका स्वागत किया।

स्पेन-दर्शन

५ अगस्त—आज तक की लड़ाई का यह फल हुआ कि विद्रोही लोगों ने स्पेन के सारे उपनिवेशों पर अधिकार कर लिया। केवल बेलियारिक द्वीपों के कुछ स्थानों पर सरकारी प्रभुत्व रहा। स्पेन में विद्रोही लोग सारगोसा और भीतरी प्रान्तों के बुर्गोस वेलोडोलिड और सेगोविया में प्रबल हो गये। जिब्राल्टर प्रणाली के पास और अलजीसीरास तट भी उनके हाथ में आ गया। कोरुन्न के पास का उत्तरी-पश्चिमी तट और पुर्चगाल की सीमा के पास का कुछ भाग उन्होंने मिला लिया। स्पेन की सरकार के हाथ में भूमध्य सागर का सारा तट, बार्सिलोना, माल्गा, मेड्रिड और समीपवर्त्ती प्रान्त हैं। अटलांटिक तट का बहुत बड़ा भाग भी सरकारी अधिकार में है। इस प्रकार सारा कारबारी प्रदेश सरकार के अधिकार में हैं। कृषि-प्रदेश विद्रोहियों के हाथ में है। सरकार विद्रोहियों को चारों ओर से घेरने का प्रयत्न कर रही है। अलग अलग भागों के विद्रोही एक दूसरे से सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं।

६ अगस्त—स्पेन का भूतपूर्व युवराज (भूतपूर्व अल्फांसो राजा का सब से छोटा लड़का) डान जुआन बुर्गोस शहर में विद्रोहियों से आ मिला। सरकारी जंगी जहाज ने विद्रोही सिपाहियों को लाने वाले जहाजों पर जिब्राल्टर प्रणाली में रोकने का प्रयत्न किया पर विद्रोही हवाई जहाजों ने उस पर गोले बरसाकर उसे हरा दिया। कार्टेजीना बन्दरगाह के सरकारी जहाजी अड्डे में भी काफ़ी नुकसान हुआ। जनरल फ्रांको १० हजार सैनिकों के साथ मरक्को से स्पेन में आगया। भीतर बढ़ने के लिये उसने मरक्को से पन्द्रह बीस हज़ार सिपाहियों

के आजाने की राह देखी। उसने विद्रोहियों के सफल होने पर स्पेन के शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने का निश्चय कर लिया।

७ अगस्त—जिब्राल्टर के पास (विद्रोहियों का केन्द्र) अल्जीसीरास पर सरकारी जहाजों ने दो बार बम वर्षा की। बार्सिलोना में ४ जर्मनों के मारे जाने से जर्मनी में स्पेन की सरकार के प्रति क्रोध बढ़ गया। फ्रांस ने तटस्थ रहने की घोषणा की। ब्रिटेन, इटली और रूस ने जर्मनी के ऊपर तटस्थ रहने की बात छोड़ी।

९ अगस्त—ब्रिटेन ने अपनी प्रजा को स्पेन छोड़ने की सम्मति दी। ग्वाडरोमा के पड़ोस में सरकारी जीत हुई। पर मेरिडा रेलवे जंकशन विद्रोहियों के हाथ में आ गया। इससे उत्तर और दक्षिण के विद्रोही एक दूसरे से मिल गये। स्पेन का भूतपूर्व राजा अल्फान्सो चेकोस्लोवेकिया के कोनेनिग्सवार्ट नगर में रहता था वहाँ उससे स्पेन के कुछ अमीरों ने भेंट की थी।

१० अगस्त—पुर्चगाल अभी तक विद्रोहियों का साथ देता रहा। आगे उसने कुछ शर्तों पर तटस्थ रहने का वादा किया है। वे शर्तें ये हैं—रूस हस्तक्षेप न करे। स्पेन की साम्यवादी सरकार के विजयी होने पर पुर्चगाल की शासन-व्यवस्था में छेड़ छाड़ न की जावे। पुर्चगाल पर आक्रमण होने की दशा में ब्रिटेन और फ्रांस उसकी सहायता करें। टैंजीर का अन्तर्राष्ट्रीय विधान अविच्छिन्न रहे।

स्पेन-दर्शन

११ अगस्त—जनरल मोला १२ हज़ार विद्रोहियों के साथ उत्तर से मेड्रिड की ओर बढ़ा। इरून के पास स्पेन की सरकार ने उसे रोकने का प्रयत्न किया। इटली से कई (२१) लड़ाका हवाई जहाज़ गुप्त रीति से विद्रोहियों की सहायता के लिये भेजे गये। ग्रेनाडा में बम्ब वर्षा हुई।

१२ अगस्त—बेडेहोज़ नगर को विद्रोहियों ने घेर लिया गेलिशिया, लिओन केस्टील, जेवीन, आर्गन नवारे, अस्टूटियास पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। एस्टेमेडूरा में बेडेहोज़ और अंडारशिया में मालगा के अधिकार के लिये लड़ाई हुई। गिजोन में सरकारी फौज को अन्न और जल का बड़ा कष्ट रहा। २५ जर्मन हवाई जहाज़ विद्रोहियों के लिये (गुप्तरीति से) सेविला पहुँचे।

१३ अगस्त—सारगोसा और ओवेदो में सरकारी फौजें विद्रोहियों को दबाने लगीं। पर १२ हवाई जहाज़ दिनरात मरक्को से स्पेन में फौज ला लाकर उतारते रहे। ब्रिटिश लड़ाका जहाज़ों ने ३००० से ऊपर विदेशी शरणागतों को स्पेन से बाहर पहुँचाया।

१४ अगस्त—विद्रोहियों ने बेड़ेहोज़ पर अधिकार कर लिया और कैदियों को गोलों से उड़ा दिया। कार्डोवा से विद्रोही भगा दिये गये। एस्टेपोना के पास गहरी लड़ाई हुई।

१५—अगस्त—बुर्गोसा और सेविला के बीच में विद्रोहियों ने रेलवे सम्बन्ध स्थापित कर लिया। विद्रोही बेड़ेहोज़ नगर में घुस गये। जिब्राल्टर के पास भी उनकी जीत हुई। विद्रोहियों ने जीते हुये नगरों में बेरहमी से लोगों को गोली से उड़ा

दिया। स्पेन के युद्ध मन्त्री ने घोषणा की कि विद्रोही क़ैदी उस स्थान पर रक्खे जांयगे जहां उनके हवाई जहाज़ अक्सर बम्म बरसाते हैं।

१६ अगस्त—लालिनिया के पास सरकारी फौज हार गई। विद्रोह ने सैन सेबेश्चियन पर चढ़ाई की। बेडेहोज़ में विजेता विद्रोहियों ने एक तरफ से सरकार से सहानुभूति रखने वाले गोली से उड़ा दिया। यूरूग्वे और दक्षिणी अमरीका की सरकारें मिल करके इस गृहकलह को शान्त करा दें। मेजारिका द्वीप के चारों ओर खाड़ियों और दूसरे स्थानों में माइन (बम्म का जाल) बिछा दिया जिससे सरकारी जहाज़ वहां घुस न सकें।

१७ अगस्त—मेड्रिड में भोजन की कमी से हाहाकार मच गया। विद्रोहियों ने हथियार बनाने वाले प्रायः सभी कारखानों पर अधिकार कर लिया। मेजारिका द्वीप में सरकारी जहाज़ों को पीछे हटना पड़ा।

१८ अगस्त—कार्टेजोना की फौजों का कप्तान विद्रोहियों से मिल गया। सरकारी फौजों ने इरून और इण्डरलाज़ा के बीच की सड़क को उड़ा दिया। इससे विद्रोही आगे न बढ़ सके। बिदासोआ नदी के दक्षिणी भाग में (फ्रांसीसी सीमा के पास आरमर्ड (हथियार बन्द) मोटर कारों की सहायता से सरकारी फौजों ने विद्रोहियों को आगे बढ़ने से रोक दिया।

१९ अगस्त—बेडेहोज़ के समीप सरकारी हवाई जहाज़ों ने गोले बरसा कर विद्रोहियों की एक फौज को बिल्कुल नष्ट कर दिया।

स्पेन-दर्शन

२० अगस्त—इरून के पास विद्रोही पीछे हटा दिये गये। एस्ट्रेमेडूरा में सरकारी जीत से बेडेहोज़ के लिये रास्ता खुल गया। नवल पेराल में भी सरकारी जीत हुई। जर्मनी के जहाज़ की तलाशी ली जाने से जर्मनी ने मेड्रिड की सरकार को धमकी दी।

२१ अगस्त—विद्रोही लोग उत्तरी भाग में फौज इकट्ठी करने लगे। मेजारिका में ३००० सरकारी सिपाही मारे गये। इटली ने स्पेन में तटस्थ रहने की बात ऊपर से मान ली।

२३ अगस्त—स्पेन की सरकार ने ब्रिटिश सरकार को विश्वास दिलाया कि उनके जहाज़ों की तलाशी ली जायगी। जो अंग्रेजी जहाज़ रोका गया था उसके लिये स्पेन के जंगी जहाज़ के कप्तान ने क्षमा याचना की।

विद्रोही हवाई जहाज़ ने मेड्रिड के समीप गोले बरसाये। जर्मनी और रूस ने स्पेन के सम्बंध में तटस्थ रहने की फ्रांसीसी योजना स्वीकार कर लिया।

१६ अगस्त—सबेरा होते ही कुहरे के धुआंधार में विद्रोहियों ने इरून पर बम्म गिराये। रिओ टिन्टो की खदानों और मरदा नगर पर विद्रोहियों ने अधिकार कर लिया। इरून और सैन सेबेश्यिन में सब से बड़ी लड़ाई का आरम्भ हो गया।

२७ अगस्त—सरकारी मशीनगनों ने विद्रोहियों को पीछे हटा दिया। मरक्को के सिपाही बार बार पहाड़ी के ऊपर पहुँचने की कोशिश करते रहे। मशीनगनें उनको गोलों से गिराती रहीं।

देश दर्शन

२९ अगस्त–इरून की स्थिति में घमासान लड़ाई में कोई अन्तर न पड़ा।

३० अगस्त–इरून में विद्रोहियों को भारी हानि उठानी पड़ी। उनके १६०० सिपाही मारे गये।

३१ अगस्त—विद्रोही लोग मेड्रिड की ओर बढ़े।

१ सितम्बर—विद्रोहियों ने इरून पर जल, स्थल और आकाश से गोलाबारी करने का निश्चय किया। जीते हुये नगरों में बड़ी बेरहमी से उन्होंने जन साधारण की हत्या की। जर्मन राजदूत मेड्रिड से हट कर एलीकेंटी चला आया।

२ सितम्बर–विद्रोहियों ने मेड्रिड पर दो बार हवाई जहाजों से गोले गिराये। इरून की दशा शोचनीय हो गई। मरक्को के सिपाहियों ने बेहोबिया नगर को लूट लिया। लापुंचा की पहाड़ी को सरकारी सिपाहियों ने बड़ी वीरता से बचाया। पर शाम को विद्रोही सैनिक वहां आ डटे।

३ सितम्बर–स्पेन ने शिकायत की कि इटली ने विद्रोही के लिये हवाई, जहाज़ों का भेजना बन्द नहीं किया। गत २४ घंटे में इटली से २४ हवाई जहाज भेजे गये। विद्रोहियों ने लापुंचा की पहाड़ी से बेहोबिया पर दुबारा चढ़ाई की।

४ सि०—कई दिन की घमासान लड़ाई के बाद इरून में विद्रोहियों की जीत हुई। नगर जल कर भस्म हो गया। बहोबिया में भी विद्रोही विजयी रहे। शरणागतों की दशा बड़ी शोचनीय हो गई। इरून को जीतने से विद्रोही सैन सेवश्चियन की ओर असानी से बढ़ सकेंगे और बार्सिलोना से रसद का आना रोक सकेंगे। स्पेन की सरकार ने इस्तीफा दे दिया।

साम्यवादी नेता डान लार्गो काबलेरो ने दूसरा मन्त्रि मन्डल बनाया। डान अल्वेरेज डि वायो विदेश-सचिव बनाया गया। नई सरकार विद्रोहियों का और भी अधिक घोर विरोध करेगी। डान लार्गो मजदूर दल का नेता है। वह राजतन्त्र का कट्टर विरोधी है। १९१७ ई० में राजतन्त्र की ओर से उसे आजन्म कारावास मिला था।

६ सि०—तलवेरा और टेलारसीना के प्रदेश में सरकारी फौज ने विद्रोहियों को दक्षिण की ओर से आगे बढ़ने से रोक दिया। उत्तर की ओर इरून के पास वाला पुल तोड़ दिया गया।

७ सि०—क़िलों की पंक्ति से विद्रोहियों का आगे बढ़ना रुक गया। वे १२ मील लम्बे मोर्चे (फ्रांट) से पीछे हटा दिये गये। तलवार फ्रांट (मोर्चा) का निरीक्षण करते समय राष्ट्र-पति अजाना का बड़े समारोह के साथ स्वागत किया गया।

८ सि०—ह्वस्का प्रान्त में सरकार की जीत हुई। इसी बीच में विद्रोहियों के बढ़ने के डर से स्त्री और बच्चे सैन सेबेश्चियन को खाली करने लगे।

९ सि०—विद्रोही सैनबेश्चियन की ओर बढ़े।

१० सि०—सैन सेबेश्चियन की ओर लड़ाई कुछ ठंडी पड़ी। केटेलोनिया से ५००० सिपाही मेड्रिड की सहायता के लिये पहुँचे। गिरिजाघरों के घंटों को तोड़ कर फौजी मोटर कार बनाये जाने लगे।

११ सि०—अलकजार (टोलेडो के पास) में सरकारी जीत हुई। पर मेजारिका द्वीप को लेने के लिये जो ६०००

सिपाही भेजे गये थे उनमें २००० मार डाले गये शेष बड़ी कठिनाई से जहाज पर आकर बच सके।

१३ सि०—सैन सेबेश्चियन पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। मेड्रिड की बारकों पर बम्ब वर्षा होने से २५० मिलीशिया (सरकारी सिपाही) मारे गये। विद्रोहियों ने तीन ओर (ग्वाडरामा पर्वत और माग्वेडा) से मेड्रिड पर चढ़ाई करने की तयारी की।

१४ सि०—स्पेन से भागे हुए शरणागतों के लिये जिब्राल्टर में जो कैंप खुला था वह बन्द कर दिया गया।

१६ सि०—विद्रोही लोग बिलबाओ की ओर बढ़े। वहां ४०००० सरकारी सिपाहियों ने रक्षा का पूरा प्रबन्ध कर लिया।

१७ सि०—माल्गा प्रदेश में विद्रोहियों ने रोंडा तक पहाड़ी नगर जीत लिया। ओवेदो नगर को छुड़ाने के लिये विद्रोहियों की फौज पर संगीनों से लड़ती हुई १५ दिन में १५ मील आगे बढ़ी।

एक फ्रांसीसी के मारे जाने पर फांसीसी राजदूत ने विद्रोहियों से तीन लाख फ्रैंक का हरजाना देने और माफी मांगने के लिये बाध्य किया।

सैंटेण्डर में अराजक वादियों का शासन हो गया। अलकजार (टोलेडो) को लेने के लिये सरकारी फौज ने किलेबन्द स्थानों को हजारों गैलन पेटोल से तर कर दिया। फिर बम्ब से उसमें आग लगा दी।

स्पेन-दर्शन

२० सि०—सरकारी सेनापति के आदेशानुसार अलकजार के कई भाग पेट्रोल से तर कर दिये गये फिर उनमें बम्ब से आग लगा दी गई। अलकज़ार से जो धुआं उठा उससे टोलेडो नगर छिप गया। विद्रोहियों ने नवाक़िया ले लिया और वे लोंजावा की घाटी में घुस आये। रात हो जाने पर भी टोलेडो में लड़ाई होती रही। विद्रोही सेनापति क्विपो डीलानो ने विदेशों में ठहरे हुए स्पेनियार्ड लोगों से अपील की कि वे देश में लौट कर अपनी पूँजी को देश में खर्च करें। साथ ही उसने यह भी धमकी दी कि यदि वे न लौटे तो उनकी जायदाद जब्त कर ली जायगी। नौजवानों को उसने चेतावनी दी कि यदि विद्रोही (राष्ट्रीय) फौज में भरती होकर न लड़े तो वे डरपोक और देशद्रोही समझे जायंगे। ४८ सुसज्जित मोटर कारों और ६० पुलिस की हथियारबन्द नावों ने अर्जेण्टायना के तट के पास आये हुये स्पेन के शरणागतों को उतरने से रोका। अर्जेण्टायना ने उन्हीं स्पेन वासियों को उतारने का निश्चय किया जिन्होंने स्पेनमें कोई जुर्म नहीं किया और साम्यवादी नहीं हैं।

२१ सि०—जनरल मोला ने सेंटेण्डर और बिल्बाओ शहर के निवासियों को २५ ता० तक आत्म समर्पण करने के लिये चेतावनी दी। अन्तर्राष्ट्रीय समिति ने गैस-मास्क (गैस से बचने के लिये कन्टोप) भेजने के लिये आज्ञा दे दी।

२२ सि०—तीन दिन की घमासान लड़ाई के बाद मक्विडा नगर (जो मेड्रिड से ६० मील की दूरी पर वहां के लिये कुञ्जी है) पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया। इस नगर का काम राष्ट्रपति अजाना ने किया था।

२३ सि०—भूतपूर्व मन्त्री—अलांसे विद्रोह खड़ा करने के अभियोग पर गोली से उड़ा दिया गया।

२५ सि०—विद्रोही लोग टोलेडो की ओर बढ़े। विद्रोहियों के गोले से बचने के लिये स्पेन के सरकारी लड़ाका जहाज ने जिब्राल्टर में शरण लेनी चाही इस पर चेतावनी के रूप में ब्रिटिश जहाज़ ने गोले छोड़े और सरकारी जहाज़ वहाँ से मालगा की ओर चल दिया।

२६ सि०—बिल्बाओ पर बम वर्षा हुई। विद्रोही लोग टोलेडो के निकट पहुँच गये।

२७ सि०—विद्रोहियों ने टोलेडो पर अधिकार जमा लिया।

२८ सि०—स्पेन की गृह-कलह में अब तक हिन्दुस्तानी जान-माल की हानि नहीं पहुँची।

२९ सि०—अलकजार लड़ाई में ८० को छोड़ कर शेष १२०० लोग जिन्दा पकड़ लिये गये। ५०० घायल हो गये। विद्रोही मेड्रिड की ओर से बढ़े। एक सरकारी जहाज़ डुबा दिया गया। जनरल ओडफी विद्रोहियों की सहायता के लिये आयरलैंण्ड से २००० सिपाही स्पेन में ले आया।

३० सि०—जनरल फ्रांको स्पेन की विद्रोही सेना का सेनाध्यक्ष चुना गया।

३ अक्तूबर—विद्रोही नेता ने ब्रिटिश सरकार को विश्वास दिलाया कि मरक्को में विदेशियों को जहाजी अड्डे बनाने के लिये स्थान न दिया जायगा। विद्रोही नेता जनरल फ्रांको ने मेड्रिड पर चढ़ाई करने के लिये १२००० मूरिश सिपाही बुलाये और १५० बम बरसाने वाले जहाज़ मँगाये।

स्पेन-दर्शन

५ अ०—मेड्रिड शहर खाली होने लगा। बच्चे मेड्रिड शहर से वेलेंशिया और दूसरे स्थानों को भेजे गये।

६ अ०—जनरल फ्रांको और जनरल मोला की (विद्रोही) फौजें एक दूसरे के पास पास पहुँच गईं।

७ अ०—३० विद्रोही हवाई जहाजों ने मेड्रिड पर गोले बरसाये। सियरा मोरेना के सबसे ऊँचे पहाड़ी क़िले पर २५० विद्रोही घेर लिये गये।

८ अक्तू०—विद्रोहियों ने मेड्रिड शहर की गलियों में आत्म समर्पण करने के लिये लाखों परचे गिराये। नवलपेरल में विद्रोहियों की जीत हुई। इससे मेड्रिड का रास्ता साफ़ हो गया।

९ अ०—ओवेदो के प्रदेश में गहरी लड़ाई हुई।

१० अ०—स्पेन की सरकार ने मेड्रिड की रक्षा के लिये ४०००० सिपाही इकट्ठा किये गये।

१४ अ०—रूस से स्पेन की सरकार को जो धन और सामग्री भेजी गई उसके लिये उन्होंने कृतज्ञता प्रकट की।

१५ अ०—तीस मील की लम्बी सीमा पर मेड्रिड के लिये भीषण लड़ाई शुरू हो गई रूस ने प्रस्ताव किया कि स्पेन की गृह-कलह में हस्तक्षेप को रोकने के लिये पुर्चगाल के बन्दरगाहों पर पहरा दिया जावे।

१६ अ०—नेवला कारनेरो (जो मेड्रिड से २५ मील दूर है) में एक विद्रोही फौज पहुँच गई।

१७ अ०—सेनोर काबलेरो के प्रधान सेनापति नियुक्त होने से सरकारी फौज में आत्मविश्वास बढ़ गया। डेढ़ लाख

सरकारी फ़ौज के लिये भोजन और वस्त्र का प्रबन्ध करने में बड़ी कठिनाई पड़ी।

१८ अ०—ओवेदो की लड़ाई में ५००० सरकारी सिपाही खेत रहे। रेडक्रास ने स्पेन के आहातों की सहायता के लिये एक विश्व-फण्ड खोल दिया।

२१ अ०—विद्रोहियों ने चारों ओर से मेड्रिड का घेरा डाल दिया। सरकार ने उनका सामना करने के लिये १००० मशीन-गनें तैयार कर रक्खीं।

२२ अ०—स्पेन के स्त्री बच्चों की सहायता के लिये रूस का एक बड़ा जहाज़ भोजन-वस्त्र लेकर लेनिनग्रड से चल दिया।

२३ अ०—राष्ट्रपति सेनोर अज़ाना कार्यकारिणी समिति के साथ बार्सिलोना पहुँच गये मेड्रिड से बारह मील की दूरी पर भीषण लड़ाई हुई।

२४ अ०—पुर्चगाल ने स्पेन की सरकार से राजनैतिक सम्बन्ध तोड़ लिया।

२७ अ०—मेड्रिड शहर में विद्रोही कैदियों की संख्या बढ़ते बढ़ते १५००० हो गई।

२८ अ०—मेड्रिड का घेरा प्रबल हो गया। हवाई जहाज़ों और मूरिश सिपाहियों ने सरकारी फ़ौज के नाक में दम कर दिया।

२९ अ०—जनरल फ्रांको ने मेड्रिड को ४८ घण्टे में आत्म-समर्पण करने के लिये चेतावनी दी।

३० अ०—मेड्रिड शहर के भीतर आने वाले सभी मार्गों पर विद्रोही लोग बम वर्षा करने लगे।



पिरनीज़ पर्वत का एक दृश्य। इस ओर पादरी अधिक प्रबल हैं।



स्पेन की साम्यवादी महिलायें लड़ने को जा रही हैं।

देश दर्शन

१ नवम्बर—गेटाफे की सड़कों पर धूप में खेलते हुए छोटे छोटे बच्चे बम वर्षा से चिथड़े हो गये। मेड्रिड के दक्षिण में गाँव खाली कराये गये। उत्तर की ओर विद्रोही १२ मील बढ़ आये। इससे उनके गोले शहर के बाहरी भाग में पहुँचने लगे। बिस्के की सीमा पर गहरी लड़ाई हुई।

२ नव०—विद्रोहियों को नया नया बहुत सा फौजी सामान मिल गया। उत्तर की ओर विद्रोही गाडरामा पर्वत के लिओन दर्रे से विल्बाओ की ओर बढ़े। इसको जीत लेने पर एस्कोरियल में पड़ी हुई सरकारी फौज पर आसानी से हमला कर सकते थे सरकारी फौजों ने नवलकानेरो पर चढ़ाई की। दो किलोमीटर लम्बी विद्रोही सेना को ढोने वाली लारियों की कतार पर गोलाबारी की गई।

३ नव०—सरकारी फौजों ने गेटाफे और पार्ला को केन्द्र बना कर विद्रोहियों पर भीषण हमला किया। मेड्रिड से बार्सिलोना पहुँचने पर स्पेन की सरकार ने चार गरम दल के और नेता कार्यकारिणी समिति में शामिल कर लिये।

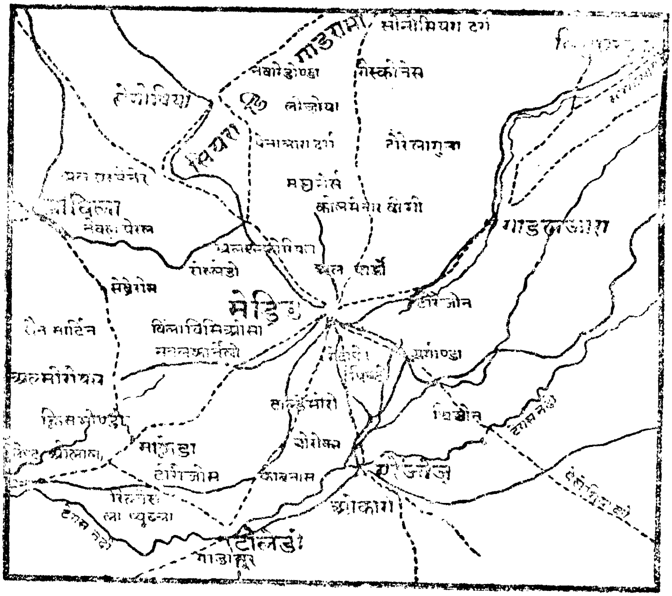
४ नव०—विद्रोही गेलिशिया में विजयी हुए। गेटाफे जला कर भस्म कर दिया गया।

५ नवम्बर—विद्रोही अना मेड्रिड के बिल्कुल समीप आ गई। विद्रोहियों को रोकने के लिये सरकार ने भीषण प्रयत्न किये।

६ नवम्बर—मेड्रिड शहर के बीच में विद्रोही सेना के गोले गिरने लगे।

७ नवम्बर—ला लिनिया में विद्रोहियों की दशा शोचनीय

हो गई। एस्टेपोना में भी २०००० सरकारी सिपाहियों ने १००० विद्रोहियों को घेर लिया।



मेड्रिड और समीपवर्ती प्रदेश

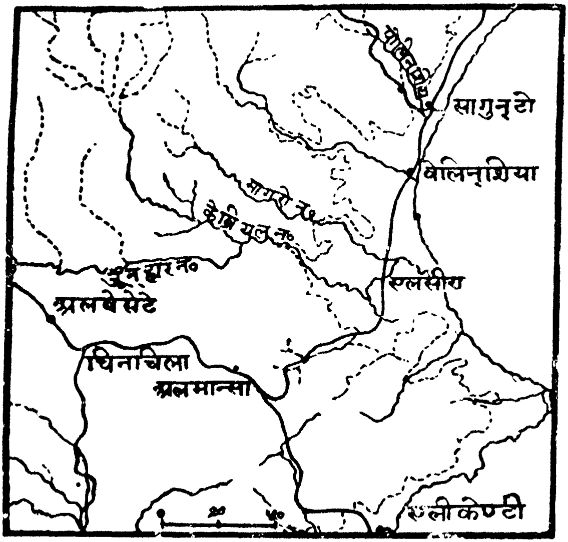
८ नवम्बर—मेड्रिड के समीप विद्रोहियों के अड्डों पर गोले बरसाये गये।

९ नवम्बर—घमासान लड़ाई के बाद भी विद्रोही मेन्ज़नेरीज़ नदी को पार न कर सके।

देश दर्शन

१० नवम्बर–मेड्रिड के केमाडेल केम्पो (पार्क) पर विद्रोहियों का अधिकार हो गया।

११ नवम्बर—लड़ाई कुछ शिथिल पड़ी। विद्रोही आगे बढ़ने से रोके गये। सभी पुलों पर सरकारी अधिकार बना रहा सरकारी विज्ञप्ति द्वारा मेड्रिडवासियों को आदेश मिला कि वे



हाल ही में स्पेन के साम्यवादी सरकार ने वेलेन्शिया में राजधानी बनाई है

विद्रोहियों के सड़कों पर आजाने पर उनके ऊपर बोतलों में पेट्रोल भरें और आग लगा कर उनके ऊपर छोड़ देवें। ब्रिटिश लड़ाका जहाजों ने अमरीका, पोलैंड, बेल्जियम, जापान आदि

१६ भिन्न-भिन्न सरकारों के ११००० शरणागतों को स्पेन से बाहर निकाला। इसमें उन्हें ढाई सौ बार आना पड़ा और ५ लाख रुपये तेल और कोयले में खर्च हुए।

१२ नवम्बर मेड्रिड की स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। सरकारी फौजों ने वीरता से विद्रोहियों का सामना किया।

१३ नवम्बर—केसा डी केम्पो की लड़ाई में स्पेन की एक सरकारी फौज ने २०० विद्रोहियों को कैद कर लिया और १००० बन्दूकें छीन लीं। रिओ टिन्टो (जहां की खानों के मालिक अंग्रेज थे) को जीतने के बाद विद्रोहियों ने १५०० मजदूरों (इनमें १०० स्त्रियाँ थीं) को गोली से उड़ा दिया।

१५ नवम्बर—विद्रोहियों ने मेड्रिड पर फिर हवाई जहाजों से गोले बरसाये।

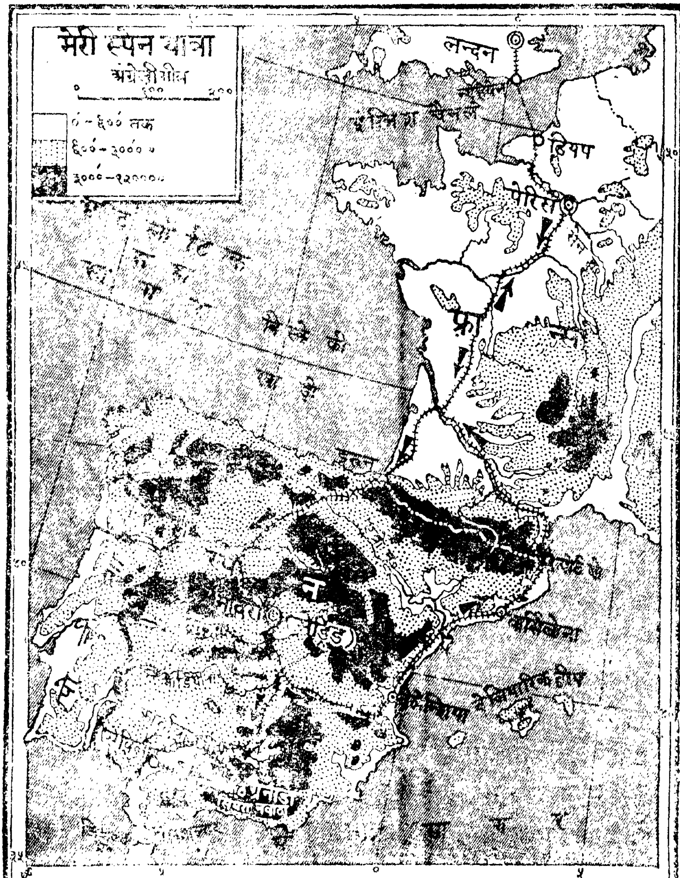
१६ नवम्बर—विद्रोहियों की फ़ौज ने मेंजनेरीस नदी को पार कर लिया।

१७ नवम्बर—मेड्रिड में विद्रोहियों का सामना करने के लिये स्पेन की सरकार ने १ लाख सिपाही तैनात किये हैं।

१८ नवम्बर—विद्रोहियों की बम-वर्षा से मेड्रिड के कई भागों में आग लग गई। बहुमूल्य कला-भंडार भस्म हो गया।

१९ नवम्बर—जनरल मोला की सभी फौजें मेड्रिड पर चढ़ आईं। कई गलियों में भीषण लड़ाई हुई।

२० नवम्बर—मेड्रिड में पानी बरसाने और बर्फीले आँधी के आने से लड़ाई में कुछ शिथिलता पड़ गई। भूतपूर्व सम्राट अल्फांसों के लड़के युवराज अल्फांसो मेड्रिड में और भूतपूर्व


मेरी स्पेन यात्रा
अंग्रेजी मील
० १०० २००
लन्दन
डिएप
पेरिस
बार्सिलोना

तानाशाह के लड़के अण्टानियो प्राइमो डो रिवेरा को एलीकेण्टी में फांसी दा गई।

२१ नवम्बर—जर्मनी और इटली ने स्पेन में विद्रोहियों की सरकार को स्वीकार कर लिया। सारे दिन बर्फीली वर्षा होती रही।

२२ नवम्बर—जनरल फांको ने धमकी दी कि स्पेन में हथियार लाने वाले सभी जहाजों पर हमला किया जायगा। इस समय स्पेन की सरकार और विद्रोहियों की जहाजी शक्ति बराबर है। विदेशी पनडुब्बी नावों ने स्पेन के सरकारी लड़ाका जहाजों पर हमला किया।

२३ नवम्बर—जो लोग लड़ने योग्य नहीं थे उन्होंने मेड्रिड शहर को खाली कर दिया। कुछ लोग मेड्रिड से ६० मील दूर तारन्कान में और कुछ और आगे केन्काका चले गये।

२४ नवम्बर—वेलेंशिया से स्पेन की सरकार ने कुछ समय के लिये विदेशों से आने वाले सामान पर चुङ्गी हटा ली है। अमरीका का राजदूत मेड्रिड सेवेलेंशिया चला आया।

जर्मनी और इटली के राजदूत बुर्गास पहुँच गये। फ्रांसीसी जहाज अपने झंडे की रक्षा के लिये स्पेन तट पर पहुँच गये। भूमध्य सागर में अँग्रेजी जङ्गी जहाजों की संख्या भी बढ़ गई है।

२५ नवम्बर—जनरल फांको ने घोषित किया कि कुछ समय तक मेड्रिड का आक्रमण बन्द रहेगा। पहले एस्कोरियल पर अधिकार जमाया जायगा और फिर राजधानी पर जोरदार घेरा डाला जायगा।

देश दर्शन

२६ नवम्बर–मेड्रिड की सरकारी फौज ने विद्रोहियों के ७ टैंक छीन लिये। जिब्राल्टर प्रणाली के पास गुजरने वाले रूसी स्टीमर पर विद्रोहियों ने आक्रमण किया। अमरीका ने स्पेन के लिये ४ एम्बुलेन्स कार भेजे। वैज्ञानिक और लेखक लोग मेड्रिड से वेलेंशिया भेज दिये गये।

७ नवम्बर–स्पेन की सरकारी फौजों ने आरमज्वेज की ओर विद्रोहियों पर आक्रमण किया। उन्होंने दो गांव जीत लिये। सरकारी फौजों ने टलवेरा और टोलेडो को ओर भी चढ़ाई की। इधर मेड्रिड के पड़ोस में विद्रोही घिरे हुए से हैं। उनको मेंजनरीस नदी का ही पानी पीना पड़ता है। बिस्के की खाड़ी की ओर फिर से लड़ाई जोर पकड़ गई। मेड्रिड को खाली करके २ लाख मनुष्य वेलेंशिया पहुँच गये। विद्रोहियों ने कार्टेजीना के सरकारी जहाजी अड्डे पर गोले बरसाये।

८ नवम्बर–मेड्रिड में स्पेन की सरकार की किलेबन्दी प्रबल हो गई। मेड्रिड में गत २२ दिन के घेरे में २५०० सिपाही मरे और ३००० घायल हुए।

२१ नवम्बर–प्रबल वर्षा से मेड्रिड की गलियों में कीचड़ भर गई। विद्रोही एक क़दम भी आगे न बढ़ सके। ओवेदो और प्राडो में सरकारी जीत हुई। सरकारी हवाई जहाजों ने टलवेरा पर बम गिराये। आधा नगर जल गया।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२।)
२—भूतत्व	१॥)
३—भूगोल एटलस	१॥)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति	१)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग	।॥।
६—हमारा देश	॥=)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण)	१।)
८—हमारी दुनिया	॥)
९—देश निर्माता	॥)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	।)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग	।)
१२—जातियों का कोष	॥)
१३—अनोखी दुनिया	।॥)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस	१)
१५—संसार-शासन	२।)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण)	१।)
१७—[illegible]-अंक	१)
१८—ईरान-अंक	१)
१९—चीन-अंक	१)
२०—चीन-एटलस	॥)
२१—टर्की	१)
२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
२३—भुवनकोष	१)
२४—एबीसीनिया	।॥)
२५—गंगा-अंक	१)
२६—गंगा-एटलस	॥)
२७—देशी राज्य-अंक	२॥)
२८—पशु-पक्षी-अंक	१)
२९—महासमर-अंक	१।)
३०—महासमर एटलस	॥)
३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां	॥)
३२—पशु-परिचय	॥)
३३—प्राचीन जीवन	॥)
३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन)	३)
३५—मेरी पोथी	॥=)
३६—आसाम-अंक	१)
३७—द्वितीय महासमर-परिचय	१॥)
३८—संयुक्त प्रांत-अंक	३॥)
३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी	२)
४०—भारतीय भाषाएँ	१)
४१—नागरिक दर्शन	॥=)
४२—हमारा संसार	१॥)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद